CMYK

खबरें छुपाता नहीं, छापता है

शाह टाइम्स

अधिकतम :31°C
न्यूनतम: 25°C

मुजफ्फरनगर, सोमवार 21 जुलाई 2025 उत्तर प्रदेश संस्करण: वर्ष 26 अंक 189 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

www.shahtimesnews.com

विस्तृत खबरों के लिए QR कोड स्कैन करें। मुफ्त पढ़ें E-paper

shahtimes2015@gmail.com श्रावण कृष्ण पक्ष 10 विक्रमी सम्वत् 2082 25 मुहर्रम 1447 हिजरी नई दिल्ली, मुजफ्फरनगर, देहरादून, हल्द्वानी, मुरादाबाद, बरेली, मेरठ व लखनऊ से प्रकाशित

रोजगार मेले में उमड़ी भीड़ पर राहुल गांधी का सरकार पर हमला पेज 2

शुभमन गिल के निशाने पर 19 साल पुराना रिकॉर्ड खेल टाइम्स

संसद में प्राइवेट मेंबर बिल: गंभीरता की गिरती रेखा व लोकतंत्र की अनदेखी सम्पादकीय

20 साल से सऊदी के 'सोते हुए राजकुमार' का निधन पेज 12

फ्लाइट की जल्दबाजी में पत्नी को भूले शिवराज सिंह

जूनागढ़, वार्ता

■ काफिले के साथ जूनागढ़ से राजकोट निकले, एक किमी के बाद वापस लौटे फिर साथ गए केंद्रीय मंत्री

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान जूनागढ़ में एक दिलचस्प जल्दबाजी कर बैठे। वे पत्नी साधना सिंह को छोड़कर 22 गाड़ियों के काफिले के साथ जूनागढ़ से राजकोट की ओर रवाना हो गए।

एक किलोमीटर दूर पहुंचे ही थे कि ख्याल आया पत्नी तो साथ में हैं ही नहीं। इसके बाद काफिला तुरंत यू-टर्न लेकर मूंगफली शोध केंद्र लौटा, जहां साधना सिंह वेटिंग रूम में बैठी थीं। दरअसल, शिवराज पत्नी के साथ गुजरात के धार्मिक व सरकारी दौरे पर थे। सोमनाथ ज्योतिर्लिंग और गिर के सिंहदर्शन के बाद मूंगफली शोध केंद्र में किसानों व 'लखपति दीदी' योजना से जुड़ी महिलाओं से संवाद कार्यक्रम था। उन्हें रात 8 बजे राजकोट से फ्लाइट पकड़नी थी और रास्ता खराब होने के कारण वे हड़बड़ी में थे। कार्यक्रम के मंच पर बार-बार घड़ी देखते रहे। खुद माइक से कहा कि राजकोट का रास्ता खराब है, अगली बार फुर्सत से आऊंगा। उन्होंने भाषण छोटा किया और तेजी से काफिले के साथ निकल गए। उधर, साधना गिरनार दर्शन के बाद लौट चुकी थीं और प्रतीक्षालय में बैठी थीं। शिवराज को ख्याल आया कि पत्नी, तो साथ में हैं नहीं। फिर फोन पर संपर्क साधा। इसके बाद काफिले संग लौटे और पत्नी को लेकर राजकोट निकले। केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने पत्नी साधना सिंह के साथ सासन-देवलिया सफारी पार्क घूमा था। उन्होंने कहा था कि सासन में हमने प्रकृति के राज को देखा। गिर की प्राकृतिक सुंदरता वाकई अद्भुत है। उन्होंने कहा था कि सफारी की पूरी अवधारणा और योजना अद्भुत है। यह सफारी अनुभव के अलग-अलग रंग प्रदान करती है।

थरूर के तीखे बोल: पहली वफादारी देश के लिए

■ कहा: दूसरे दलों के साथ मिलकर काम करना चाहिए, इसे गद्दारी समझ लिया जाता है

नई दिल्ली। कांग्रेस के तिरुवनंतपुरम से सांसद शशि थरूर ने कहा कि किसी भी नेता की पहली वफादारी देश के प्रति होनी चाहिए, पार्टी के प्रति नहीं।

थरूर कोच्चि में शांति, सद्भाव और राष्ट्रीय विकास पर आयोजित एक कार्यक्रम में बोल रहे थे। पार्टियां सिर्फ एक रास्ता हैं, देश को बेहतर बनाने का जरिया हैं। अगर देश ही नहीं बचेगा, तो पार्टियों का क्या फायदा? इसलिए जब देश की सुरक्षा का सवाल हो, तब सभी दलों को मिलकर काम करना चाहिए। जब हम कहते हैं कि देश के लिए दूसरे दलों से मिलकर काम करना चाहिए, तो कुछ लोग इसे पार्टी से गद्दारी समझ लेते हैं। राजनीति में मुश्किल वक्त में सभी को एकजुट होना चाहिए।

डॉन फिल्म के निर्देशक चंद्रा बारोट का निधन

मुंबई। बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन अभिनीत सुपरहिट फिल्म डॉन के निर्देशक चंद्रा बारोट का रविवार को निधन हो गया। वह 86 वर्ष के थे। चंद्रा बारोट कई सालों से अपने फेफड़ों का इलाज करा रहे थे। वह मुंबई के बांद्रा स्थित एक अस्पताल में भर्ती थे, जहां रविवार को उन्होंने आखिरी सांस ली। चंद्रा बारोट को वर्ष 1978 में प्रदर्शित अमिताभ बच्चन की सुपरहिट फिल्म 'डॉन' का निर्देशन करने के लिए जाना जाता है। चंद्रा बारोट का जन्म और पालन-पोषण तंजानिया में हुआ था। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत एक बैंक में नौकरी से की थी, लेकिन उनका दिल फिल्मों की ओर चला गया, जिसके बाद वे भारत आकर फिल्म इंडस्ट्री से जुड़ गए।

राजस्थान के नागौर में सड़क पर मछलियां तैरीं, काशी में बाढ़

नई दिल्ली। राजस्थान में हो रही भारी बारिश आफत बन गई है। नागौर में तालाब भर गए हैं और पानी बाहर आ गया है, सड़क पर सैकड़ों मछलियां तैर रही हैं। वहीं, पिछले 24 घंटों में बारिश के कारण अलग-अलग हादसों में 7 लोगों की मौत हो गई। यूपी में लगातार बारिश से गंगा, यमुना और मंदाकिनी जैसी नदियां उफान पर हैं। काशी में 84 घाट डूबने के बाद अब गंगा का पानी अस्सी घाट की सड़क तक पहुंच गया है। गंगा के साथ वरुणा नदी में बाढ़ आ गई है। उधर बिहार की कई नदियों का जलस्तर बढ़ने लगा है। पटना में गंगा नदी उफान पर है। पटना डीएम ने जिले के 78 स्कूलों को 21 जुलाई तक बंद रखने का आदेश दिया है।

विदेशी मीडिया के झूठे कवरेज पर बरसे उड्डयन मंत्री

नई दिल्ली। अहमदाबाद में बीते 12 जून को हुए एयर इंडिया विमान हादसे को लेकर एयरक्राफ्ट एक्सीडेंट इन्वेस्टिगेशन ब्यूरो (एएआईबी) की प्रारंभिक जांच रिपोर्ट पर चर्चा जारी है। इसी बीच केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू ने रविवार को एयर इंडिया 171 विमान हादसे को लेकर बड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा कि एएआईबी पूरी जिम्मेदारी से और अंतर्राष्ट्रीय नियमों के तहत जांच कर रही है। मंत्री नायडू ने एएआईबी रिपोर्ट को लेकर विदेशी मीडिया के दावों पर भी निशाना साधा। उन्होंने खासकर पश्चिमी मीडिया को आगाह किया कि वे अफवाहें फैलाने और बिना पुष्टि वाली खबरें छापने से बचें। नायडू ने कहा कि हमें एएआईबी पर पूरा भरोसा है। उन्होंने ब्लैक बॉक्स को भारत में ही डिकोड कर एक बेहतरीन काम किया है। जब तक अंतिम रिपोर्ट नहीं आ जाती, तब तक कोई भी निष्कर्ष निकालना सही नहीं है।

प्रधानमंत्री से अपना नैतिक कर्तव्य निभाने की उम्मीद जताई

विपक्ष एकसुर: पहलगाम और ट्रम्प की हकीकत बताएं मोदी

शाह टाइम्स ब्यूरो

■ सर्वदलीय बैठक के दौरान विपक्षी दलों के नेताओं ने एक स्वर में उठाई मांग, एकजुट हुआ विपक्ष

नई दिल्ली। सरकार की ओर से बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में विपक्षी दलों के नेताओं ने रविवार को एक स्वर में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को ऑपरेशन सिंदूर पर संसद से देश को संबोधित करना चाहिए और बिहार में मतदाता सूची तथा अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के आरोपों पर जवाब देना चाहिए।

सर्वदलीय बैठक में भाग लेने के बाद कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई ने कहा कि इस सत्र में हम पहलगाम पर बात करेंगे। सीमा पर संघर्ष, प्रत्येक नागरिक के मतदान के अधिकार और बिहार में मतदाता पुनरीक्षण से संबंधित मुद्दे पर प्रधानमंत्री को संसद से राष्ट्र को संबोधित करना चाहिए। उम्मीद है प्रधानमंत्री अपना नैतिक कर्तव्य निभाएंगे। समाजवादी पार्टी के रामगोपाल यादव ने कहा कि उन्होंने बैठक में पहलगाम आतंकी हमला और इसमें खुफिया विफलता, ऑपरेशन सिंदूर के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति के सैन्य कारवाई रोकने वाले बयान के साथ ही पांच जेट गिराए जाने संबंधी बयान, देश की विदेश नीति की विफलता का मुद्दा उठाया। उनका कहना था कि विदेश नीति की विफलता के कारण ऑपरेशन सिंदूर पर दुनिया के किसी देश ने हमारा साथ नहीं दिया। अन्नाद्रमुक के एम. थंबीदुरई ने कहा कि सर्वदलीय बैठक में लगभग सभी दलों के नेताओं ने -शेष पृष्ठ दो पर

संसद सुचारू रूप से चलाना सबकी जिम्मेदारी: रिजिजू

नई दिल्ली। सरकार ने कहा है कि संसद को सुचारू रूप से चलाना राजनीतिक दलों की जिम्मेदारी है और वैचारिक विविधता के बावजूद सभी दलों को इस पर ध्यान देने की जरूरत है।

संसद का मानसून सत्र शुरू होने से पहले सरकार की तरफ से बुलाई गई सर्वदलीय बैठक के बाद संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने रविवार को यहां संसद भवन परिसर में पत्रकारों से कहा कि सर्वदलीय बैठक में आज विभिन्न दलों के 54 सदस्यों ने भाग लिया। यह बैठक बहुत सकारात्मक रही और सदस्यों ने सकारात्मक रूप से ही अपने विचार प्रस्तुत किए। सभी दलों के नेताओं ने सुझाव दिए और सरकार ने उन सभी की सुझाव को नोट कर लिया है।

कांवड़ यात्रा में उपद्रव करने वालों के लगेंगे पोस्टर: योगी

उप्र के मुख्यमंत्री ने की कांवड़ियों पर पुष्पवर्षा

शाह टाइम्स ब्यूरो

■ मुख्यमंत्री ने लोगों को भी कराया उनकी जिम्मेदारी का अहसास

लखनऊ। कांवड़ यात्रा में तोड़फोड़ और उपद्रव करने वालों के योगी सरकार ने पोस्टर चस्पा करने की चेतावनी दी है और यात्रा सम्पन्न होने के बाद उपद्रवियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करेगी। ये बातें खुद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कांवड़ियों पर पुष्पवर्षा के बाद हुई प्रेस ब्रीफिंग में कही।

सीएम योगी इन घटनाओं को लेकर बेहद सख्त नजर आए और कहा कि सभी घटनाओं के सीसीटीवी हैं, जिन्होंने भी कांवड़ यात्रा को बदनाम करने का प्रयास किया है, जो भी उपद्रवियों के भेष में छिपे हैं वो सब बेनकाब होंगे। मुख्यमंत्री योगी ने आगाह करते हुए कहा कि कांवड़ यात्रा में उत्साह और उमंग है। श्रद्धा और भक्ति है। वहीं इस उत्साह और श्रद्धा को बदनाम करने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा है। सोशल मीडिया के साथ अन्य माध्यमों से इस धार्मिक यात्रा को बदनाम करने का प्रयास किया जा रहा है। ऐसे लोगों को अपने बीच में न घुसने दें। कांवड़ को खंडित करने और श्रद्धा से जो खिलवाड़ करता है। खुद कानून हाथ में न लें बल्कि उनके बारे में प्रशासन को सूचना दें। मुख्यमंत्री योगी ने कांवड़ यात्रा के दौरान जहां कांवड़ियों पर पुष्पवर्षा की। वहीं लोगों को उनकी जिम्मेदारी का भी अहसास कराया। सीएम योगी ने कहा कि शिव लोकमंगल के देवता हैं। वो आदिदेव महादेव हैं। पुलिस प्रशासन ने तो बेहतर व्यवस्थाएं की हैं, लेकिन हमें भी अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। हमें दूसरों की परेशानी समझनी होगी। सफाई कर्मचारी तो अपनी जिम्मेदारी संभाल रहे हैं, लेकिन हमें भी अपना दायित्व समझना होगा।

जांच एजेंसियों के वकीलों को तलब करने पर SC ने लिया स्वत: संज्ञान

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने जांच एजेंसियों के वकीलों को तलब करने के मामले का स्वत: संज्ञान लिया है।

शीर्ष अदालत इस मामले में सोमवार को सुनवाई करेगी। मामले की सुनवाई मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई, न्यायमूर्ति के विनोद चंद्रन और न्यायमूर्ति एनवी अंजारिया की पीठ करेगी। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने हाल ही में वरिष्ठ वकील अरविंद दातार और प्रताप वेणुगोपाल को तलब किया था। इसे लेकर ईडी ने कहा कि उसने अपने जांच अधिकारियों को निर्देश दिया है कि वे अपने मुवक्किलों के खिलाफ चल रही जांच में किसी भी वकील को समन जारी न करें।

विधेयक मंजूरी मामले में संविधान पीठ कल करेगी विचार

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ 22 जुलाई को राष्ट्रपति के संदर्भ पर विचार करेगी कि क्या राज्य विधानसभाओं से पारित विधेयकों पर विचार करते वक्त राष्ट्रपति की ओर से विवेकाधिकार का प्रयोग करने के लिए न्यायिक आदेशों से समय-सीमाएं निर्धारित की जा सकती हैं।

सिर्फ आर्य समाज मंदिर का प्रमाणपत्र विवाह का वैध सबूत नहीं: इलाहाबाद हाईकोर्ट

■ कहा: महज स्टांप पेपर पर पति-पत्नी के बीच तलाक नहीं हो सकता

लखनऊ। इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ ने एक महिला के अनुकंपा नियुक्ति के मामले में दिए अहम फैसले में कहा कि सिर्फ आर्य समाज मंदिर का प्रमाणपत्र विवाह का वैध सबूत नहीं माना जाएगा।

अदालत ने यह भी कहा कि महज स्टांप पेपर पर पति-पत्नी के बीच तलाक नहीं हो सकता है। इन टिप्पणियों के साथ कोर्ट ने महिला की अनुकंपा नियुक्ति पाने की याचिका खारिज कर दी। न्यायाधीश मनीष माथुर की एकल पीठ ने यह फैसला महिला की याचिका पर दिया। महिला ने अपने कथित पति की मृत्यु के बाद उसकी जगह खुद को अनुकंपा नियुक्ति प्रदान करने का दावा किया था, जिसे कृषि विभाग ने बीते 5 अप्रैल को खारिज कर दिया था। दावे को खारिज करने के इसी आदेश को महिला ने याचिका में चुनौती दी थी।

एनआईए अदालत ने शमील की जमानत याचिका खारिज की

मुंबई। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) की यहां की एक विशेष अदालत ने प्रतिबंधित संगठन सिमी के कार्यकर्ता साकिब नाचन के पुत्र और आतंकवाद के आरोपी शमील नाचन की अंतरिम जमानत याचिका खारिज कर दी। शमील ने अपने पिता की मृत्यु के बाद विभिन्न क्रियाकलापों के लिए अदालत से अनुमति मांगी थी। उसके पिता की हाल ही में दिल्ली की तिहाड़ जेल में मृत्यु हो गई थी। अदालत ने याचिका खारिज करते हुए कहा कि नमाज कहीं से भी अदा की जा सकती है और कब्रिस्तान में व्यक्तिगत उपस्थिति आवश्यक नहीं है। शमील ने अपने पिता की मौत के बाद विभिन्न क्रियाकलापों के लिए 20 दिनों की अंतरिम जमानत दिए जाने का आग्रह किया था। शमील के वकीलों, मोबिन सोलकर और ताहिरा कुरैशी ने तर्क दिया था कि मुस्लिम रीति-रिवाजों के अनुसार, कुरान ख्वानी की व्यवस्था की जानी चाहिए। मृत्यु के बाद 20 दिनों की अवधि के दौरान, नमाज अदा करने के लिए कब्रिस्तान में दिन में दो बार जाना होता है।

नैनीताल से विश्व प्रसिद्ध कैंची धाम जुड़ेगा रोपवे से

अफ़ज़ल हुसैन 'फौजी'

■ अब 20 मिनट में होंगे बाबा के दर्शन, जाम से मिलेगी मुक्ति
■ जिला पर्यटन विभाग ने तैयार किया प्रस्ताव
■ श्रद्धालुओं-पर्यटकों को मिलेगी बड़ी राहत

नैनीताल। देवभूमि उत्तराखंड आने वाले पर्यटकों और बाबा नीम करौली महाराज के अनन्य भक्तों के लिए एक बड़ी खुशखबरी है।

नैनीताल से विश्व प्रसिद्ध कैंची धाम तक की यात्रा अब न केवल बेहद सुगम होगी, बल्कि समय भी कम लगेगा। दरअसल, जिला पर्यटन विभाग ने नैनीताल के स्नो व्यू से कैंची धाम तक एक अत्याधुनिक रोपवे (केबल कार) परियोजना का विस्तृत प्रस्ताव तैयार कर राज्य सरकार को भेज दिया है। इस पहल से श्रद्धालुओं और पर्यटकों को भीषण जाम और लंबी दूरी की थकावट से बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है। फिलहाल, नैनीताल से कैंची धाम तक सड़क मार्ग से करीब 17 किलोमीटर की दूरी तय करनी पड़ती है। गर्मियों की छुट्टियों, पीक पर्यटन सीजन और विशेषकर हर वर्ष आयोजित होने वाले कैंची धाम मेले के दौरान इस मार्ग पर अक्सर घंटों का भीषण जाम लग जाता है, जिससे यात्रा बेहद असहज और थका देने वाली हो जाती है।

स्नो व्यू से सीधे कैंची धाम तक उड़ान

जिलाधिकारी वंदना सिंह ने इस महत्वाकांक्षी परियोजना पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस रोपवे की मांग लंबे समय से की जा रही थी, खासकर स्थानीय होटल व्यवसायियों और पर्यटन कारोबारियों की ओर से। यह रोपवे नैनीताल के प्रसिद्ध स्नो व्यू प्वॉइंट से शुरू होकर सीधे कैंची धाम तक पहुंचेगा। उन्होंने आगे बताया कि सड़क मार्ग से यह दूरी 17 किमी है, जबकि रोपवे से यह महज 5-6 किलोमीटर रह जाएगी, जिसे लगभग 20 मिनट में तय किया जा -शेष पृष्ठ दो पर

संक्षिप्त समाचार

श्रीनिवासन व सुदर्शन वेणु से मिलकर खुशी हुईः मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कहा कि टीवीएस मोटर कंपनी के श्री वेणु श्रीनिवासन और श्री सुदर्शन वेणु से मिलकर उन्हें अपार खुशी हुई। मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर आज एक पोस्ट में कहा कि मैं कच्छ की सुंदरता को दर्शाने और मोटरसाइकिल सवारों को वहां जाने के लिए प्रोत्साहित करने के उनके प्रयास की सराहना करता हूं। दरअसल टीवीएस मोटर कंपनी के अध्यक्ष वेणु श्रीनिवासन और उनके पुत्र सुदर्शन वेणु ने शनिवार को प्रधानमंत्री से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री 'रण उत्सव 2025' कॉफी टेबल बुक भेंट की।

जनता ने 2017 में ही बूथ का भूत उतारा

देवरिया। उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी के प्रवक्ता एसएन सिंह ने रविवार को यहां समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव का बिना नाम लिए कहा कि प्रदेश की जनता ने 2017 में ही बूथ का भूत उतार दिया था और बची कसर 2027 जनता पूरी कर देगी। सिंह ने रविवार को यहां कहा कि सनातन को गाली, धर्मान्तरण और जेहाद का समर्थन के कारण ही उत्तर प्रदेश की जनता ने कई लोगों का बूथ का भूत उतार दिया है और बची खुची कसर जनता 2027 के विधान सभा चुनाव मे पूरा कर देगी। उन्होंने सपा मुखिया का नाम लिए बिना कहा कि इसलिए भूत की चिंता छोड़ दीजिए और इस बात की चिंता करिए कि यह देश रघुपति राघव राजा राम को मानते वाला है। ऐसी विचार धारा वाले देश में सनातन और हिन्दू संतों के खिलाफ जहर उगलने वाले लोगों को देश की जनता जवाब देना जानती है।

यूपीपीसीबी को क्षतिपूर्ति वसूलने का अधिकार नहींः हाईकोर्ट

शाह टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ ने एक अहम फैसले में कहा है कि औद्योगिक इकाइयों पर उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (यूपीपीसीबी) को पर्यावरणीय क्षतिपूर्ति लगाने का कोई अधिकार नहीं है।

न्यायालय ने कहा कि यह क्षतिपूर्ति अधिरोपित करने की शक्ति सिर्फ नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल को है। इस टिप्पणी के साथ कोर्ट ने यूपीपीसीबी द्वारा औद्योगिक इकाइयों पर पर्यावरणीय क्षतिपूर्ति लगाने के आदेशों को रद्द करके याचिकाएं मंजूर कर लीं। प्रदेश के आद्योगिक इकाइयों ने पर्यावरणीय क्षतिपूर्ति लगाने के आदेशों को चुनौती दी थी। न्यायाधीश एआर मसूदी और न्यायाधीश सुभाष विद्यार्थी की खंडपीठ ने यह फैसला 177 याचिकाओं पर एक साथ सुनवाई करके दिया है। यह सभी याचिकाएं प्रदेश की अलग-अलग औद्योगिक इकाइयों की ओर से दाखिल की गई थीं। याचिकाओं में पर्यावरण को हानि पहुंचाने के आरोप में इन औद्योगिक इकाइयों पर राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा लगाई गई क्षतिपूर्ति के आदेश को चुनौती दी गई थी। कोर्ट ने फैसले में कहा कि नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल अधिनियम के तहत सिर्फ ट्रिब्यूनल को ही पर्यावरण क्षतिपूर्ति लगाने करने की शक्ति है। वहीं न्यायालय ने यह भी कहा कि जल प्रदूषण के सम्बंध में राज्य सरकार भी कानून बना सकती है, लेकिन प्रदेश में ऐसा कोई विधान लागू नहीं किया गया है। जबकि असम, बिहार, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू व कश्मीर, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, राजस्थान त्रिपुरा व पश्चिम बंगाल राज्यों में जल प्रदूषण को लेकर कानून बने हुए हैं।

एएमयू में तिलक लगाकर ऑफिस आने पर आपत्ति

अलीगढ़। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में एक बार फिर धार्मिक भेदभाव का मामला सामने आया है। जेएन मेडिकल कॉलेज में कार्यरत कर्मचारी नेता पंडित आशीष शर्मा ने असिस्टेंट फाइनेंस ऑफिसर समीर मुर्सिल खान पर तिलक लगाने को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणियां करने और मानसिक उत्पीड़न का आरोप लगाया है। आशीष शर्मा ने फाइनेंस ऑफिसर को तत्काल निलंबित करने की मांग की है और चेतावनी दी है कि अगर कार्रवाई नहीं हुई, तो वे विरोध प्रदर्शन जारी रखेंगे। पंडित आशीष शर्मा पिछले सात वर्षों से एएमयू में कार्यरत हैं। इनका आरोप है कि फाइनेंस ऑफिसर समीर मुर्सिल खान द्वारा तिलक लगाने पर लगातार कमेंट किए जा रहे हैं। आशीष शर्मा ने बताया कि वे कहते हैं तुम तो नेता हो, काम कौन करेगा? तिलक लगाकर ऑफिस क्यों आते हो? यह मेरे आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाता है। उन्होंने दावा किया कि धार्मिक प्रतीकों को लेकर उन्हें निशाना बनाया जा रहा है, साथ ही वेतनवृद्धि और पदोन्नति में भी भेदभाव हो रहा है। शर्मा ने कहा कि उनके विभाग में बाहरी व्यापारियों से मिलने पर पाबंदी लगा दी गई।

आगरा धर्मांतरण केसः मुक्त हुई सगी बहनों के पिता ने खोले चौंकाने वाले राज

आगरा, वार्ता

धर्मांतरण गिरोह से मुक्त हुई सगी बहनों के पिता रविवार को मीडिया के सामने आए। उन्होंने कार्रवाई के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और यूपी पुलिस का धन्यवाद जताया। साथ ही धर्मांतरण गैंग के तरीकों पर भी चौंकाने वाले खुलासे किए।

पिता ने बताया कि मामले की शुरुआत वर्ष 2021 से हुई। बड़ी बेटी पीएचडी की कोचिंग ले रही थी। वहां उसके साथ जम्मू-कश्मीर की युवतियां भी पढ़ने आती थीं। इनमें से एक युवती ने बेटी को धर्मांतरण के लिए प्रेरित किया। उस युवती ने बेटी की मां से भी फोन पर बात की। पिता ने बताया कि इस दौरान युवती की मंशा थी कि ब्रेनवॉश कर पूरे परिवार का ही धर्मांतरण करा दिया जाए। पिता

■ ब्रेन वॉश कर शुरू करते हैं धर्मांतरण की कोशिश

ने बताया कि धर्मांतरण गिरोह के लोग टारगेट चुनते हैं। इसके बाद इंतजार करते हैं। नाबालिग की जगह बालिग को निशाने पर रखते हैं। इसके लिए गैंग को एक-दो साल का इंतजार करना पड़े तो करते हैं। जैसे ही 18 वर्ष की उम्र पूरी करते हैं, उस टारगेट पर गिरोह के सदस्य काम करना शुरू कर देते हैं। ब्रेन वॉश कर धर्मांतरण की कोशिश शुरू कर देते हैं। पिता ने कहा कि वह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का धन्यवाद करते हैं। उन्होंने समय रहते बेटियों को मुक्त कराने के लिए यूपी पुलिस की भी प्रशंसा की। पुलिस के अनुसार सदर बाजार स्थित पंजाबी परिवार की बड़ी बेटी एमफिल पास है। वर्ष 2020 में उसकी पहचान जम्मू-कश्मीर के उधमपुर निवासी साइमा उर्फ खुशबू से हुई थी। दोनों में दोस्ती हो गई। साइमा आगरा के लाइफ साइंस से पढ़ाई कर रही थी। वर्ष 2021 में साइमा अपने साथ बड़ी बहन को जम्मू कश्मीर ले गई थी। अचानक लैंड स्लाइड हो गया था। उनकी गाड़ी फंस गई। किसी तरह उन्हें निकाला गया। तब साइमा ने खुद को रिटायर इंस्पेक्टर की बेटी बताया था। जम्मू-कश्मीर पुलिस की सूचना पर परिजन बेटी को वापस लेकर आए थे। बेटी के घर पहुंचने पर परिवार के लोगों को पता चला कि वह पूजा-पाठ करने से इन्कार कर रही है। वह इस्लाम को मानने लगी थी। वह कई लोगों से फोन पर बातचीत किया करती थी। डाक से उसके पास इस्लाम से संबंधित किताबें आया करती थीं।

पहलगाम से लेकर एसआईआर तक पीएम से मांगेंगे जवाबः गोगोई

संसद में पीएम मोदी को घेरेगी कांग्रेस

नई दिल्ली, वार्ता

मानसून सत्र शुरू होने से पहले विपक्षी नेताओं ने बताया कि वह किन मुद्दों को उठाकर सदन में सरकार को घेरेंगे। कांग्रेस नेता गौरव गोगोई ने कहा कि हमें उम्मीद है कि सरकार का मुखिया होने के नाते पीएम सदन में उठे सभी सवालों के जवाब देंगे। लोकसभा का मानसूत्र सत्र सोमवार को शुरू होने जा रहा है। इसी को लेकर विपक्षी दल के सभी नेताओं ने सदन में उठाए जाने वाले सवालों की लिस्ट बना ली है।

सर्वदलीय बैठक से पहले कई नेताओं ने मीडिया के सामने उनके द्वारा उठाए जाने वाले सवालों पर चर्चा की। कांग्रेस नेता गौरव गोगोई ने मीडिया से कहा

■ आज से संसद का मानसून सत्र, सर्वदलीय बैठक में बोली कांग्रेस

कि पिछले कुछ महीनों के महत्वपूर्ण और दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं के बाद संसद का सत्र शुरू हो रहा है। हमें उम्मीद है कि पीएम मोदी सदन में जवाब देंगे। उन्होंने कहा कि जैसा कि जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल ने बताया कि पहलगाम हमला सुरक्षा चूक थी, तो सरकार को अपनी चूक पर बात रखनी होगी। गोगोई ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के समय हमने अपनी सेना को समर्थन दिया, यह जरूरी है कि संसद में हम सेना के साथ एकजुट रहें।

गोगोई ने कहा जो बयान अमेरिका के राष्ट्रपति की ओर बार-बार आ रहे हैं कि भारत-पाकिस्तान के बीच सीजफायर उन्होंने करवाया, वह भारत की गरिमा और सेना के शौर्य पर सवाल उठाता है। चुनाव आयोग को घेरते हुए उन्होंने कहा कि वोट देने का अधिकार हर नागरिक होता है, आज चुनाव आयोग राजनीतिक दलों से ठीक से बात करने में भी हिचकिचा रहे हैं। चुनाव आयोग की तरफ से किसी भी पार्टी को कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया रहा है।

रोजगार मेले में उमड़ी भीड़ पर राहुल का सरकार पर हमला

नई दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बिहार में एक रोजगार मेले में उमड़ी बेरोजगार युवकों की भारी भीड़ को लेकर राजग सरकार पर हमला करते हुए कहा कि बिहार के युवा अब लच्छेदार बातों की फेर में आने वाले नहीं है, बल्कि उन्हें रोजगार की गारंटी चाहिए और यह काम कांग्रेस के नेतृत्व वाला इंडिया गठबंधन ही कर सकता है। गांधी ने कहा कि बेरोजगार युवकों यह भीड़ बताती है कि बिहार के काबिल युवाओं के लिए सरकार रोजगार मुहैया नहीं कराई पा रही है। बिहार का युवा भाषण नहीं रोजगार चाहता है और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली सरकार उन्हें रोजगार देने में विफल रही है। उन्होंने सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि महारोज़गार मेला में उमड़ा यह जनसैलाब सिर्फ़ एक भीड़ नहीं, एक संदेश है कि बिहार का युवा अब भाषणों पर नहीं, रोज़गार से अपना भविष्य चाहता है। भाजपा और नीतीश सरकार ने बिहार को जिस तरह बेरोज़गारी की आग में झोंका, वहां से लाखों युवाओं को रोज़ी-रोटी के लिए पलायन करना पड़ता है।

एकजुट होकर आतंकवाद के खिलाफ छेड़ना होगा युद्ध

जम्मू-कश्मीर के एलजी ने किया आह्वान

श्रीनगर, वार्ता

उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने रविवार को कहा कि एकजुट होकर आतंकवाद, उसके पारिस्थितिकी तंत्र और नशे की लत के खिलाफ युद्ध छेड़ना होगा।

सिन्हा ने कहा कि आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले पारिस्थितिकी तंत्र को खत्म करना तथा युवाओं को कटरपंथी बनाने, हथियारों की आपूर्ति करने, धन उपलब्ध कराने और आतंकवादियों की सहायता करने के लिए जिम्मेदार पूरे नेटवर्क को नष्ट करना उनका दृढ़ संकल्प है। वह श्रीनगर में जम्मू-कश्मीर पुलिस द्वारा आयोजित 'पेडल थ्रू पैराडाइज' साइकिल रेस-2025 के सम्मान समारोह में शामिल होने के दौरान एक सभा को संबोधित कर रहे थे। उपराज्यपाल ने विजेताओं को सम्मानित किया तथा प्रतिभागियों के उत्साह तथा एकता की भावना की सराहना की। इसमें देश के विभिन्न हिस्सों से 5500 से अधिक साइकिल चालकों ने हिस्सा लिया। सिन्हा ने केंद्र शासित प्रदेश में शांति एवं प्रगति सुनिश्चित करने में जम्मू-कश्मीर के बहादुर पुलिस कर्मियों के बलिदान, समर्पण और वीरता को सलाम किया।

सेंसेक्स 81757.73
निफ्टी 2496840

सोना रु. 98243
प्रति 10 ग्राम (24 कैरेट)

अर्थ व्यापार

चांदी रु. 112700
प्रति किलो

वैश्विक कारकों से तय होगी बाजार की चाल

मुंबई, वार्ता

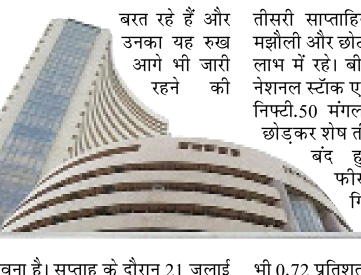

लगातार तीन सप्ताह की गिरावट के बाद अगले सप्ताह शेयर बाजार की दिशा तय करने में घरेलू स्तर पर कंपनियों के तिमाही परिणाम और वैश्विक स्तर पर अमेरिका में स्टेबलकॉइन को लेकर बने नए कानून की अहम भूमिका होगी।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शुक्रवार को गाइडिंग एंड इस्टेब्लिशिंग नेशनल इनोवेशन फॉर यू.एस. स्टेबलकॉइन्स' (जीनियस) एक्ट पर हस्ताक्षर कर दिए जिसका असर सोमवार को बाजार खुलते ही दिखेगा। खासकर स्टेबलकॉइन जारी करने वालों के लिए शत-प्रतिशत रिजर्व रखने के प्रावधान से डॉलर और अल्पावधि अमेरिकी ट्रेजरी बॉन्ड की मांग बढ़ेगी और ये मजबूत होंगे। इससे विदेशी निवेशक भारतीय बाजार से पैसा निकाल सकते हैं।

अमेरिका द्वारा नए टैरिफ को लेकर अंतिम समझौते से पहले निवेशक सतर्कता बरत रहे हैं और उनका यह रुख आगे भी जारी रहने की संभावना है। सप्ताह के दौरान 21 जुलाई को इटरनल, 23 जुलाई को इंफोसिस और 25 जुलाई को बजाज फाइनेंशियल सर्विसेज के परिणाम जारी होने हैं। आईडीबीआई, यूको बैंक, केनरा बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा और कोटक महिंद्रा बैंक समेत कई बैंकों के परिणाम भी सप्ताह के दौरान जारी होने हैं। निवेशकों की नजर सोमवार को जारी होने वाले आठ प्रमुख उद्योगों के आंकड़ों पर भी रहेगी। बीते सप्ताह प्रमुख सूचकांकों में जहां लगातार तीसरी साप्ताहिक गिरावट रही, वहीं मझौली और छोटी कंपनियों के निवेशक लाभ में रहे। बीएसई का सेंसेक्स और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी.50 मंगलवार और बुधवार को छोड़कर शेष तीन दिन लाल निशान में बंद हुआ। सेंसेक्स 0.90 फीसदी की साप्ताहिक गिरावट के साथ शुक्रवार को 81,757.73 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी भी 0.72 प्रतिशत लुढ़ककर 24,968.40 अंक पर आ गया। यह दोनों का एक महीने का निचला स्तर है। निफ्टी.100 में 0.53 फीसदी की गिरावट रही। दूसरी तरफ, मिडकैप और स्मॉलकैप में साप्ताहिक तेजी रही। निफ्टी मिडकैप.50 में 0.99 प्रतिशत का उछाल देखा गया और यह शुक्रवार को 16,645.40 अंक पर रहा। निफ्टी स्मॉलकैप.100 भी 1.04 प्रतिशत की बढ़त में 18,959.65 अंक पर बंद हुआ।

विदेशी संस्थागत निवेशकों ने किया 5,939 करोड़ रुपये का निवेश

मुंबई। विदेशी संस्थागत निवेशकों ने जुलाई में अब तक भारतीय पूंजी बाजार में 69.6 करोड़ डॉलर (5,939 करोड़ रुपए) का शुद्ध निवेश किया है। आधिकारिक जानकारी के अनुसार महीने के दौरान विदेशी संस्थागत निवेशकों ने शेयरों में बिकवाली कर डेट खरीदे। इक्विटी में उन्होंने 64.3 करोड़ डॉलर की बिकवाली की जबकि 134.4 करोड़ डॉलर के डेट की लिवाली की। इसके अलावा म्यूचुअल फंड में उन्होंने 4.6 करोड़ डॉलर लगाए जबकि हाइब्रिड इंस्ट्रूमेंट से पांच करोड़ डॉलर निकाले। इस महीने की शुरुआत में निवेशकों का रुख सकारात्मक था, हालांकि बाद में वे बिकवाल हो गए, खासकर पिछले सप्ताह। इससे पहले जून में एफपीआई निवेशक बिकवाल रहे थे। उन्होंने शुद्ध रूप से बाजार से 90.4 करोड़ डॉलर निकाले थे। पूरे कैलेंडर वर्ष के दौरान उन्होंने भारतीय पूंजी बाजार से 682.2 करोड़ डॉलर की शुद्ध निकासी की है।

सोनभद्र के जंगल में यूरेनियम का भंडार?

सोनभद्र। भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा विभाग ने उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जनपद में यूरेनियम खनिज की खोज शुरू कर दी है। म्योरपुर ब्लॉक के पूर्वी देव हार इलाके के घने चितपहरी जंगल में विभाग की एक टीम द्वारा गुपचुप तरीके से 1100 फीट गहरी खुदाई की जा रही है।

विश्वसनीय सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार इस खुदाई का उद्देश्य क्षेत्र में यूरेनियम की उपलब्धता की जांच करना है। भारत सरकार के अंतर्गत कार्यरत परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय की वैज्ञानिक टीम काफी समय से सोनभद्र के इस क्षेत्र में भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण कर रही थी। भू-गर्भीय संकेतों और रॉक सैंपल के परीक्षण में संभावनाएं मिलने के बाद यहां खुदाई का कार्य शुरू किया गया है। चितपहरी गांव के जंगलों में की

■ परमाणु ऊर्जा विभाग की टीम ने शुरू की खुदाई

जा रही यह खुदाई पूरी तरह वैज्ञानिक प्रक्रिया के तहत की जा रही है। टीम के पास अत्याधुनिक ड्रिलिंग मशीनें और सेंसर लगे यंत्र हैं, जिनकी सहायता से गहराई में मौजूद खनिज तत्वों की पहचान की जा रही है। खुदाई के शुरुआती स्तर पर वैज्ञानिकों को कुछ रेडियोधर्मी तत्वों के संकेत मिले हैं, लेकिन फिलहाल इस बात की पुष्टि नहीं की गई है कि वह शुद्ध यूरेनियम है या उससे जुड़ा कोई अन्य खनिज है। चूंकि खुदाई वन क्षेत्र के अंदर हो रही है, इसलिए वन्यजीवों और पर्यावरण पर असर को लेकर विशेष ध्यान रखा जा रहा है। खुदाई स्थल के चारों ओर बैरिकेडिंग कर दी गई है और आम लोगों की आवाजाही पर रोक लगा दी गई है।

क्या है यूरेनियम और इसका महत्व?

यूरेनियम एक अत्यधिक महत्वपूर्ण रेडियोधर्मी खनिज है, जिसका इस्तेमाल मुख्य रूप से परमाणु ऊर्जा उत्पादन और सैन्य हथियारों में किया जाता है। भारत में यूरेनियम के सीमित भंडार हैं और इसकी खोज की प्रक्रिया लगातार जारी है। अगर सोनभद्र में इसकी पुष्टि होती है, तो यह न केवल राज्य बल्कि पूरे देश के लिए बड़ी उपलब्धि होगी। सोनभद्र जिला पहले से ही अपनी खनिज संपदा के लिए प्रसिद्ध है। यहां बाक्साइट, मैग्नीज, आयरन, सिलिका आदि जैसे खनिज पहले से खनन किए जा रहे हैं। अगर यूरेनियम की पुष्टि होती है, तो यह इस जिले के खनन मानचित्र को अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहचान दिला सकता है।

प्रथम पृष्ठ के शेष...

विपक्ष एकसुर.. कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को ऑपरेशन सिंदूर से जुड़े सवालों का जवाब देने के लिए संसद से देश को संबोधित करना चाहिए। उनका कहना था कि सदस्यों ने बिहार में मतदाता सूची का मामला भी उठाया। आम आदमी पार्टी के संजय सिंह ने कहा कि उन्हें कहीं अन्यत्र जाना था इसलिए और बैठक बीच में छोड़कर के आए, लेकिन उन्होंने बैठक में पार्टी की तरफ से अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड के उन आरोपों पर सरकार का स्पष्टीकरण मांगा जिनमें पांच जेट विमानों को गिराने की बात कही गई है। उन्होंने कहा कि मैंने बिहार में मतदाता पर बुलडोज़र कार्रवाई और अहमदाबाद विमान दुर्घटना में हमारे पायलटों को दोषी ठहराए जाने का मुद्दा उठाया। बीजू जनता दल के सस्मित पात्रा ने कहा कि ओडिशा में कानून-व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त है और राज्य की भाजपा सरकार असहाय और विफल नजर आ रही है। उनका कहना था कि संसद सत्र के दौरान पार्टी इस मुद्दे को मजबूती से उठाएगी। तेलुगु देशम पार्टी के लावु श्रीकृष्ण देवरायलु ने कहा कि संसद के 21 दिन के दौरान सभी दलों को संसद का कामकाज सुचारू रूप से चलाने के लिए मिलकर काम करना चाहिए और संसद में कामकाजी घंटों का सही तरीके से उपयोग होना चाहिए।

नैनीताल से... सकेगा। प्रारंभिक आकलन के अनुसार, इस रूट को भौगोलिक और पर्यावरणीय दोनों दृष्टियों से उपयुक्त पाया गया है। प्रशासन जल्द ही तकनीकी विशेषज्ञों की एक टीम के साथ विस्तृत भू-सर्वेक्षण और साइट निरीक्षण शुरू करेगा, ताकि प्रस्ताव को और अधिक मजबूती मिल सके। पर्यटन उद्योग को मिलेगी नई ऊर्जा- यह परियोजना न केवल श्रद्धालुओं और पर्यटकों के लिए यात्रा को सुगम बनाएगी, बल्कि नैनीताल के समूचे पर्यटन उद्योग को भी नई ऊर्जा प्रदान करेगी। होटल, टैक्सी, खानपान, हस्तशिल्प और स्थानीय बाजारों से जुड़े व्यवसायों में उल्लेखनीय वृद्धि होगी, जिससे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे। होटल एसोसिएशन के अध्यक्ष दिग्विजय सिंह बिष्ट ने इस परियोजना की सराहना करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की महत्वाकांक्षी पर्वतमाला योजना के तहत देशभर में रोपवे निर्माण को बढ़ावा दिया जा रहा है और नैनीताल-कैंची धाम रोपवे इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

उन्होंने आगे कहा कि यह सरकार का एक अत्यंत सराहनीय निर्णय है, जो धार्मिक पर्यटन को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा और हर साल कैंची धाम में लगने वाले भीषण जाम से लाखों श्रद्धालुओं को मुक्ति दिलाएगा।प्रतिवर्ष देश-विदेश से लाखों की संख्या में श्रद्धालु बाबा नीम करौली महाराज के पावन दर्शनों के लिए कैंची धाम पहुंचते हैं, जिनमें बड़ी संख्या में विदेशी भक्त भी शामिल होते हैं। रोपवे उनके लिए न केवल एक सुविधाजनक माध्यम होगा, बल्कि यह उनके आध्यात्मिक अनुभव को भी और अधिक समृद्ध करेगा। स्थानीय लोगों, व्यापारियों और बाबा के भक्तों के बीच इस खबर को लेकर जबरदस्त उत्साह व्याप्त है। यदि यह परियोजना धरातल पर उतरती है, तो यह उत्तराखंड के धार्मिक पर्यटन के लिए एक ऐतिहासिक पहल साबित होगी। नैनीताल से कैंची धाम तक की यह रोपवे यात्रा निश्चित रूप से लोगों के लिए अध्यात्म और रोमांच का एक अविस्मरणीय संगम बन जाएगी।

बनारस में बरेका ने 2500वें विद्युत रेल इंजन का किया निर्माण

बनारस, वार्ता

बनारस रेल इंजन कारखाने ने 2017 में दो विद्युत इंजन के निर्माण के साथ अपना सफर शुरू किया था और अब इसने 2500वें इंजन बनाने की ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल कर ली है। कंपनी तकनीकी उत्कृष्टता और नवाचार की रोज नई ऊंचाइयों को छू रही है।

बरेका ने अब तक 10,822 लोकोमोटिव बनाए हैं, जिनमें 7498 डीज़ल इंजन और 2500 विद्युत इंजन शामिल है। इनमें से 641 गैर-रेलवे ग्राहकों के लिए, 174 निर्यातित डीज़ल इंजन, 01 ड्यूल ट्रैक्शन इंजन, 08 कन्वर्जन इंजन शामिल हैं। बरेका ने आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य में योगदान देते हुए वित्तीय वर्ष 2024-25 में रिकॉर्ड 472 इलेक्ट्रिक लोको का निर्माण

■ छह हजार एचपी क्षमता है, 140 किमी प्रति घंटा की रफ्तार

किया है। यह बरेका की उत्पादन क्षमता, दृढ़ इच्छाशक्ति और तकनीकी सामर्थ्य को दर्शाता है। बरेका द्वारा निर्मित 2500वां विद्युत इंजन आधुनिक तकनीक से लैस डब्ल्यूएपी-7 श्रेणी का है, जिसमें 6000 एचपी क्षमता, वातानुकूलित कैब, रीजेनेरेटिव ब्रेकिंग और 140 किलोमीटर/घंटा की रफ्तार की क्षमता है। यह इंजन दक्षिण- पश्चिम रेलवे के कृष्णराजपुरम शेड को भेजा जा रहा है। बरेका के महाप्रबंधक नरेश पाल सिंह ने 2500 वें लोकोमोटिव का लोकार्पण मीडिया की टीम की मौजूदगी में किया। कार्यक्रम की शुरुआत 'हॉल ऑफ फेम' में एक विस्तृत प्रस्तुतिकरण से हुई, जिसमें बरेका के निर्माण इतिहास, निर्यात उपलब्धियों, स्वदेशीकरण, हरित ऊर्जा प्रयासों एवं तकनीकी नवाचारों को रेखांकित किया गया। इसके बाद रेलवे बोर्ड के कार्यकारी निदेशक (सूचना एवं प्रचार) दिलीप कुमार ने मीडिया टीम के साथ बरेका का निरीक्षण किया। इस दौरान प्रमुख मुख्य विभागाध्यक्ष, वरिष्ठ अधिकारी, कर्मचारी परिषद् सदस्य और काफी संख्या में कर्मचारी उपस्थित रहे। शेष आठ इंजनों की आपूर्ति दिसंबर 2025 तक की जाएगी। बरेका मोज़ाम्बिक, तंजानिया, वियतनाम, म्यांमार, माली, अंगोला, बंगलादेश, श्रीलंका, मलेशिया, नेपाल और सूडान डीजल इंजन की आपूर्ति करता है। गौरतलब है कि भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने अप्रैल 1956 में इस कारखाने का शिलान्यास किया था।

शाह टाइम्स क्लासीफाईड्स Sale

स्त्री के सामने लज्जित होने से बेहतर है
आज ही इलाज करा लेना खोई हुई मर्दाना ताकत दोबारा प्राप्त करने के लिए आज ही मिलें या फोन करें।
काजीजादा, अमरोहा-UP
हाशमी दवाखाना
9997161320, 8272800800

काम कोर्स उदास क्यों?
अधिक संतुष्टि, हैरतअंगेज पावर, शीघ्रपतन, नपुसकता, बचपन की गलतियों से हमेशा के लिए छुटकारा।
फोन कर घर बैठे औषधियां डाक द्वारा प्राप्त करें।
ऋषि इन्टरनेशनल
08899787114
09808917010

Cipzer
HEALTH WITH CARE
जॉन्डिस क्योर
लिवर का जिगरी दोस्त

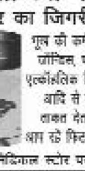

प्रमुख मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
86 8484 5757 info@cipzer.com

वैधानिक सूचना
पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार में प्रकाशित होने वाले सभी विज्ञापनों पर कार्यवाही करने से पहले पूरी जांच-पड़ताल कर लें तथा उचित सलाह ले लें। कोई भी अभिदाता जो इस अखबार में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन के संदर्भ में कोई राशि भेजता है, किसी चिकित्सीय सलाह पर कोई कार्यवाही या खर्च करता है या कोई वचन देता है, तो ऐसा वह स्वविवेक, बुद्धि तथा जोखिम पर करेंगे। कम्पनी, प्रकाशक या उसका कोई कर्मचारी विज्ञापनदाता या उसके किसी उत्पाद या सेवा हेतु किये गये किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन नहीं देते तथा ऐसे विज्ञापनों विश्वास करके किसी व्यक्ति को हुई क्षति, हानि परिणाम के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे।

दो कांवड़ियों सहित तीन की दर्दनाक मौत

शाहपुर क्षेत्र में भोलों की गाड़ी पलटी, मृतक के कई साथी घायल, मंडी में मिला एक शव

शाह टाइम्स संवाददाता

मुजफ्फरनगर। अलग-अलग थाना क्षेत्र में दो भोलों की दर्दनाक मौत हो गई, जबकि कई शिव भक्त घायल हुए है। मंडी क्षेत्र में कावंडियां पचैंडा पुल पर पडा हुआ मिला जब पुलिस ने अस्पताल पहुंचाया तो डॉक्टरो ने उसे मृत घोषित कर दिया और शाहपुर में शिवभक्तों की गाडी पलट जाने से एक कांवडिये की मौत हा गई और उसके कई साथी घायल हो गए। दोनो थानों की पुलिस ने जहां शवों को मोर्चरी भेज दिया वहीं घायलों को जिला अस्पताल से रैफर कर दिया गया।

महेन्द्रगढ़ निवासी 28 वर्षीय भोला अमित पुत्र ओमप्रकाश अपने आधा दर्जन से अधिक कांवडियों के साथ हरिद्वार गंगाजल लेने के लिए आए थे। हरिद्वार से गंगाजल लेकर अमित व उसके साथी वापस लौट रहे थे जैसे ही भोलों से भरी गाडी शाहपुर क्षेत्र के सिमली बाईपास पर पहुंची तो किसी कारण से चालक का बैलेंस बिगड गया और गाडी पलट गई। इसमें करीब चार भोले बुरी तरह जख्मी हो गए। कांवडियों की सेवा में लगी शाहपुर पुलिस ने सभी को ईलाज के लिए जिला अस्पताल पहुंचाया जहां अमित को मृत घोषित कर दिया और घायल शिवभक्तों को रैफर कर दिया गया। शाहपुर पुलिस ने नाम पते ज्ञात कर सभी कांविडयों के परिजनों को इस दुखद घटना की जानकारी दी।

वहीं दूसरी ओर दिल्ली के नफजतगढ़ निवासी 35 वर्षीय विक्की पुत्र ओमप्रकाश अपने घर से हरिद्वार गंगाजल लेने के लिए आया था विक्की के साथ उसके अन्य साथी कांवडिये भी थे। किसी तरह विक्की के साथी बिछड़ गए। बताया जाता है कि विक्की मंडी क्षेत्र के पचैंडा पुल पर बेहोसी की हालत में पाया गया। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और कांवडिये को जिला अस्पताल भेजा और डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। विक्की के सिर पर चोटे लगी हुई थी जिससे विक्की का अनुमान है कि किसी अज्ञात वाहन की चपेट में आने से या किसी कारण सड़क पर गिरने से कावंडिये को चोट लगी और उसकी मौत हो गई। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम कराने के बाद परिजनों के सुपुर्द कर दिया है।

खेत में दवाई छिड़कते किसान की गई जान

तितावी। थाना क्षेत्र के गढ़ी देशराज में खेत में दवाई का छिड़काव कर रहे किसान की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। हादसे से परिवार में कोहराम मचा है। जानकारी के अनुसार तितावी थाना क्षेत्र के बघरा के मजरा गढ़ी देशराज निवासी राजेश पुत्र जगदीश गत दिवस अपने खेतों में दवाई का छिड़काव कर रहा था। इसी दौरान अचानक दवाई के छिड़काव से राजेश बेहोश हो गया। परिजन राकेश को प्राइवेट चिकित्सक के पास ले गए, जहां चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया।

अचानक हुए हादसे से परिवार में कोहराम मच गया। सूचना पाकर तितावी पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। पुलिस का कहना कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही आगे की कार्रवाई की जाएगी।

दीवार गिरने से बिहारी मजदूर की मौत

मुजफ्फरनगर। मंडी कोतवाली की चौकी बीबीपुर क्षेत्र में पुराने स्कूल की बिल्डिंग तोड़कर निर्माणाधीन अस्पताल की एक दीवार टूटकर गिरने से बिहारी मजदूर की मौत हो गई। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करा दिया है।

चौकी बीबीपुर क्षेत्र में पुराने स्कूल की बिल्डिंग तोडी जा रही है। इस स्थान पर एक हॉस्पिटल का निर्माण कराया जाएगा। बताया जाता है कि कई रोज से कई मजदूर पुराने स्कूल की बिल्डिंग तोड रहे है, अचानक दीवार गिरने से मजदूर श्याम सुन्दर मलबे में दब गया। किसी तरह अन्य मजदूरों ने उसको बाहर निकाल. कर अस्पताल भिजवाया, लेकिन यहां आने तक उसकी मौत हो चुकी थी। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करा दिया है।

योगी ने कांवड़ यात्रा का हवाई सर्वेक्षण कर की पुष्प वर्षा

मंत्री कपिल देव ने शिव चौक पर लहराया भगवा परचम

शाह टाइम्स संवाददाता

मुजफ्फरनगर। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हेलीकॉप्टर से मुजफ्फरनगर जनपद के कांवड़ मार्गों का हवाई निरीक्षण किया और शहर के शिव चौक पर भी आकाश से ही भगवान शिव की परिक्रमा करते हुए कांवड़ियों पर पुष्प वर्षा भी की। उन्होंने हवाई सर्वेक्षण के माध्यम से कांवड़ियों की आवाजाही, सुरक्षा, व्यवस्थाओं और सुविधाओं की व्यापक समीक्षा की। मुख्यमंत्री जी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि कांवड़ यात्रा के दौरान श्रद्धालु शिवभक्तों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो, यह सुनिश्चित किया जाए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार कांवड़ यात्रा के सफल संचालन के लिए पूर्णत: संकल्पबद्ध है। यह सिर्फ एक यात्रा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक आस्था और धार्मिक भावना का उत्सव है। हर श्रद्धालु की सेवा, हमारे लिए सेवा कार्य नहीं, बल्कि पुण्य कार्य है। सीएम योगी ने यहां से गुजरते हुए गंगनहर तक मार्ग पर व्यवस्था देखी। इस दौरान डीएम और एसएसपी सहित पूरा अमला सतर्क नजर आया।

सीएम योगी यहां से गाजियाबाद स्थित दूधेश्वरनाथ महादेव मठ मंदिर पहुंचे और वहां पर विधि-विधान से दर्शन-पूजन कर सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याण की मंगलकामना की। मुख्यमंत्री के निरीक्षण से पहले प्रदेश सरकार में स्वतंत्र प्रभार राज्यमंत्री कपिल देव अग्रवाल ने मुजफ्फरनगर स्थित कांवड़ नियंत्रण कक्ष, प्रमुख शिविर स्थलों और पैदल कांवड़ मार्गों का स्वयं स्थलीय निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों से विस्तृत जानकारी ली और समस्त व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान वो शिव चौक पहुंचे और यहां पर मीरापुर विधायक मिथलेश पाल, नगरपालिका परिषद् की अध्यक्ष मीनाक्षी स्वरूप एवं भाजपा पदाधिकारियों के साथ सनातन संस्कृति का प्रचार करते हुए भगवा ध्वज भी लहराया और शिव भक्त कांवड़ियों की भरपूर सेवा की। शिव चौक पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के स्वागत में प्रमुख अक्षय पुंडीर, वरिष्ठ भाजपा नेता गौरव स्वरूप, पूर्व जिलाध्यक्ष विजय शुक्ला, मंडल अध्यक्ष प्रवीण खेड़ा, दीपक मित्तल, नंदकिशोर पाल, श्रीमोहन तायल, सुनील तायल, सुधीर खटीक, सभासद नवनीत गुप्ता, बबीता सिंह, ममता बालियान, रितु त्यागी, शरद शर्मा, रूपेन्द्र सैनी, रेणु गर्ग, साधना सिंघल, नितिन मलिक, अजय सिंघल, अचिन कंसल, जनार्दन विश्वकर्मा, कृष्ण गोपाल मित्तल रहे।

गंगाजल लेकर अपने गंतव्य की ओर बढ़ने से पूर्व शिव चौक की परिक्रमा करते शिवभक्त।

मुजफ्फरनगर: शिव चौक पर भाजपाईयों संग भगवा परचम लहराते मंत्री व पालिकाध्यक्ष।

'योगी-योगी' के नारों से गूंज उठा खतौली नगर

एतिहासिक क्षणों का साक्षी बना खतौली क्षेत्र

शाह टाइम्स संवाददाता

खतौली। श्रावण मास की पवित्र कांवड यात्रा के दौरान रविवार को खतौली नगर ऐतिहासिक क्षणों का साक्षी बना जब उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हेलीकॉप्टर उड़नखटोला से शिवभक्तों पर पुष्पवर्षा की। मुख्यमंत्री को आकाशमार्ग से आता देख शिवभक्तों और नगरवासियों की आंखें चमक उठीं। पूरा नगर 'योगी-योगी', 'हर हर महादेव' और 'बोल बम' के जयघोषों से गूंज उठा। जिलाधिकारी उमेश कुमार मिश्रा, एसएसपी संजय कुमार, एडीएम एफ गजेंद्र सिंह, एसडीएम राजकुमार, सीओ रामआशीष यादव, कोतवाल बृजेश कुमार शर्मा आदि प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे।

गंगनहर पुल पर उमड़ी शिवभक्तों की भीड़: मुख्यमंत्री के आगमन की सूचना पहले से ही नगर में चर्चा का विषय बनी हुई थी। जैसे ही उनका हेलीकॉप्टर खतौली के गंगनहर पुल के ऊपर मंडराने लगा, नीचे हजारों की संख्या में शिवभक्त, भाजपा कार्यकर्ता और आम नागरिकों ने हाथ हिलाकर उनका अभिवादन किया। मुख्यमंत्री ने हर्षोल्लास के साथ शिवभक्तों पर गुलाब और गेंदे के फूलों की वर्षा की।

भाजपा नेताओं ने किया स्वागत, जयकारों से गूंजा नगर: मुख्यमंत्री का स्वागत करने के लिए भाजपा के जिला और मंडल स्तर के सैकडों नेता मौके पर मौजूद रहे। भाजपा जिलाध्यक्ष सुधीर सैनी, मंडल अध्यक्ष परवीन ठकराल, मदन छाबड़ा, गौरीशंकर गौरी, श्याम रहेजा, अजय भुर्जी, शेखर सैनी, विनित ठाकुर, अमित त्यागी, बिजेंद्र पांचाल, राकेश प्रजा. पति, सुधीश पुंडीर, नीटू उपाध्याय, रवि ग्रोवर, प्रदीप शर्मा, सहित कई प्रमुख नेताओं ने मुख्यमंत्री के स्वागत में हाथ हिलाकर आभार प्रकट किया। गंगनहर पुल और आसपास का क्षेत्र 'योगी-महादेव' के नारों से गूंजता रहा।

प्रशासन रहा अलर्ट, चाकचौबंद रही व्यवस्था: मुख्यमंत्री के दौरे को देखते हुए जिला प्रशासन और पुलिस-प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद रहा। खतौली नगर में सुरक्षा व्यवस्था बेहद चाकचौबंद रही। जगह-जगह पुलिस फोर्स, होमगार्ड, और एनडीआरएफ की टीमें तैनात रहीं। हेलीकॉप्टर से पुष्पवर्षा के लिए प्रशासन ने पहले से ही ट्रैफिक डायवर्जन लागू किया था, जिससे आमजन को कोई असु. विधा न हो।

शिवभक्तों के लिए बनी ऐतिहासिक घडी: पुष्पवर्षा के दौरान शिवभक्तों की आंखों में खुशी और गर्व के भाव साफ झलक रहे थे। मेरठ, मुजफ्फरनगर, बागपत, सहारनपुर समेत विभिन्न जनपदों से आए कांवडियों ने मुख्यमंत्री की इस पहल को 'अद्भुत और अविस्मरणीय' बताया। कई श्रद्धालुओं ने बताया कि किसी मुख्यमंत्री ने इस तरह हवाई मार्ग से आकर कांवडियों का मनोबल बढाया है। यह दृश्य जीवन भर याद रहेगा। योगी ने जो सम्मान शिवभक्तों को दिया है, वह पहले किसी सरकार में नहीं देखा गया।

मुख्यमंत्री ने ट्वीट कर जताया भाव: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी इस अवसर पर सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी भावनाएं साझा कीं।

उन्होंने लिखा श्रावण मास में कांवड यात्रा के पावन अवसर पर खतौली में भोलेनाथ के भक्तों पर पुष्पवर्षा कर आशीर्वाद प्राप्त किया। बाबा का आशीष सभी श्रद्धालुओं पर बना रहे। हर हर महादेव।

फर्जी सीबीआई ने दम्पति को डिजीटल कैद किया

तरह-तरह के मुकदमों का डर दिखाकर लाखों की ठगी के प्रयास का मुकदमा दर्ज

शाह टाइम्स संवाददाता

मुजफ्फरनगर। साइबर ठगों ने एक जिम्मेदार व्यक्ति व उसकी पत्नी को फर्जी वर्दी की आड में सीबीआई अधिकारी बताकर 24 घंटे उनके ही घर में नजरबंद रखा और करीब पन्द्रह लाख रूपयें की ठगी का प्रयास किया गया। नटवरलाल ने ठगी के लिए तरह-तरह के हत्थकंडे इस्तेमाल किए, लेकिन दम्पत्ति ने समझदारी दिखाते हुए ठगी होने से बचा ली। इस घटना का मुकदमा दर्ज करा दिया गया।

नई मंडी कोतवाली क्षेत्र के अन्तर्गत मौहल्ला अंकित विहार निवासी एक व्यक्ति ने पुलिस कार्यालय पहुंचकर एसएसपी के नाम एक शिकायती पत्र देते हुए बताया कि पिछले वर्ष अगस्त माह में उनका पर्स योगा एक्सप्रेस ट्रेन में गाजियाबाद जाते समय खो गया था। जिसमें आधारकार्ड, पैनकार्ड एवं करीब 21 हजार रुपये थे। इसकी शिकायत विजयनगर थाना में की थी।

16 जून 2025 को करीब 12 बजे दोपहर ट्राई के कर्मचारी दीपक गुप्ता की वीडियो कॉल आई। पीडित ने जानकारी दी कि उन्हें बताया गया कि उक्त व्यक्ति ने उनके नाम से कोई सिम कार्ड मुंबई के कुलावा में जारी हुआ है। जिसकी क्लीरियेंस के लिये क्राइम ब्रांच मुम्बई से राहुल यादव ने बात की। उसने बताया कि मुंबई में उनका व नरेश गोयल का खाता है। उनके खाते में 6.8 करोड का अवैध लेन देन हुआ है। कॉल करने वाले ने उन्हें डराकर घर जाने को कहा। घर पहुंचने पर करीब 2 बजे के बाद एक अन्य पुलिस वर्दीधारी व्यक्ति ने सीबीआई अधिकारी बनकर वीडियो कॉल की। इस समय पीडित की पत्नी भी वहां मौजूद थी। पीड़ित की बेटी उनसे मिलने पहुंची तो दंपती ने डर के कारण उसे वापस भेज दिया। कॉल करने वाले ने उन्हें सीबीआई के नाम पर सर्विलांस रुल्स तथा गिरफ्तारी वारंट व्हाटस अप पर भेजे। दंपती को कमरे में 24 घंटे डिजीटल अरेस्ट रखा गया। रात में सोने के दौरान भी वीडियो कॉल जारी रही। मोबाइल को चार्जर पर लगवाया दिया गया। अगले दिन सुबह सर्वोच्च न्यायालय का एकाउंट फ्रीज करने तथा संपत्ति एटेच करने का नोटिस भेजा गया। उनसे पहले दस लाख व फिर पांच लाख रुपये एसआइएस एकाउंट में आरटीजीएस करने को कहा गया। उन्हें स्थानीय पुलिस से गिरफ्तार कराने व तीन माह की जेल होने की भी धमकी दी। काफी कहने सुनने पर अगले दिन दोपहर में पीडित दपंती को एक घंटे की मोहलत दी गई। एक घंटे बाद उन्हें फिर से अरेस्ट कराने को कहा गया। पीडित दंपती ने थाने जाने को भी कहा। बताया गया कि पीडित दंपती इतना डर चुका था कि पैसो के लिए उन्होंने अपनी पासबुक आदि भी निकाल ली थी। पीडित ने कहा कि इसके बाद भी उन्होंने हौंसला नही खोया। उन्होंने व्हाटस एप पर भेजे वारंट के बारे में जानकारी जुटाने के बाद ही पैसा भेजने की बात कही थी। कॉल बंद होने पर वह ठगी से बच गए। मानसिक उत्पीडन के कारण अधिवक्ता की पत्नी की हालत सही नही है। आरोप है कि इस घटना में स्थानीय व्यक्ति भी शामिल है। नई मंडी पुलिस ने कार्रवाई शुरू कर दी।

मुजफ्फरनगर: हेलीकॉप्टर से कांवड़ यात्रा के दौरान शिवभक्तों पर फूल बरसाते डीएम उमेश मिश्रा व एसएसपी संजय कुमार।

मुजफ्फरनगर: मेरठ रोड मीनाक्षी चौक पर मस्जिद के मैन गेट के बाहर विश्राम करते शिवभक्तों की सुविधा के लिए मस्जिद के गेट को पर्दे से ढका गया।

कांवड़ के दौरान नशीले पदार्थ के साथ तीन दबोचे

मुजफ्फरनगर। सिविल लाइन पुलिस ने तीन संदिग्ध युवकों को गिरफ्तार किया। पुलिस का कहना है कि पकडे गए आरोपी कावंड यात्रा के दौरान नशीले पदार्थ की बिक्री कर रहे थे और उनके कब्जे से गंजा, चरस व हजारों की नगदी बरामद की है। सिविल लाइन थाना प्रभारी आशुतोष का कहना है कि दरोगा रेशमपाल सिंह ने वैभव शर्मा उर्फ तनू पुत्र रोशन, गुलशन उर्फ ट्िडडा पुत्र जगदीश व कृष्ण कुमार उर्फ ठोड्डी पुत्र रामस्वरूप निवासीगण शिवपुरी नई मंडी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने लिखापढ़ी के बाद आरोपी को जेल भेज दिया है।

डीएम व एसएसपी ने भी बरसाए फूल

मुजफ्फरनगर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ प्रशासनिक अमला भी शिवभक्तों की सेवा में लगा है। रविवार को डीएम उमेश मिश्रा व एसएसपी संजय कुमार ने भी हेलीकॉप्टर से जिले से गुजरने वाले शिव भक्तों पर पुष्प वर्षा की।

कचहरी में तैनात होमगार्ड की कराई गई डॉक्टरी

ड्यूटी के दौरान शराब पीने का आरोप

शाह टाइम्स संवाददाता

मुजफ्फरनगर। कलेक्ट्रेट में ड्यूटी के दौरान शराब के नशे में पाए गए एक होमगार्ड को सिविल लाइन थाने की पुलिस ने लिखापढ़ी के बाद उस पर कानूनी कार्यवाही की है, जबकि होमगार्ड का दूसरा साथी फरार हो गया। आरोप है कि दोनो होमगार्डो को डीएम कार्यालय के पास ड्यूटी पर लगाया गया था, लेकिन उन्होने ड्यूटी के दौरान ही शराब का सेवन कर लिया। ऐसा पुलिस का आरोप है पुलिस ने एक होमगार्ड का डॉक्टरी मुआयना भी कराया है।

सिविल लाइन पुलिस ने होमगार्ड मीरध्वज पुत्र अचपल निवासी ग्राम भिक्की थाना सिखेडा की जिला अस्पताल में डॉक्टरी मुआयना कराया है। पुलिस का आरोप है कि होमगार्ड मीरध्वज व होमगार्ड मनोज शर्मा निवासी लकडसंधा की ड्यूटी एक जुलाई से कलेक्ट्रेट में लगी हुई है। इस समय कांवड का मेला चल रहा है सभी अधिकारी भोलों की सेवा में लगे हुए है। पुलिस मीरध्वज को डॉक्टरी परिक्षण कराने के लिए जिला अस्पताल ले गई, जबकि होमगार्ड मनोज शर्मा को फरार होना बताया जा रहा है। पुलिस का आरोप है कि ड्यूटी के दौरान इन दोनो ने शराब का सेवन किया है और उन पर कानूनी कार्यवाही की है।

कांवड़ियों की सुविधा के लिए मस्जिदों के गेट ढके, पीछे का रास्ता खोला

मुजफ्फरनगर। कांवड यात्रा के दौरान साम्प्रदायिक सौहार्द की मिसाल पैश करते हुए मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र मेरठ रोड पर पडने वाली मस्जिद कटरा अंसारियान के मैन गेट को पर्दे से ढ़क दिया गया और पीछे के गेट से आना-जाने का रास्ता खुला रखा गया। साथ ही शामली रोड स्थित मस्जिद के मुख्य द्वार पर ताला लगाकर पीछे का रास्ता नमाजियों के लिए खोला गया है। ऐसा कावंड यात्रा में शिवभक्तों की बढ़ती संख्या को देखते हुए किया गया है। मस्जिद के बाहर सड़क पर काफी संख्या में शिवभक्तों के साथ-साथ श्रद्धालुओं का आवागमन चल रहा है। उनकी सुविधा को देखते हुए यह कदम उठाया गया है नमाजियों के लिए पीछे का गेट खोला गया है ताकि कावंडियों को कोई असुविधा न हो और न ही नमाजियों को आने-जाने की दिक्कत हो। इससे पूर्व मीनाक्षी चौक का नॉनवेज हब पूरी तरह से बंद चल रहा है। मुस्लिम समाज के लोगों ने भाईचारे की पहल करते हुए अपने आप ही मीनाक्षी चौक पर मीट, मांस व मच्छली की दुकाने भी बंद कर दी थी।

शिवा ग्रुप ऑफ कॉलेज
COURSE OFFERED
D. PHARMA (डी. फार्मा)
C.C.-1491
POLYTECHNIC
(ELECTRICAL, CIVIL, MECHANICAL, FASHION DESIGNING)
(डिप्लोमा) C.C.-1183
ITI (आई0टी0आई) C.C.-3978
(ELECTRICIAN, FITTER, COPA, FASHION DESIGING)
इण्टर कॉलेज (PCM, PCB, COMM., ART)
C.C. 1339
पता:- NEAR NH-58, जौली रोड, बिलासपुर, मुजफ्फरनगर
Ph. 9690731170, 9411449915, 9927075234, 8077158717

दो युवकों पर युवती का जबरन अपहरण करने का आरोप लगाया

पीड़ित परिजनों ने युवती को बरामद करने की गुहार लगाई

शाहटाइम्स संवाददाता

खतौली। नगर के एक मोहल्ले निवासी व्यक्ति ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि उसकी बहन अपने भाई से मिलने उसके घर जा रही थी, इस दौरान रास्ते से अचानक लापता हो गई है, जिसे परिजनों ने काफी तलाश किया, मगर परिजनों को युवती का सुराग नही लगा है, परिजनों को पता चला की युवती का दो युवक कार में जबरन डालकर अपहरण कर ले गए है। जिसके बाद पीड़ित परि. जनों ने दो युवकों पर युवती का जबरन अपहरण करने का आरोप लगाकर पुलिस को तहरीर दी है, पुलिस ने पीड़ित परिजनों से तहरीर लेकर मामले में रिपोर्ट दर्ज कर युवती की तलाश शुरू कर दी है, वही युवती का अपहरण होने से उसके परिजनों में हड़कंप मचा हुआ है।नगर के मोहल्ला इस्लामनगर निवासी फिरोज पुत्र शाहनवाज ने कोतवाली पहुचकर पुलिस को बताया की 5 दिन पूर्व 15 जुलाई को उसकी 20 वर्षीय बहन मोहल्ले में ही अपने भाई प्रवेज के घर किसी कार्य से जा रही थी। इस दौरान उसकी बहन रास्ते में ही संगदिग्द परिस्थितियों में लापता हो गयी थी। और भाई के घर नहीं पहुंची, इसके बाद परि. जनों ने युवती की मोहल्ले और रिश्तेदारों में काफी तलाश की मगर लापता युवती का कही सुराग नही मिला, पीड़ित फिरोज ने पुलिस को बताया की उसकी बहन का मोबा. इल भी बंद है, पीड़ित युवक ने पुलिस को बताया की बाद उन्हें पता चला की उसकी बहन का दो युवक कार में डालकर अपहरण कर ले गए है। जिसके बाद पीड़ित फिरोज ने मोहल्ले का एक युवक और मेरठ निवासी उसके साथी युवक पर आरोप लगाकर उसकी बहन का बहला फुसलाकर जबरन कार में डालकर अपहरण करने का आरोप लगाया है, पीड़ित युवक ने आरोपी युवकों के खिलाफ पुलिस को नामजद तहरीर देकर अपनी बहन को सकुशल बरामद करने की गुहार लगाई है, पुलिस ने पीड़ित युवक से तहरीर लेकर दोनो युवकों के खिलाफ घटना की रिपोर्ट दर्ज कर ली है। और लापता युवती की तलाश शुरू कर दी है, वही युवती का अपहरण होने से उसके परिजनों में कोहराम मचा हुआ है, इंस्पेक्टर बृजेश कुमार शर्मा ने बताया युवक ने अपनी बहन के अपहरण होने की तहरीर दी है, पुलिस ने पीड़ित युवक से तहरीर लेकर युवती की तलाश शुरू कर दी है।

सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव की तस्वीर भेंट की

शाह टाइम्स संवाददाता

बुढ़ाना। समाजवादी पार्टी छात्र सभा के प्रदेश अध्यक्ष विनीत कुशवाहा को भी बुढ़ाना आने का न्यौता दिया गया है।

यह न्यौता समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता और आगामी 10 अगस्त को बुढ़ाना कस्बे के फैज गार्डन में होने जा रही विशाल पीडीए पंचायत के आयोजक सत्येंद्र पाल ने अपने कुछ चुनिंदा साथियों के साथ समीपवर्ती जनपद शामली में पहुंचकर दिया है। उन्होंने शामली में आयोजित पीडीए पंचायत में भी शिरकत की और खुले मंच से सभी को 10 अगस्त को बुढ़ाना पहुंचने का न्यौता दिया।

सत्येंद्र पाल ने समाजवादी पार्टी छात्र सभा के प्रदेश अध्यक्ष विनीत कुशवाहा को सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव की तस्वीर भी भेंट की और कहा कि अगर वे बुढ़ाना में होने वाली विशाल पीडीए पंचायत में शामिल हो तो बहुत ही अच्छा होगा। जिस पर सपा छात्र सभा के प्रदेश अध्यक्ष विनित कुशवाहा ने सपा नेता सत्येंद्र पाल को बुढ़ाना कस्बे मे आने का आश्वासन देते हुए कहा कि वे अपनी तैयारियों को जारी रखें। इस अवसर पर मुख्य रूप से समाजवादी पार्टी बुढाना विधानसभा क्षेत्र के अध्यक्ष अकरम खान, समाजवादी पार्टी के जिला सचिव अनेश निर्वाल, साहिब अंसारी, रविन्द्र पाल, सचिन कुमार, डाक्टर इनाम और रविन्द्र प्रधान सहित कई प्रमुख साथी साथ रहे।

जंगली चोरों का आतंक जारी, चार टयूबवैलों को बनाया निशाना

मोरना। ककरोली क्षेत्र में जंगली चोरो का आतंक जारी है। किसानों की टड्बवेल पर लगातार चोरी की घटनाएं हो रही है। ढासरी के जंगल मे चोरो ने चार ट्यूबवैलों पर चोरी की घटना को अंजाम दिया है। क्षेत्र मे लगातार हो रही ट्यूबवेलों पर चोरी की घटना से किसानों में रोष व्याप्त है।ककरोली थाना क्षेत्र के गांव ढासरी निवासी किसान जान मोहम्मद, श्रीचंद, विजेन्द्र, बिजोरा जब सुबह खेतो पर गये तो ट्यूबवैल के कमरे की दीवार को टूटी देख सन्न रह गये। चोरो ने ट्यूबवेल के स्टार्टर, कट आउट केबिल मोटर को तोडकर उसमें से तांबे का तार चोरी कर लिया।तथा कमरे मे रखा अन्य किमती सामान गायब मिला। किसानों ने सामान को इधर उधर तलाश किया तो मोटर के खाली क्वाइल व अन्य सामान खेतो मे पडा मिला। पीडित किसानों ने पुलिस से घटनाओं के खुलासे की मांग की है। आए दिन क्षेत्र में ट्यूबवैलों पर हो रही चोरी की घटनाओं को लेकर किसानों में रोष व्याप्त है। मौके पर पहुंची पुलिस ने घटना की जानकारी की है।

एसपी देहात ने डायवर्जन प्लान कराया लागू

बुढाना। एसपी देहात आदित्य बंसल ने निकलने से पूर्व ही अर्ध रात्रि में बुढाना कोतवाली क्षेत्र में पहुंचकर डायवर्जन प्लान को लागू करवाते हुए आते जाते सभी कांवडध्यिों को राहत देने का काम किया। उन्होंने अपने अधीनस्थों को आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए शिव भक्त श्रद्धालुओं से कुशलता पूछी गयी और साथ ही श्रद्धालुओं के सुरक्षित आवागमन के लिए यातायात संचालन कराया गया। कांवडियों संग शालीनता से व्यवहार करने, उनकी हर सम्भव सहायता करने, डायवर्जन प्लान को कडाई से लागू कराते हुए ट्रैफिक व्यवस्था को दुरुस्त रखने, कांवड मार्ग पर नियमित रूप से पेट्रोलिंग करने, श्रद्धालुओं के सुरक्षित आवागमन को लेकर और यदि किसी श्रद्धालु की तबीयत खराब होती है तो इसका संज्ञान लेकर तुरंत मेडिकल मदद उपलब्ध कराने के आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए।

ग्रामीण को प्रधान बनाने को भोलों ने उठाया जल

शाह टाइम्स संवाददाता

बुढ़ाना। ब्लाक क्षेत्र के गांव हबीबपुर सीकरी के कुछ युवाओं ने गांव के ही एक ग्रामीण देवी लाल सैनी को प्रधान बनाने के लिए जल उठाया है।

मिली जानकारी के अनुसार गांव हबीबपुर के युवाओं ने भगवान भोलेनाथ से प्रार्थना करते हुए देव. ीलाल सैनी को प्रधान बनाने के लिए हरिद्वार हर की पौड़ी से पवित्र गंगा. जल लेकर अपनी यात्रा की शुरुआत की। गांव हबीबपुर के युवाओं का विकास कार्यो को लेकर इस बार पूरा समर्थन देवीलाल सैनी के साथ है। गांव के सर्व समाज के युवा चाहते हैं कि इस बार देवीलाल सैनी प्रधान बनें। इसी मनोकामना को पूरा करने के लिए उन्होंने हरिद्वार हर की पैड़ी

से पवित्र गंगाजल उठाकर अपनी यात्रा शुरू कर दी है। पवित्र गंगाजल लेकर आने वालों में मुख्य रूप से नितिन सैनी, राहुल सैनी, सूरज शर्मा, नक्श राजपूत, अंकित शर्मा, सुमित सैनी और मुकुल सैनी आदि युवा मौजूद रहे। प्रधान पद के उम्मीदवार देवीलाल सैनी को जब इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने कामना की और भगवान भोलेनाथ से प्रार्थना की कि उनकी यात्रा मंगलमय हो। दूसरी और इसको लेकर प्रधान पद के अन्य उम्मीदवारों में पूरी खलबली सी मच गयी है और वे अब प्रधान पद का चुनाव नहीं लडने की सोच रहे हैं।

वरिष्ठ अधिवक्ता सरदार जितेंद्र सिंह बने यूपी बार काउंसिल की अनुशासन समिति के को-ऑप्टेड सदस्य

खतौली के अधिवक्ता समाज में हर्ष की लहर, सहयोगियों ने दी बधाई

शाहटाइम्स संवाददाता

खतौली। तहसील बार एसोसिएशन खतौली के पूर्व अध्यक्ष और वरिष्ठ अधिवक्ता सरदार जितेंद्र सिंह को बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश की अनुशासन समिति में को-ऑप्टेड सदस्य नामित किया गया है।

यह नियुक्ति बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश के चेयरमैन शिवकिशोर गौड़ एवं बार काउंसिल ऑफ इंडिया के प्रति. निधि सदस्य द्वारा की गई है। इस महत्वपूर्ण नियुक्ति की खबर मिलते ही खतौली के अधिवक्ताओं में उत्साह की लहर दौड़ गई। अधिवक्ता समाज ने सरदार जितेंद्र सिंह को फूल मालाओं से स्वागत कर हार्दिक बधाई दी।

क्या होता है को-ऑप्टेड सदस्य?

को-ऑप्टेड सदस्य (हिंदी मेंरू सहयोजित सदस्य) वह व्यक्ति होता है जिसे किसी समिति या संगठन के मौजूदा सदस्यों द्वारा विशेष योग्यता या अनुभव के आधार पर नियुक्त किया जाता है। इसका चयन आम चुनाव प्रक्रिया के बजाय समिति की आंतरिक सहमति से किया जाता है।

को-ऑप्टेड सदस्य के पास अधिकांश मामलों में समिति के अन्य सदस्यों के समान अधिकार होते हैं। वे बैठकों में भाग लेकर नीतिगत चर्चाओं में योगदान देते हैं तथा समिति के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहयोग करते हैं।

अधिवक्ताओं ने जताया हर्ष

खतौली बार एसोसिएशन से जुड़े कई वरिष्ठ व युवा अधिवक्ताओं ने श्री सिंह की नियुक्ति को खतौली के लिए गर्व का विषय बताया।

अधिवक्ताओं ने कहा कि यह नियुक्ति उनके दशकों के अनुभव और निष्पक्ष न्याय दृष्टिकोण का सम्मान है।

अधिवक्ता समाज को विश्वास है कि सरदार जितेंद्र सिंह अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करेंगे तथा अधिवक्ताओं की आवाज़ को उच्च स्तर पर मजबूती से उठाएंगे।

खेड़ा चोगावा में सिंचाई बाधित करने की कोशिश

खतौली। तहसील क्षेत्र के गांव खेड़ा चोगावा में सिंचाई के पानी को लेकर विवाद गहराता जा रहा है। ग्रामीण सरदार सिंह ने ग्राम प्रधान पर आरोप लगाया है कि वह जानबूझकर नाली की दिशा बदलकर खेतों की सिंचाई में बाधा उत्पन्न करना चाहता है। सरदार सिंह का कहना है कि उनके पास सिंचाई के लिए कोई अन्य साधन नहीं है और वह बीते 50 वर्षों से नाली के माध्यम से उत्तर से दक्षिण की दिशा में बहते पानी का उपयोग अपने खेतों की सिंचाई के लिए करते आ रहे हैं। उनका दावा है कि यह पानी उनके खेत तक सुचारू रूप से पहुंचता है और इससे किसी को कोई परेशानी नहीं होती।उन्होंने कहा कि यह पारंपरिक प्रवाह गांव की सड़क को नुकसान नहीं पहुंचाता और परिवार के अन्य सदस्यों को भी इससे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन ग्राम प्रधान अब इस पारंपरिक जलप्रवाह को जबरन दक्षिण से उत्तर दिशा में मोड़ना चाहता है। इसके लिए वह सड़क तोड़कर नई नाली का निर्माण करा रहा है, जो सरासर गलत है। पीड़ित सरदार सिंह ने इस पूरे मामले को लेकर शनिवार को आयोजित तहसील समाधान दिवस में जिलाधिकारी उमेश कुमार मिश्रा को शिकायती पत्र सौंपा। उन्होंने जिलाधिकारी से मामले की गंभीरता को समझते हुए अविलंब कार्रवाई करने की मांग की है, ताकि खेत की सिंचाई प्रभावित न हो।

बाइक फिसलने से दो कांवड़िए घायल

जानसठ। पानीपत खटीमा राजमार्ग टोल टैक्स के पास बाइक फिसलने से दो कावड़िए गंभीर रूप से घायल हो गए सूचना पर एंबुलेंस के द्वारा उनको सीएचसी जानसठ पहुंचाया गया जहां से एक कावड़िए की गंभीर हालत को देखते हुए जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। जानकारी के अनुसार शिवभक्त गाजियाबाद से अपने साथियों के साथ मोटरसाइकिल से गंगा जल लेने के लिए हरिद्वार जा रहे थे, अचानक से मोटरसाइकिल का संतुलन बिगड़ने के कारण मोटरसाइकिल स्लिप हो गई। तो वही स्लिप होने से विपिन व मनोज शिव भक्त निवासी तलहेटा थाना भोजपुरी जिला गाजियाबाद गंभीर रूप से घायल हो गए। राहागीरो ने हाईवे 709 की एंबुलेंस टोल फी नंबर पर सूचना दी तभी एम्बुलेंस दोनों घायलों को सीएचसी जानसठ लेकर आई। डॉक्टर ने उपचार हेतु मनोज की गंभीर हालत देखते हुए जिला अस्पताल रैपर कर दिया।

विशाल डीजे कांवड़ को नगर में प्रवेश से रोकने को आरएएफ तैनात

शाहटाइम्स सवांददाता

खतौली। श्रावण मास की पावन कांवड़ यात्रा अब अपने अंतिम चरण में पहुंच गई है। जैसे-जैसे शिवभक्तों की भीड़ खतौली और आसपास के क्षेत्रों में बढ़ रही है, वैसे-वैसे प्रशासन की सक्रियता भी चरम पर है। इस बार शासन के स्पष्ट निर्देशों के अनुपालन में खतौली नगर में 12 फुट से ऊंची विशाल डीजे कांवड़ को भैसी कट से नगर के अंदर प्रवेश से पूरी तरह रो. कने के लिए विशेष सुरक्षा व्यवस्था की गई है। नगर में कानून व्यवस्था बनाए रखने और किसी भी स्थिति से निपटने के लिए अब आरएएफ द्धरैपिड एक्शन फोर्सञ्च के जवानों को भी तैनात कर दिया गया है। खतौली पुलिस के साथ मिलकर आरएएफ के जवान स्थिति पर नजर बनाए हुए हैं।

शासन के निर्देश पर कसा शिकंजा

इस वर्ष उत्तराखंड सरकार के निर्देशों के बाद उत्तर प्रदेश शासन ने भी कांवड़ यात्रा को लेकर नए दिशा-निर्देश जारी किए हैं। इसके अंतर्गत 12 फुट से अधिक ऊंची कांवड़ पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया है। विशेषकर डीजे युक्त विशालकाय कांवड़, जो सड़कों और बाजारों में अवरोध उत्पन्न कर सकती हैं, उन्हें नगर की सीमा में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जा रही।

पुलिस कर रही है माप-तौल

खतौली पुलिस की ओर से हाईवे पर ही कांवड़ की ऊंचाई मापी जा रही है। यदि कांवड़ निर्धारित मानक से ऊंची पाई जाती है, तो उसे नगर से होकर गुजरने की अनुमति नहीं दी जाती। ऐसे शिवभक्तों को नेशनल हाईवे से ही यात्रा करने को कहा जा रहा है।

नगर में बनाई गई विशेष बैरिकेडिंग

नगर के प्रमुख प्रवेश मार्गों जैसे भैसी कट पर विशेष बैरिकेडिंग लगाई गई है। यहां पर पुलिस और आरएएफ के जवानों की संयुक्त टीमों को तैनात किया गया है जो लगातार कांवड़ियों की निगरानी कर रही हैं।

अफसरों ने किया भ्रमण

रविवार को सीओ खतौली रामआशीष यादव, कोतवाली प्रभारी ब्रजेश कुमार शर्मा, एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने नगर क्षेत्र का निरीक्षण कर कांवड़ मार्गों का जायजा लिया। उन्होंने जवानों को सतर्क रहने और

किसी भी विवाद की स्थिति में तुरंत कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

शिवभक्तों से की जा रही अपील

प्रशासन द्वारा शिवभक्तों से अपील की जा रही है कि वे शासन की गाइडलाइंस का पालन करें और 12 फुट से ऊंची डीजे कांवड़ लेकर नगर में प्रवेश करने का प्रयास न करें। साथ ही उन्हें वैकल्पिक मार्ग से यात्रा पूरी करने की सलाह दी जा रही है ताकि शांति और श्रद्धा दोनों बनी रहे।

दो बच्चों के साथ नहर में कूदकर आत्महत्या कर रही महिला को रोका

तेवड़ा निवासी महिला की खालापार में हुई है शादी

शाह टाइम्स संवाददाता

भोपा। पति की प्रताड़ना से तंग आकर जौली नहर पुल से दो बच्चों संग नहर मे छलांग लगाकर आत्म हत्या करने जा रही महिला को एक युवक तत्परता दिखाते रोक लिया। जिसके बाद पुलिस द्वारा महिला को समझाया गया तथा परिजनों को सूचना दी गयी।

भोपा थाना क्षेत्र के गांव जौली मे रविवार को पुलिस चौकी के सामने स्थित नहर पर एक महिला बदहवास हालत मे दो बच्चों को लेकर पुल की ओर तेजी से जा रही थी की अचानक काँवड सेवा शिविर मे शिव भोलो की सेवा कर सलमान की नजर उस पर पड़ी। तभी सलमान ने दौड़कर महिला को ऐन वक्त पर नहर मे छलांग लगाने से रोक लिया। महिला द्वारा दो बच्चों संग आत्म हत्या के प्रयास से हड़कंप मच गया।

पुलिस ने महिला को समझा बुझा कर महिला को शांत किया व परिजनों को सूचना दी। महिला ने बताया की वह ककरौली थाना क्षेत्र के गांव तेवडा की निवासी है।पांच वर्ष पूर्व उसकी शादी मुजफ्फरनगर के खालापार क्षेत्र के किदवई नगर निवासी युवक से हुई थी। उसके चार वर्षीय पुत्री मुस्कान व 18 माह का पुत्र सुफियान है। पति आएदिन उसे प्रताड़ित करता रहता।पति उसे मायका मे छोड़ने आया था।उसका भाई विदेश से लौटा है। मायका मे मेहमान आये हुए थे पति ने सबके सामने उसे पुनरूप्रताडित करने हुए कहीं जाकर मर जाने को कहा।यह कहकर पति उसे मायका मे ही छोड़कर चला गया। पति द्वारा आएदिन अपमान करने व प्रताड़ना से परेशान होकर वह आत्म हत्या जैसा कदम उठाना चाहती थी। पुलिस ने परिजनों को सूचना देकर घटना से अवगत कराया।

पूर्व प्रधानाचार्य के निधन से शिक्षा जगत में छाया शोक

भोपा। जनता इंटर कॉलेज भोपा के पूर्व प्रधानाचार्य महावीर सिंह राठी का लम्बी बीमारी के बाद रविवार की सुबह देहान्त हो गया। पूर्व प्रधानाचार्य के देहान्त से शिक्षा जगत में शोक की लहर दौड गई है। उनके निधन पर शिक्षकों, समाजसेवियों व गणमान्यों ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

भोपा स्थित जनता इंटर कॉलिज के 27 वर्षो तक प्रधानाचार्य रहे महावीर सिंह राठी का लम्बी बीमारी के चलते रविवार की सुबह 95 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके आकस्मिक निधन से शैक्षिक जगत एवं समाज अपूरणीय क्षति हुई है। वह बहुत ही मृदुभाषी, आदर्श व दूरदर्शी व्यक्तित्व, कुशल प्रशासक, मिलनसार और शैक्षिक जगत के आधार स्तम्भ रहे। उन्होंने विद्यालय के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जीवनपर्यन्त

शैक्षिक एवं सामाजिक उत्थान के कार्य किए। इस दौरान वह अनेक सामाजिक संगठनों एवं शैक्षिक संस्थाओं से जुड़े रहे। उनके निधन पर शिक्षकों, समा. जसेवियों व गणमान्यों ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

फर्जी डाक्टरों के विरुद्ध विभीषण होने देंगे कार्रवाई!

मोटी रकम देने वालों के विरुद्ध नहीं उठाया कदम

शाह टाइम्स संवाददाता

बुढ़ाना। खबर यह है कि जिला चिकित्सा विभाग कांवड़ यात्रा सम्पन्न होने के बाद कभी भी झोलाछाप चिकित्सकों के खिलाफ बड़ी कार्यवाही कर सकता है। यह खबर कितनी सच है यह तो बाद में ही पता लगेगा लेकिन इससे इतर क्या स्थानीय स्वास्थ्य विभाग में मौजूद कुछ विभीषणों के कारण जिला स्वास्थ्य विभाग बड़े फर्जी हस्पतालों के विरुद्ध कार्यवाही कर पाएगा ये सवाल मुंह बाएं खड़ा है। स्थानीय सीएचसी में तैनात कुछ भ्रष्ट स्वास्थ्यकर्मियों ने अपने ऐब छुपाने के उद्देश्य से रिटायर हो चुके कई स्वास्थ्य कर्मचारियों को भी साथ लेकर बीते दिनों एसडीएम बुढ़ाना को उन लोगों के विरुद्ध एक प्रार्थना पत्र दिया था जो उनके खिलाफ सही बात लिखते हैं। क्या इन लोगों के द्वारा सच लिखने वाले को डराने का प्रयास नहीं किया जा रहा तो फिर झोलाछाप पर कार्यवाही कैसे हो जाएगी जब ये मठाधीश स्वास्थयकर्मी इस तरह का दबाव इमानदार अधिकारियों पर डालेंगे और कहां वे लोग सच लिखने का प्रयास जुटा पाएंगे जो इनकी करतूतों को समय समय पर उजागर करते रहते हैं। खैर आज सोशल मीडिया पर जो एक पोस्ट वायरल हो रही है क्या सचमुच झोलाछाप चिकित्सकों के विरूद्ध कार्यवाही होगी या फिर पहले की तरह खानापूर्ति ही होगी। स्वास्थ्य विभाग छोटे नर्सिंग होमों को निशाना बनाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेता है लेकिन हस्पतालों के विरुद्ध कार्यवाही करने में हिचकता है। अगर देखा जाए तो बुढ़ाना कस्बे और क्षेत्र में काफी हस्पताल फर्जी तरीके से स्वास्थ्य विभाग में जमे कुछ विभीषणों के कारण बड़े भी धड़ल्ले से चल रहे हैं। चर्चा है कि इस बार इन फर्जी हस्पतालों की एक लिस्ट सीएमओ को भेजी गयी है। इस लिस्ट में लिस्ट भेजने वालों ने किस हस्पताल को बचाया है किस को नहीं ये तो भविष्य के गर्भ में है लेकिन इतना जरुर है कि अगर सीएमओ गुपचुप तरीके से छापामार कार्यवाही करें तो क्षेत्र में कई दर्जन हस्पताल सीज होंगे यह तय है। इन फर्जी हस्पतालों को कौन संरक्षण दे रहा है अगर इसकी भी जांच सही तरह से हो जाए तो कस्बे के लोग आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रहेंगे क्योंकि इनको कुछ सत्ताधारियों का खुला संरक्षण प्राप्त है और यह चर्चा कस्बे और क्षेत्र में जोरों शोरों पर है। इस संबंध में जब बुढाना सीएचसी के प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डाक्टर अर्जुन सिंह से बात करनी चाही तो उनसे संपर्क नहीं हो सका।

गन्ने के खेत में खींचकर महिला के साथ दुष्कर्म का प्रयास

आरोपी को गिरफ्तार कर पुलिस से सिखाया सबक

भोपा। सुनसान जंगल मे दूसरे सम्प्रदाय की महिला को अकेला पाकर शैतान युवक ने चारा ले जा रही महिला को गन्ने के खेत मे खींच लिया।जहां आरोपी ने अपने से दोगुने से अधिक आयु की महिला के साथ दुष्कर्म का प्रयास किया। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी को हिरासत मे लिया है तथा आरोपी को सबक सिखाने की वीडियो को वायरल कर कड़ी कार्रवाई का संदेश दिया है।

भोपा थाना क्षेत्र के गांव निवासी अधेड महिला ने परिजनों संग थाने आकर बताया की रविवार की सुबह वह निकटवर्ती गांव के जंगल से पशुओं के लिए चारा लेकर लौट रही थी। तभी एक स्कूटी सवार युवक वहां आया और स्कूटी को खड़ी कर उसने महिला के मुँह को बंद कर ज़बरदस्ती गन्ने के खेत मे खीच लिया जहां आरोपी ने उसके साथ दुष्कर्म का प्रयास किया।

शोर मचाने पर वहां से गुज़र रहे युवक को नजदीक आता देख आरा. ेपी फरार हो गया।तभी वहां गुज़र रही डायल 112 पुलिस को घटना की जानकारी दी गयी।मामला दो सम्प्रदाय से जुडा होने के कारण पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए आरा. ेपी साकिब निवासी नंगला बुजुर्ग को गिरफ्तार कर लिया।थाना प्रभारी निरीक्षक ओम प्रकाश सिंह ने बताया की महिला के साथ छेड़छाड़ करने वाले आरोपी साकिब पुत्र महरबान निवासी गांव नंगला बुजुर्ग के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया जायेगा। अग्रिम कार्रवाई की जा रही है। वहीं आरोपी को कानून का पाठ पढ़ाने का एक वीडियो भी पुलिस द्वारा वायरल कर शान्ति भंग करने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई का संदेश दिया गया है।

यूपी पुलिस महिला कबड्डी टीम की कप्तान सोनिका का भव्य स्वागत

शाहटाइम्स संवाददाता

खतौली। यूपी पुलिस महिला कबड्डी टीम की कप्तान सोनिया के खतौली आगमन पर नगरवासियों और पुलिस विभाग ने उनका भव्य स्वागत किया। कांवडघ्लाइन पर पहुंचने पर कोतवाल ब्रजेश कुमार शर्मा सहित अन्य पुलिस अधिकारियों और स्थानीय लोगों ने फूलमालाओं से स्वागत कर सोनिया का सम्मान किया। टीम कप्तान सोनिया ने इस मौके पर युवतियों को जीवन में लक्ष्य तय कर आगे बढने की प्रेरणा दी।

2010 में छत्तीसगढ से की थी खेल यात्रा की शुरुआत

सोनिया ने अपनी खेल यात्रा वर्ष 2010 में छत्तीसगढ में खेले गए पहले मैच से शुरू की थी। उन्होंने बताया कि शुरुआत में संसाधनों की कमी और सामाजिक चुनौतियों के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी और कडी मेहनत से खुद को साबित किया। आज वे यूपी पुलिस महिला कबड्डी टीम की कप्तान के रूप में कार्यरत हैं।

सोशल मीडिया को बताया युवतियों के भविष्य के लिए खतरा

इस अवसर पर सोनिया ने कहा कि वर्तमान समय में अधिकांश युवतियां सोशल मीडिया में अधिक समय व्यतीत कर रही हैं, जिससे उनका ध्यान पढाई और खेल जैसे जरूरी क्षेत्रों से हट रहा है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि सोशल मीडिया यदि सीमित और रचनात्मक ढंग से न इस्तेमाल किया जाए तो यह भविष्य को खराब कर सकता है।

खेल और शिक्षा से कर सकते हैं देश का नाम रोशन

सोनिया ने युवतियों से अपील करते हुए कहा, ष्अगर युवतियां सोशल मीडिया से दूरी बनाकर खेल और पढाई पर ध्यान केंद्रित करें, तो वे न सिर्फ अपना बल्कि अपने माता-पिता और देश का भी नाम रोशन कर सकती हैं। उन्होंने कहा कि आज के युग में महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढघ्रही हैं, फिर चाहे वह खेल हो, शिक्षा, विज्ञान या सुरक्षा बल।

टारगेट तय करें, मेहनत करें, सफलता पक्की है

सोनिया ने बताया कि सफलता का कोई शर्क्टकट नहीं होता। उन्होंने कहा कि यदि लडघकियां अपने जीवन में स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित कर उसके लिए मेहनत करती हैं, तो कोई भी उन्हें सफल होने से नहीं रोक सकता। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि उन्होंने भी कई बार हार का सामना किया, लेकिन हार को सीख बनाकर आगे बढीं।

महिलाओं की प्रतिभा हर क्षेत्र में चमक रही

कप्तान सोनिया ने कहा कि

आज महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। ओलंपिक से लेकर सेना, प्रशासन और पुलिस तक हर जगह महिलाएं अपनी काबिलियत का लोहा मनवा रही हैं। उन्होंने युवतियों से अपील की कि वे आत्मविश्वास से भरपूर होकर अपने सपनों को साकार करें। **नगरवासियों ने जताया गर्व**

सोनिया के आगमन पर खतौलीवासियों में गर्व की भावना देखने को मिली। स्थानीय युवतियों ने कहा कि सोनिया उनके लिए एक प्रेरणा हैं और वे भी उनके बताए मार्ग पर चलने की कोशिश करेंगी। कोतवाल ब्रजेश कुमार शर्मा ने सो. निका की सराहना करते हुए कहा कि ऐसी बेटियां समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत होती हैं।

पैतृक जमीन पर भूमाफियाओं की नजर

चाचा पर लगाया जमीन कब्जाने और कोर्ट आदेश की अवहेलना का आरोप

युवक ने मुख्यमंत्री को भेजा शिकायती पत्र

शाह टाइम्स संवाददाता

खतौली। सराफान मोहल्ला निवासी एक युवक ने अपनी पैतृक जमीन को भूमाफियाओं से मुक्त कराने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को शिकायती पत्र भेजकर न्याय की गुहार लगाई है। युवक का आरोप है कि उसके चाचा और उनके परिजन उसकी जमीन पर जबरन कब्जा करने की कोशिश कर रहे हैं। जबकि मामला न्यायालय में विचाराधीन है। पीडघ्ति ने प्रशासन से हस्तक्षेप की मांग करते हुए अपनी जमीन को सुरक्षित कराने की मांग की है।

कोर्ट में विचाराधीन है मामला, फिर भी उखाड़ फेंका आदेश का बोर्ड

शिकायतकर्ता शहजाद पुत्र शाहिद निवासी सराफान मोहल्ला, खतौली ने बताया कि उसकी पैतृक जमीन पर पहले से विवाद चल रहा है जो न्यायालय में विचाराधीन है। कोर्ट ने विवादित जमीन पर यथास्थिति बनाए रखने का आदेश दिया हुआ है। लेकिन इसके बावजूद आरोप है कि उसके चाचा और उनके परिजनों ने न्यायालय के आदेश का बोर्ड तक उखाड़ फेंका और भूमाफियाओं के साथ मिलकर प्रक्र्मर्टी डीलरों को जमीन बेचने का प्रयास कर रहे हैं।

प्रशासन और कोर्ट का भी नहीं डर, खुला खेल रहे भूमाफिया

पीडित का कहना है कि भूमाफिया इतने बेखौफ हो चुके हैं कि उन्हें अब प्रशासन और न्यायालय का भी कोई डर नहीं रह गया है।

वह न केवल निजी बल्कि सरकारी जमीनों पर भी अवैध कब्जा कर रहे हैं। इससे आम जनता में भय और असुरक्षा का माहौल है।

मुख्यमंत्री से की न्याय दिलाने की मांग

शहजाद ने कहा कि उसने मुख्यमंत्री को पत्र भेजकर अपनी पूरी बात रखी है और इस उम्मीद में है कि सरकार और प्रशासन उसकी पुश्तैनी जमीन को भूमाफियाओं से मुक्त कराकर उसे न्याय दिलाएंगे। उसने मांग की है कि न्यायालय के आदेशों की अवहेलना करने वालों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए।

स्थानीय लोगों में आक्रोश, कार्रवाई की उठी मांग

मामले को लेकर स्थानीय लोगों में भी रोष व्याप्त है। लोगों का कहना है कि यदि न्यायालय के आदेशों की भी खुलेआम धज्जियां उडघ्ई जाएंगी तो आमजन को न्याय कैसे मिलेगा। लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषियों पर सख्त कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में कोई व्यक्ति न्याय व्यवस्था का मजघक न बना सके।

खरड कॉलेज को मिली कृषि वर्ग की मान्यता

शाह टाइम्स संवाददाता

बुढाना। ब्लाक क्षेत्र के गांव खरड में स्थित किसान इंटर कॉलेज को विगत दिवस कृषि वर्ग की मान्यता मिल गई है।

इस कालेज को कृषि वर्ग की मान्यता मिल जाने से गठवाला खाप क्षेत्र में खुशी का जबरदस्त माहौल बना हुआ है।

इस कॉलेज के प्रबंधक और प्रधानाचार्य कृषि वर्ग के विद्यार्थियों के लिए अलग से कक्ष और प्रयोगशाला के लिए सामान जुटाना आरंभ कर दिया है। इस कॉलेज के प्रबंधक नरेंद्र मलिक ने मीडिया को रविवार को यह जानकारी देते हुए बताया कि उनके कॉलेज में अतिरिक्त कृषि वर्ग को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई है। कृषि वर्ग के क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए कालेज में अलग से कक्ष और प्रयोगशाला भी बनवाई गई है। विद्यार्थियों के लिए पुस्तकालय में कृषि वर्ग की पुस्तकें भी मंगवाई जाएंगी।

कक्ष और प्रयोगशाला के लिए फर्नीचर की व्यवस्था भी की जा रही है। प्रबंधक ने बताया कि कृषि वर्ग के विद्यार्थियों को भी अन्य वर्ग की भांति पढने की सभी सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाएंगी।

कॉलेज के प्रधानाचार्य शिव जतन सिंह ने बतलाया कि इस कालेज के लिए यह बहुत ही बडी उपलघ्ब्धि है। कॉलेज में प्रवेश के लिए विद्यार्थियों को जल्दी ही आवेदन पत्र वितरित कर दिए जाएंगे।

संक्षिप्त समाचार

मीरापुर में रामराज रोड़ पर कावड़ शिविर लगाया गया

मीरापुर/मुजफ्फरनगर। प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी कस्बे के रामराज रोड़ स्थित एक बैंकेट हॉल में कावड़ शिविर लगाया गया। जिसका उद्घाटन एसडीएम जानसठ जयेंद्र सिंह, सपा नेता विकाश शर्मा उर्फ़ विक्की नेताजी ने संयुक्त रूप से किया। इस दौरान एसडीएम जानसठ ने कहा कि कावड़ शिविर का आयोजन बहुत खास होता है यह मीरापुर के सद्भावना गंगा जमुना तहजीब का प्रतीक भी है। वरिष्ठ सपा नेता विकास शर्मा ने इस अवसर पर कांवड़ यात्रा को भारत की सनातन परंपरा की अद्भुत पहचान बताया। उन्होंने कहा कि यह केवल एक धार्मिक यात्रा नहीं, बल्कि भारत की आध्यात्मिक विरासत और सामाजिक एकता का प्रतीक है। प्रतिवर्ष लाखों, करोड़ों, श्रद्धालु उत्तर भारत के विभिन्न हिस्सों से गंगा जल लेने हरिद्वार पहुंचते हैं और अपने-अपने शिवालयों में जलाभिषेक करते हैं। यह यात्रा न केवल भक्ति और विश्वास की मिसाल है, बल्कि भाईचारे, अनुशासन और सेवा की भावना का भी परिचायक है। समाजसेवी अली जामिन ज़ैदी ने यहां कहां की इस प्रकार के आयोजनों से भाईचारे को बढ़ावा मिलता हैं। अली जामिन ज़ैदी ने कहा कि मीरापुर क्षेत्र की हमेशा यही पहचान रही है कि यहां के सर्व समाज के लोग आपस में एक दूसरे के त्यौहारों व सुख दुख में कांधे से कांधा मिलाकर खड़े रहते हैं। पूर्व चेयरमैन नवीन सैनी, पूर्व प्रधान राकेश चौहान, सत्यकाम, मनीष प्रजापति, संजय कुमार, विनोद वत्स, संदीप डागा एडवोकेट समेत बड़ी संख्या में धर्म प्रेमी मौजूद रहे।

तीन दिन का पॉवर मेगा कैंप आज से

मुजफ्फरनगर। पावर कारपोरेशन के द्वारा तीन दिन आयोजित हुए मेगा कैम्प की समय अविध को दो दिन के लिए ओर बढ़ा दिया गया है। मुजफ्फरनगर जोन में 21 और 22 जुलाई को भी पावर कारपोरेशन के द्वारा मेगा कैम्प का आयोजन किया जाएगा। जिसमें उपभोक्ता बिजली संबंधित सभी शिकायतों का निस्तारण करा सकते है। मुजफ्फरनगर जोन में तीन दिन मेगा कैम्प का आयोजन हुआ है। 17 जुलाई से शुरू होकर मेगा कैम्प 19 जुलाई तक चला है। अब पावर कारपोरेशन की एमडी ने इस कैम्प को दो दिन ओर चलाने के निर्देश दिए है। तीन दिन में पावर कारपोरेशन के अधिकारियों के मेगा कैम्प के माध्यम से काफी उपभोक्ताओं की शिकायतों का निस्तारण कराया है।इस दौरान करीब 1302 उपभोक्ताओं के द्वारा करीब 66.05 लाख का बिजली बिल जमा कराया गया है। वहीं मीटर से संबंधित 72 शिकायते आयी है। जिसमें से 51 का निस्तारण किया गया है। बिजली के बिल से संबंधित करीब 164 उपभोक्ताओं के द्वारा शिकायत की गई है। वहीं हेल्पलाइन नम्बर 1912 पर करीब 226 शिकायते प्राप्त हुई है। जिसमें से 162 का निस्तारण हो चुका है।

सपा नेता सत्येंद्र पाल ने भोलों को बांटे फल

बुढ़ाना। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता सत्येंद्र पाल ने अपनी मंडली के साथ आज रविवार के दिन बुढ़ाना विधानसभा क्षेत्र के कस्बा शाहपुर में पंजाब नेशनल बैंक के पास लगे कांवड़ सेवा शिविर में पहुंचकर अपने गंतव्य की और बढ़ रहे भोलों को नमन कर उनको रोककर ताजे फल बांटे और एक सुखद अनुभूति महसूस की। फल पाकर भोलों ने सपा नेता सत्येंद्र पाल के इस पुण्य कार्य की जमकर प्रशंसा की और उनको अपना आशीर्वाद प्रदान किया। भोलों का आशीर्वाद पाते ही सपा नेता सत्येंद्र पाल भी फूले नहीं समाए। उन्होंने फलों के साथ साथ सभी शिवभक्त कांवड़ियों को माता अहिल्याबाई होलकर की तस्वीर भी भेंट की और उनको पटका पहनाकर बारी बारी से सम्मानित भी किया। इस अवसर पर यहां मुख्य रूप से समाजवाली पार्टी मुजफ्फरनगर के जिला सचिव अनेश निर्वाल, सपा नेता रविन्द्र पाल, सपा नेता सचिन कुमार, सपा नेता साहिब अंसारी और सपा नेता पुष्पेंद्र कुमार गुड्डू आदि सपा कार्यकर्ताओं की मौजूदगी रही। उल्लेखनीय है कि समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता सत्येंद्र पाल रात दिन विभिन्न तरह से समाजसेवा करके बुढ़ाना विधानसभा के लोगों में अपनी अच्छी खासी पहचान बनाए हुए हैं। आगामी 10 अगस्त को वे बुढ़ाना कस्बे में होने वाली विशाल पीडीए पंचायत की तैयारियों में भी जी जान से लगे हुए हैं।

51 शक्ति पीठों के दर्शन जरूर करें: पं. जगमोहन

मुजफ्फरनगर। श्री श्यामा श्याम मंदिर में चल रही शिवपुराण कथा में पंडित जगमोहन भारद्वाज ने बताया कि दक्ष प्रजापति ने यज्ञ का आयोजन किया, जिसमें शिव और पुत्री सती को आमंत्रण नहीं दिया। सती पिता के यज्ञ में बिना निमंत्रण गई। वहां उन्होंने देखा दक्ष ने शिव का अपमान किया है। माता सती शिव निंदा नहीं सुन सकी और स्वयं तप की अग्नि में दाह कर लिया। जब शिव ने वहां पहुंच कर सती के शव को कंधे पर उठा ब्रह्मांड में विचरने लगे तो श्री हरि ने सुदर्शन से सती के शरीर के टुकड़े किए। वह टुकड़े जहां-जहां गिरे, वहां शक्तिपीठ बने।माता के 51 शक्तिपीठ बने हैं। कथा में शिव द्वारा जलंधर के वध, चंद्रचूड वध की कथा प्रसंग विस्तार से सुनाया। कथा में मोहित संगल, मोनिका संगल, हरीश गोयल, ललित अग्रवाल, अमरनाथ प्रजापति, चंद्रप्रकाश गर्ग, प्रदीप गर्ग का सहयोग रहा।

भारत केसरी आयुष खोखर का दतियाना में जोरदार स्वागत

मुजफ्फरनगर। गांव दत्तियाना में रविवार को स्वागत सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें मास्टर ओमवीर खोखर के पुत्र भारत केसरी पहलवान आयुष खोखर को भाकियू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत व जाट महासभा के जिलाध्यक्ष ब्रजवीर सिंह, सदर ब्लाक प्रमुख अमित, पवन राठी, संजीव खोखर, अनंगपाल राठी, उमादत्त शर्मा, सुधीर प्रधान ने ट्राफी व पगडी पहनाकर सम्मानित किया। मुख्य अतिथि राकेश टिकैत ने कहा कि सयुंक्त राज्य अमेरिका में आयोजित विश्व पुलिस चैम्पियनशिप में प्रतिभाग करते हुए गोल्ड मेडल जीतकर देश विदेश में दत्तियाना का नाम रोशन किया है। इससे पूर्व आयुष ने नेशनल पुलिस चैम्पियनशिप में गोल्ड मेडल जीता था।हमें उसकी उपलब्धियों पर गर्व है। युवाओं को भी उनसे प्रेरणा लेकर खेल प्रतियोगिता में बढजढ कर हिस्सा लेना चाहिए। युवा नशाखोरी से दूर रहकर अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करे। समाज की कुरीतियों को भी दूर करने का आह्वान किया। इस दौरान मंगेराम खलीफा, अर्जुन पहलवान, नकुल चौधरी, संस्थापक युधिष्ठिर पहलवान, मो. निका सिंह, धीराज, मनोज, पंकज, संजीव खोखर, पवन राठी, मनीष अहलावत, एड. दीपक चौधरी, अंकुर काकरान मौजूद रहे।

छात्रा बनकर अध्यापक को दे डाली हत्या की धमकी

शाह टाइम्स संवाददाता

मोरना। क्षेत्र के गांव में स्थित पब्लिक स्कूल के अध्यापक को सुनसान मार्ग पर उसकी हत्या करने की धमकी सोशल मीडिया के माध्यम से मिली है।जिसके बाद अध्यापक ने अपनी जान को खतरा जताया है। पीड़ित ने खुद को छात्र बताने वाले अज्ञात बदमाश के खिलाफ कार्रवाई की मांग पुलिस से की है।

मुजफ्फरनगर शहर के थाना नई मंडी क्षेत्र के गांधीनगर निवासी अरुण कुमार सिंह ने थाना ककरौली में तहरीर देकर बताया कि वह क्षेत्र के गांव कम्हेडघ में स्थित जेपी पब्लिक स्कूल में अध्यापक है। वह कार्य दिवस मे बाइक द्वारा मुजघ्फ्फरनगर से जौली गंगनहर पटरी मार्ग से गांव कम्हेडघ में स्कूल में आता है।

शनिवार दोपहर उसे सोशल मीडिया ऐप पर एक अनजान का मैसेज आया, जो खुद को जे पी पब्लिक स्कूल का कक्षा का छात्र बता रहा था। मैसेज में गंदी-गंदी गालियां देते हुए अध्यापक को जान से मारने की धमकी दी गई। अध्यापक अरुण कुमार ने आरोपी से पूछा कि मेरा गुनाह क्या है तो आरोपी ने कहा कि मेरा बोस बताएगा। मैं बहुत बडघ बदमाश हूं। यही नहीं कथित छात्र ने अध्यापक को सोशल ऐप पर वीडियो कक्ल्ल कर चाकू भी दिखाया तथा कहा कि तू जंगल के रास्ते से कम्हेडघ आता- जाता है।तेरी हत्या कर दी जायेगी। भयभीत अध्यापक ने अपनी जान को खतरा जताते हुए कार्रवाई की मांग पुलिस से की है।

पुलिस, प्रशासनिक अधिकारियों ने कांवडियों पर की पुष्प वर्षा

गंगनहर पुल पर प्रशासन की भक्ति देख शिवभक्त हुए भाव-विभोर

भोपा। जौली गंग नहर पुल पर लगाये गये विशेष सेवा शिविर का शुभारम्भ, एसपी देहात व उपजिलाधिकारी द्वारा फीता काटकर किया गया।

जहां अधिकारियो ने पुष्प वर्षा कर काँवड़ियों का स्वागत किया। शिविर मे हलवे व फलो का प्रसाद वितरण किया गया। व आत्मीयता से शिव भोलो की सेवा की गयी। भोपा क्षेत्र मे गंग नहर पटरी से काँवड़ियों का भारी संख्या मे गुजरना जारी है। कांवड यात्रा को सकुशल सम्पन्न कराने व शिवभोलो की सेवा के लिए प्रशासन जुटा हुआ है। रविवार को क्षेत्र के जौली नहर पुल पर विशेष शिविर का आयोजन किया गया जिसका शुभारम्भ अधिकारियो द्वारा फीता काटकर किया गया। शिविर मे पहुंचे पुलिस अधीक्षक देहात आदित्य बंसल, उपजिलाधिकारी जानसठ, जयेंन्द्र सिंह, तहसीलदार श्रद्धा गुप्ता, नायब तहसीलदार बृजेश कुमार, क्षेत्राधिकारी यतेंद्र नागर,थाना प्रभारी निरीक्षक ओम प्रकाश सिंह, उपनिरीक्षक राजदीप सिंह ग्राम प्रधान मौ. साजिद साजिद कुरैशी ने शिव भोलो पर पुष्प वर्षा कर हलवे व फलो का प्रसाद वितरण किया। साथ ही शिव भोलो को जलपान कराकर व विश्राम कराकर सेवा की गयी।

एसपी देहात व एसडीएम द्वारा शिव भोलो से कुशलक्षेम जाना गया व क्षेत्र मे आगमन पर उन्हें बधाई व शुभकामनायें देकर किसी भी सहायता के लिए प्रशासन से सम्पर्क करने का निवेदन किया। इस अवसर पर मुख्य रूप से एडवोकेट हसीन हैदर, हाजी दिलशाद, मौ. साकिब, सलमान, मौ. अनीस, बबलू चौधरी, रामपाल, गुलाम हैदर, नईम, शाकिर, जाकिर, खुर्रम जैदी, गुलजार जैदी, प्रवेज, पप्पू, हशमत आदि मौजूद रहे।

स्कार्पियो सवार युवकों ने की गुंडागर्दी: पुलिस पर चढ़ाने की कोशिश

कांवड़ियों को भी रौंदने का प्रयास, मुकदमा दर्ज

शाहटाइम्स संवाददाता

खतौली । श्रावण मास के दौरान शिवभक्तों की सुरक्षा में तैनात पुलिस टीम पर काली स्कार्पियो सवार युवकों ने न सिर्फ हमला करने की कोशिश की, बल्कि कांवड़ यात्रा में डड्यूटी कर रहे पुलिसकर्मियों के साथ गाली-गलौज करते हुए उन्हें जान से मारने की धमकी दी। यही नहीं, उक्त युवकों ने कावड़ पटरी मार्ग पर चल रहे शिवभक्तों पर भी जानबूझकर गाड़ी चढ़ाने का प्रयास किया। गनीमत रही कि शिवभक्त और पुलिसकर्मी समय रहते बाल-बाल बच गए।

घटना बीती रात लगभग 12 बजे की है। रतनपुरी थाना क्षेत्र के सठेड़ी गंगनहर पुल पर पुलिस टीम चेकिंग अभियान चला रही थी। इस दौरान खतौली की ओर से तेज रफ्तार में आ रही एक काले रंग की स्कार्पियो कार को पुलिसकर्मियों ने रोकने का प्रयास किया, लेकिन कार सवार चार युवकों ने गाड़ी से उतरकर दरोगा अनुराग सिंह व कांस्टेबल सुभाष और रविंद्र के साथ गाली-गलौज शुरू कर दी। युवकों ने पुलिस टीम को जान से मारने की धमकी भी दी।

हद तो तब हो गई जब उन्होंने पुलिसकर्मियों पर गाड़ी चढ़ाने की कोशिश की और कांवड़ मार्ग पर चल रहे कांवड़ियों को भी कुचलने का प्रयास किया।

बैरियर तोड़कर फरार हुए आरोपी

हंगामे के बाद आरोपी स्कार्पियो चालक पुलिस द्वारा सठेड़ी नहर पर लगाए गए बैरियर को तोड़कर मौके से फरार हो गया। पुलिसकर्मियों ने सरकारी और निजी वाहनों की मदद से स्कार्पियो का पीछा किया, लेकिन आरोपी खतौली से रतनपुरी की ओर भाग निकले और अंधेरे का फायदा उठाकर फरार हो गए।

पुलिसकर्मियों को आई चोटें, दर्ज हुआ मुकदमा

इस हमले में पुलिसकर्मियों को हल्की चोटें आईं, जिन्हें उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। दरोगा अनुराग सिंह की तहरीर पर रतनपुरी थाने में अज्ञात स्कार्पियो सवार चार युवकों के खिलाफ गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

सीसी टीवी फुटेज खंगाल रही पुलिस

पुलिस अब स्कार्पियो सवार युवकों की तलाश में जुट गई है। घटना स्थल और आसपास के इलाकों में लगे सीसी टीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है, ताकि आरोपियों की पहचान हो सके। वहीं पुलिस सूत्रों की मानें तो स्कार्पियो पर काली फिल्म लगी थी और उसमें बैठे युवक नशे की हालत में थे।

शिवभक्तों में रोष, सुरक्षा पर उठे सवाल

इस दुस्साहसिक घटना के बाद कांवड़ मार्ग पर चल रहे श्रद्धालुओं में रोष व्याप्त है। उन्होंने प्रशासन से दोषियों को शीघ्र गिरफ्तार कर सख्त सजा देने की मांग की है। वहीं, इस घटना ने कांवड़ यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं की सुरक्षा को लेकर भी गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि मामला बेहद गंभीर है और आरोपी किसी भी कीमत पर बख्शे नहीं जाएंगे। घटना में प्रयुक्त स्कार्पियो की पहचान कर ली गई है और जल्द ही आरोपियों की गिरफ्तारी संभव है।

देवभूमि कॉलोनी में लगाया कांवड़ शिविर

जानसठ । पानीपत खटीमा राजमार्ग पर स्थित देव भूमि कॉलोनी में शिव भक्तों एवं श्रद्धालुओं की सेवा के लिए विशाल भंडारे का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन ग्राम प्रधान भलेड़ी राजकुमार सैनी उर्फ़ पप्पू द्वारा शिविर का उद्घाटन कर किया गया। शिविर का उद्घाटन मंत्र उच्चारण के साथ हवन यज्ञ कर किया गया। शिविर में आने वाले शिव भक्तों का बड़ी ही धूमधाम से स्वागत किया गया। शिविर में जलपान की व्यवस्था से लेकर फल फूट व खाने पिने की शिव भक्तों के लिए व्यवस्था का बहुत अच्छी व्यवस्था की गई है। इस दौरान राजकुमार प्रधान ने कहा कि शिव भक्तों की सेवा ही सबसे बड़ी सेवा है और कहां की सभी को मिलकर आने वाले शिव भक्तों की खूब सेवा करनी चाहिए। इस दौरान मुख्य रूप से ग्राम प्रधान भलेड़ी राजकुमार सैनी उर्फ़ पप्पू,मदन गोपाल, नीरज सैनी समाज सेवी, अनिल कश्यप, गोरेश सैनी, अविनाश, सचिन सैनी, चरण सिंह, अविनाश कश्यप, विकास, रेखा देवी, अमित पंकज, राजेंद्र, विनीत, वासु,राजेंद्र सिंह, सचिन सैनी आदि मौजूद रहे।

नई मंडी में रामलीला 20 सितम्बर से

मुजफ्फरनगर। श्री रामलीला कमेटी नई मंडी की एक बैठक श्री रामलीला भवन मे संजय मित्तल की अध्यक्षता में आहुत की गयी, बैठक में अध्यक्ष संजय मित्तल ने बताया प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 99वॉ श्री रामलीला महोत्सव 20 सितंबर से 3 अक्टूबर तक बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा, उन्होंने बताया कि इस वर्ष रामलीला का भव्य मंचन वृंदावन की मंडली के कलाकारों द्वारा किया जाएगा द्य

कार्तिक सहरावत के भोकरहेडी पहुंचने पर फूलमाला से किया स्वागत

शाह टाइम्स संवाददाता

मोरना। भोकरहेड़ी निवासी कार्तिक सहरावत ने 12-19 जौलाई तक थाईलैंड में आयोजित दूसरी एशियन चैम्पियनशिप में इण्डिया टीम की ओर से भाग लेकर कांस्य पदक जीतने में सफलता प्राप्त की है, जिससे उनके परिवार में खुशी का माहौल है।

कार्तिक के भोकरहेडी पहुंचने पर रिश्तेदारों व ग्रामीणों ने ढोल नगाडों के साथ फूलमाला पहनाकर स्वागत किया।

कस्बा भोकरहेड़ी के मोहल्ला नेहरू चौक निवासी संदीप सहरावत का पुत्र कार्तिक सहरावत स्पोर्ट्स कालेज लखनऊ में नोवी क्लास में पढ़ता है।

कार्तिक का सैटर के रुप में इंडिया टीम कोचिंग कैंप अंडर 16 वॉलीबाल में चयन हुआ था। थाइलैंड के नाखोन पाथोम प्रांत में 12 से 19 जौलाई तक आयोजित दूसरी एशियन अंडर 16 प्रतियोगिता में कार्तिक सहरावत ने प्रतिभाग किया था। भारतीय टीम ने जापान को 3-2 से हराकर प्रतियोगिता में तीसरा स्थान प्राप्त करते हुए कांस्य पदक जीता है।

भारतीय टीम की इस सफलता में कार्तिक सहरावत ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कार्तिक की इस

सफलता पर मां मंजू देवी, दादा अमरपाल, दादी सावित्री देवी व अन्य परिजन खुशी से फूले नहीं समा रहे हैं।

रविवार को कार्तिक के भोकरहेडी पहुंचने पर कस्बावासियों ने उसका ढोल नगाडों के बीच फूलमाला पहनाकर स्वागत किया। बधाई देनेवालों में ओमबीर सिंह बाबा,राजवीर सिंह अमीन,भाजपा नेता जोगेन्द्र वर्मा, अंकुर सहरावत, राजेश सहरावत, उदयवीर सिंह, सचिन वामन, अजय कुमार,डा.करणवीर सिंह, जयवीर सिंह आदि ने शुभकामनाएं देते हुए उसे आशीर्वाद दिया है।

जानसठ : शिव पार्वती के फोटो के साथ ग्राम प्रधान राजकुमार सैनी वे अन्य ग्रामीण।

एआईएमआईएम मजबूत करने का लिया गया संकल्प

बुढ़ाना। कस्बे में स्थित अब्दुल रहीम के आवास पर आयोजित आल इंडिया मजलिस ए इत्तेहादुल मुस्लिमीन पार्टी की बैठक में पार्टी को मजबूत किए जाने पर जोरदार चर्चा की गयी। इस दौरान यहां पर आगामी जिला पंचायत चुनाव के बारे में भी एक दूसरे की राय लेकर विचार विमर्श कर कहा गया कि वे बुढ़ाना विधानसभा क्षेत्र में पड़ने वाले जिला पंचायत के सभी वार्डों में काबिल उम्मीदवार को उतारकर सभी सीटों पर विजय प्राप्त करने की दशा में काम करेंगे। इस दौरान ज़िला महासचिव अब्दुल माजिद राना जोला, आज़म फारुकी, अब्दुल रहीम, अब्दुल वाहब, इरफ़ान सिद्दीकी, सैय्यद बाबर, अब्दुल कादिर, परवेज़ सिद्दीकी और मोहम्मद शफी आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

झारखंड महादेव देवालय में संध्याकालीन महाआरती का भव्य आयोजन

शाह टाइम्स सवांददाता

खतौली। श्रावण मास के पावन अवसर पर झारखंड महादेव देवालय, शिवपुरी में आयोजित संध्याकालीन महाआरती का आयोजन श्रद्धा और भक्ति के वातावरण में सम्पन्न हुआ। यह आयोजन 10 जुलाई, गुरुपूर्णिमा से निरंतर चल रहा है और 9 अगस्त 2025, श्रावण पूर्णिमा तक प्रतिदिन संपन्न होगा।इस श्रृंखला में शुक्रवार 19 जुलाई को आयोजित संध्याकालीन महाआरती में मुख्य यजमान संजीव कुमार शर्मा एवं शशि भारद्वाज ने परिवार सहित दीप प्रज्ज्वलन कर आरती का शुभारंभ किया। इस दौरान सभी ने भोलेनाथ का रुद्राभिषेक कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम में बडघ संख्या में श्रद्धालु शिवभक्तों ने भाग लेकर धार्मिक वातावरण में सहभागिता निभाई। आरती उपरांत भक्तों को प्रसाद वितरित किया गया। आरती का संचालन आरतीयज्ञाचार्य कमलेश मिश्रा एवं अनुराग शास्त्री द्वारा विधिविधान से संपन्न कराया गया।

झाडियों के बीच बसा सिद्धपीठ देवालय

मराठा कालीन इस पावन स्थल का नाम 'झारखंड महादेव' इसलिए पडा क्योंकि यह देवालय घने झाडियों के बीच स्थित था। श्रद्धालुओं की आस्था और वर्षों से चल रही धार्मिक परंपरा ने इसे एक सिद्धपीठ देवालय का दर्जा दिलाया है। कार्यक्रम में संरक्षक वेद प्रकाश अग्रवाल, अध्यक्ष सुधीर गोयल, उपाध्यक्ष ओमप्रकाश सूरी, सचिव तरुण सूरी, कोषाध्यक्ष संजीव अग्रवाल, कार्यक्रम संयोजक प्रधानाचार्य संजीव कुमार शर्मा सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों - मदन छाबडा, मनोज उपाध्याय, संदीप अग्रवाल, प्रमोद अग्रवाल, संजय गोस्वामी, विजय माहेश्वरी, शुभम टेलर्स, रमेश कुमार, सुनील दत्त शर्मा, सुनील कुमार अलीपुर, अशोक कुमार शर्मा, संजय भार्गव, पंकज भटनागर (पूर्व सभासद), अनिल वर्मा (ज्वैलर्स), मिथलेश माहेश्वरी, कमलेश देवी, पूनम देवी, विमला देवी, शशि उपाध्याय, आरती, ऐशवती गोस्वामी, नीरज मिश्रा आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही। भक्तों की श्रद्धा और आयोजन की भव्यता ने इस आयोजन को विशेष बना दिया। पूरा मंदिर परिसर 'हर हर महादेव' के जयघोष से गूंज उठा।

कांवड़ियों का हाल जानने संभलहेड़ा पंचमुखी मंदिर पहुंचे डीएम-एसएसपी

शाह टाइम्स संवाददाता

मीरापुर। कांवड़ यात्रा को सकुशल व शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने हेतु मुजफ्फरनगर पुलिस व प्रशासन पूरी मुस्तैदी के साथ कार्य कर रहा है।

इसी क्रम में रविार को जिलाधिकारी उमेश मिश्रा एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक संजय कुमार वर्मा ने मीरापुर थाना क्षेत्र में स्थापित कांवड़ सेवा शिविरों का निरीक्षण किया।निरीक्षण के दौरान अधिकारीगण ने शिविरों में ठहराव, विश्राम व जलपान व्यवस्था का जायजा लिया और शिविर संचालकों को निर्देशित किया कि किसी भी श्रद्धालु को कोई असुविधा न हो। उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि सभी सुविधाएं सुव्यवस्थित रूप से संचालित रहें। इस अवसर पर जिलाधिकारी व एसएसपी ने स्वयं शिव भक्तों को जलपान वितरित किया।

शिविरों में मौजूद श्रद्धालुओं ने पुलिस-प्रशासन किये जा रहे यातायात नियंत्रण, सुरक्षा प्रबंधन एवं सेवाभाव से की जा रही सहायता की प्रशंसा की और प्रशासन का आभार व्यक्त किया। जिलाधिकारी व वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने बताया कि कांवड़ यात्रा को निर्विन रूप से संपन्न कराने हेतु पुलिस एवं प्रशासन पूरी तरह कटिबद्ध है। कावड यात्रा के दौरान पर्याप्त संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया है, और वरिष्ठ अधिकारी स्वयं दिन-रात कांवड़ मार्गों पर भ्रमणशील रहते हुए डयूटी प्वाइंट्स की निगरानी कर रहे हैं। श्रद्धालुओं की सुरक्षा और सुविधा के लिए

पुलिस हर स्तर पर तत्परता से सेवा कर रही है, जिससे यात्रा में शामिल शिव भक्तों को हर संभव सहायता मिल सके।

शाह टाइम्स

स्वामी 'शाह पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड' के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **एस.एन. राना** द्वारा शाह पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, सूजडू चुंगी, मेरठ रोड, मुजफ्फरनगर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादकः
एस.एन. राना

*कार्यकारी सम्पादक
आनन्द बत्रा 'सुमन'

मुख्यालयः
मोबाइल-9720007290
R.N.I. No. 71843/99
www.shahtimesnews.com
email:shahtimes2015@gmail.com

*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु PRB एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद मुजफ्फरनगर न्यायालय के अधीन ही होंगे।

लग रहा शिवभक्त कांवड़ियों का तांता, सुंदर झांकियां बन रहीं आकर्षण का केंद्र

शाह टाइम्स टीम

शामली। शहरभर में चल रहे कांवड सेवा शिविरों में शिवभक्त कावड़ियों का तांता लगा हुआ है। शिविरों में कांवडियों की सेवा में समाजसेवी लगे है, जहां भोजन, स्नान, विश्रान सहित मेडिलक सभी सुविधाऐं मुहैया कराई जा रही है।

शहर के कैराना रोड़ स्थित ग्लोबल शांति केयर हॉस्पिटल के कांवड सेवा शिविर के 10वें दिन कांवडियों की भारी भीड रही। शिविर में पहुंचे समाजसेवी कुशांक चौहान, श्वेता चौहान ने कांवड़ सेवा शिविर में कांवड़ियों की सेवा की। आधुनिक मशीनों से थके हारे कांवड़ियों के पैरों की मालिश की गई। कैंप में आलू की सब्जी, पेठा, दाल, पिंड़ी छोले, अरहर की दाल, जीरा आलू, जीरा राइस, नमकीन जीरा चावल, मिक्स दाल, घेवर, वही शाम को दाल चावल, सादी रोटी, चलेकबी, लडडू, घेवर, फल आदि का प्रसाद वितरित किया गया। इस अवसर पर डा। जनेश्वर चौहान, अलका चौहान, कुशांक चौहान, श्वेता चौहान, पूर्वांक चौहान, मौजूद रहे। इसके अलावा शहर गुलजारी वाला शिव मंदिर में, हनुमान टीला हनुमान धाम पर शिविर में कांवड़ियों की सेवा के लिए अनेक प्रकार की सुविधाओं का समायोजन है। जैसे चौबीस घंटे हर समय खाने की व्यवस्था, चाय व दूध की व्यवस्था, व्रत में फलाहार की व्यवस्था, स्नान की व्यवस्था, शौचालयों की व्यवस्था तथा इसके साथ साथ चिकित्सा की भी विशेष व्यवस्था की गई है। सर्व मंगला कांवड सेवा शिविर, व्यापार मंडल के कांवड सेवा शिविर, नामदेव युवा जन कल्याण समिति, सर्व समाज कल्याण समिति के कांवड सेवा शिविरों में भी भगवान शिव के भक्तों की जमकर सेवा की जा रही है। सर्व समाज ककल्याण समिति एवं नामदेव युवा जनकल्याण समिति के शिविर में प्रसिद्ध कथा वाचक अरविन्द .ष्टि महाराज पहुंचे। मौके पर रजनीश नामदेव, अनुज नामदेव, सत्एंद्र नामदेव, विजेंद्र प्रजापति, गिरधारी लाल नारंग, रूपेश नामदेव, मनुज कंबोज आदि मौजूद रहे।

पानीपत-मुजफ्फरनगर हाईवे पर कांवड़ियों की संख्या में हुआ इजाफा

शामली। सावन मास का शिवरात्रि पर्व जैसे जैसे नजदीक आ रहा है पानीपत- मुजफ्फरनगर हाईवे पर कांवड़ियों की संख्या तेजी के साथ बढ़ती जा रही है। रविवार को बड़ी संख्या में कांवड़ियों के आने से समूचा हाईवे शिवभक्तमय हो गया। कंधे पर रंगबिरंगी और भारी भरकम कांवड़ लेकर शिवभक्त तेजी से अपने शिवलयों की ओर कदम बढ़ाते रहे।

मुजफ्फरनगर-शामली-पानीपत हाईवे पर गत 11 जुलाई से रूट डायवर्जन व्यवस्था लागू कर दी गई थी, जिसके बाद हाईवे पर केवल छोटे वाहनों को ही आने-जाने की छूट है। सावन मास के 10वे दिन कांवड़ियों की संख्या में तेजी से बढ़ोत्तरी दिखाई दी। बड़ी संख्या में शिवभक्त कांवड़िए हरिद्वार से कांधे पर रंगबिरंगी और भारी भरकम कांवड़ लेकर कतारबद्ध अपने गंतव्य की ओर बढ़ते दिखाई दिए। इसके साथ ही कई कांवड़ियों ने अपनी कांवड़ को ऐसा सजाया, हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर रहे है। हरियाणा हिसार निवासी युवा शिवभक्त कांवडियों की टोली 151 किलोग्राम वजन की कावड लेकर शामली पहुंची। टीम में शामिल सागर, दिनेश, मोहित आदि ने बताया कि उनकी यह दूसरी कांवड है। उन्होंने अपने परिवार की सुख शांति और मां पिता की दीर्घायु की भगवान शिव से मनोकाना मांगी है। इसके अलावा हरियाणा के पानीपत निवासी महिला रूबी व शारदा ने बताया कि वह पहली बार कांवड लेकर पहुंची है। बीना ने भगवान शिव से अपनी पुत्र की शादी की मनोकामना मांगी है। बीना ने बताया कि वह पुत्र की शादी के बाद फिर से कांवड लेकर आएगी। इस बार बड़ी संख्या में शिवभक्त कांवड़ में 8-8 बड़े-बड़े कलशों में पवित्र गंगाजल भरकर आ रहे हैं। उनकी हिम्मत के आगे सैंकड़ों किलोमीटर का सफर कुछ मायने नहीं रख पा रहा। कांवड़ मार्ग पर चप्पे पर पुलिस की पिकेट तैनात की गई है।

शामली। शिवरात्रि पर्व नजदीक आने के साथ ही डांक कांवडियों के आने का सिलसिला भी शुरू हो गया है। हरिद्वार गंगाजल लेने जा रहे हरियाणा निवासी बाइक सवार कांवडियों की बाइकों की शामली पुलिस द्वारा गहनता से जांच कर अभियान चलाया गया। इस दौरान सीओ थानाभवन जितेन्द्र कुमार व ट्रेफिक पुलिस ने बिना लाईलेंसर लगाकर आई करीब 50 बाईकों के चालान काटे।

बिना साईलेंसर वाली किसी भी बाइक को कांवड़ मार्ग पर ले जाने की अनुमति नहीं दी जा रही, यदि कोई इसका उल्लंघन करता है तो उसके विरुद्ध मोटर व्हीकल एक्ट के तहत कार्रवाई की भी चेतावनी दी है। एसपी रामसेवक गौतम के निर्देश पर कांवड़ मार्ग पर सुरक्षा प्रबंधों की विभिन्न टीमों के जरिए जांच कराई जा रही है। शामली पुलिस हरियाणा बोर्डर से लेकर जनपद मुजफ् फरनगर सीमा तक जांच कर रही है। रविवार को सीओ थानाभवन जितेन्द्र कुमार ने शहर के कलक्ट्रेट चौराहे पर ट्रेफिक पुलिस को साथ लेकर निबा साईलेंसर के बाइक लेकर आ रहे कांवडियों के चालान काटे। इस दौरान ट्रेफिक पुलिस ने गहनता से जांच की। साथ ही ऐसे बाइक सवारों के चालान काटे गए जो या तो बाइक का साईलेंसर हटाकर आए थे, या फिर साईलेंस को कटा गया था। ट्रेफिक पुलिस ने करीब 50 बाईक सवारों के चालान काटे है। सीओ जितेन्द्र शर्मा ने कहा कि डीजे की ऊंचाई 10 फुट और चौडाई 12 फुट तथा साउंड 75 डेसिबल निर्धारित की गई है।इसके लिए भी कार्यवाही की जा रही है।

पुलिस ने मशक्कत कर खुलवाया जाम

शामली। गत शनिवार देर रात्रि शहर में कांविडयों की संख्या बढने के साथ ही भीषण जाम लग गया। जाम लगने से वाहन चालक व कांवडियां जाम में फंसे रहे। बाद में पुलिसकर्मियों ने कडी मशक्कत कर जाम खुलवाया। जिसके बाद यातायात सुचारू हो सका।

गत शनिवार देर रात्रि हरिद्वार से पवित्र गंगाजल लेकर आने वाले शिवभक्त कांवडियों की संख्या में इजाफा हुआ। वही दूसरी ओर कांवड मेला को देखने के लिए शहर के लोगों की भीड भी सडकों पर पहुंच गई। जिससे शहर के शिव चौक से लेकर कैराना रोड स्थित गुलजारी वाला शिव मंदिर तक जाम की स्थिति पैदा हो गई।

जाम लगने से जहां कांवड मार्ग बाधित हो गया वही वाहन चालक भी जाम में फंस गए। कैराना रोड पर कांवडियों के लिए मार्ग निर्धारित होने से आधी सडक पूरी तरह से खत्म हो गई थी। जिससे यातायात सुचारू नही हो सकी और जाम लगा रहा। जाम की सूचना पाकर शहर कोतवाली पुलिस व ट्रेफिक पुलिस मौके पर पहुंची। जहां पुलिस ने कडी मशक्कत कर जाम को खुलवाया। यही हालात शहर के शिव चौक के रहे। जहां रातभर बार बार जाम लगता रहा। एक तरफ जात तो दूसरी तरह मार्ग का रूट डायवर्जन होने से नागरिकों को परेशानियों का सामना करना पड रहा है।

आरटीओ/खनन अधिकारी की लोकेशन लीक करने के संबंध में दो गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता

शामली। थाना कोतवाली शामली पुलिस,सर्विलंस एसओजी टीम शामली द्वारा संयुक्त कार्यवाही करते हुए वॉट्सएप्प ग्रुप चलाकर आरटीओ/खनन अधिकारी की लोकेशन आउट करने के सम्बन्ध में 2 अभियुक्तगण गिरफ्तार, कब्जे से एक मोबाइल बरामद किया गया है।

पुलिस अधीक्षक शामली राम सेवक गौतम के आदेशानुसार चलाए जा रहे लोकेशन शेयर करने वाले अपराधियों की गिरफ्तारी बरामदगी अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक शामली के निर्देशन एवं क्षेत्राधिकारी नगर के कुशल नेतृत्व में थाना कोतवाली शामली पुलिस, सर्विलंस एसओजी टीम शामली द्वारा 2 अभियुक्तगण को गिरफ्तार किया गया। अभियुक्तगण वॉट्सएप्प पर बादशाह रोड लाइन नाम से बने 1 ग्रुप में हरियाणा, शामली, सहारनपुर आदि जनपदो के कुल 54 व्यक्ति जुडे है, जो आरटीओध्खनन अधिकारी की लोकेशन ग्रुप में शेयर कर ओवर लोड वाहनो को चालान से बचाने का कार्य करते है । इसके एवज में ए व्यक्ति ट्रक मालिको से प्रति गाडी के हिसाब से रूपए लेते थे । गिरफ्तारी एवं बरामदगी के सम्बन्ध में थाना कोतवाली शामली पर आवश्यक वैधानिक कार्यवाही की जा रही है। गिरफ्तार अभियुक्तगण समून पुत्र अहसान निवासी ग्राम केरटू थाना झिंझाना जनपद शामली, आरिफ पुत्र अय्यूब निवासी ग्राम केरटू थाना झिंझाना जनपद शामली हैं।

शामली। सेंटर का शुभारंभ करते एसपी। छाया शाह टाइम्स

एसपी ने किया डायग्नोस्टिक सेंटर का फीता काटकर शुभारंभ

शाह टाइम्स संवाददाता

शामली। रविवार को पुलिस अधीक्षक रामसेवक गौतम ने शहर के बुढाना रोड स्थित नए प्रतिष्ठान कुमार डायग्नोस्टिक का फीता काटकर शुभारंभ किया। कुमार डायग्नोस्टिक अब घर जाकर ही सैंपल लेकर जांच रिपोर्ट मुहैया कराएगा।

रविवार को शहर के बुढाना रोड स्थित नए प्रतिष्ठान डॉ लाल पैथलैब्स, कुमार डायग्नोस्टिक का उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ। जिसका शुभारंभ पुलिस अधीक्षक रामसेवक गौतम व एसडीएम विनय प्रताप भदौरिया ने फीता काटकर संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से डॉ प्रदीप गोयल, डॉ दिव्य स्वरूप भटनागर, एसओजी प्रभारी समयपाल अत्री, सीएचसी प्रभारी डा। दीपक कुमार, आर्थो सर्जन डा। रामनिवास, डा। राघव अग्रवाल, अनुराग शर्मा, पुनीत द्विवेदी, चीफ फार्मासिस्ट ताहिर, यूएस भट्ट, मनोज वर्मा, आशुतोष वास्तव आदि मौजूद रहे।

कार ने बाइक में मारी टक्कर, मां-बेटे घायल

शामली। मेरठ बाइपास पर गांव सेहटा के निकट कार सवार ने बाइक सवार मां-बेटे को टक्कर मार दी। जिससे मां की मौत हो गई, जबकि बाइक चला रहा बेटा घायल हो गया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जबकि कार चालक की तलाश शुरू कर दी है। कांधला थाना क्षेत्र के गांव भारसी निवासी 20 वर्षीय कुणाल पुत्र पप्पू अपनी 50 वर्षीय मां बबली को बाईक से लेकर कुडाना किसी कार्य से जा रहा था। जब वह मेरठ बाइपास गांव सेहटा के निकट पहुंचा तो पीछे से आई कार ने बाइक में जबरदस्त तरीके से टक्कर मार दी। जिससे मां बेटा सडक पर गिर पडे और सिर में गंभीर चोट लगने से मां बबली की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि बाइक चला रहा कुणाल घायल हो गया। घटना के बाद चालक कार को लेकर फरार हो गया। मां-बेटे का पुलिस द्वारा सीएचसी शामली में भर्ती कराया गया, जहां चिकित्सकों ने बबली को मृत घोषित कर दिया, जबकि घायल कुणाल को उपचार दिया गया। कोतवाली पुलिस ने मौके पर जाकर और प्रत्यक्षदर्शियों से पूछताछ की। पुलिस ने महिला के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस ने कार सवार की तलाश भी शुरू कर दी है।

गो माता की सेवा कर पुण्य कमाया

शामली। मां शाकुंभरी देवी गऊ ग्रास समिति द्वारा नई मंडी स्थित गौशाला में 6 कुंतल हरे चारे से गौ माता की सेवा की गई। संस्था के अध्यक्ष डॉ अनिल कुमार बंसल ने बताया कि संस्था माह में एक बार गौ माता को हरा घास खिलाकर गौ माता की सेवा करती है शास्त्रों में गौ माता की सेवा करना सबसे बड़ा पुण्य का काम है गौ माता की सेवा से सभी प्रकार के दुख दर्द दूर होते हैं तथा सभी ग्रह शांत रहते हैं गौ माता की सेवा करने से पुण्य प्राप्त होता है तथा मन को असीम शांति भी प्राप्त होती है सभी को बढ़-चढ़कर गौ माता की सेवा करनी चाहिए। इस मौके पर वीणा अग्रवाल विजय गुप्ता डॉ उमेश कुमार वीरेन्द्र बालियान शिवकुमार तायल अनिल रेनू आदि मौजूद रहे।

शिष्य के जीवन को सार्थक बनाने को गुरु महत्वपूर्णः मुनिराज

शाह टाइम्स संवाददाता

शामली। शहर के जैन धर्मशाला में 108 विव्रत सागर मुनिराज ने रविवार को प्रवचन करते हुए कहा कि जैसे शरीर को जीवित रखने के लिए सांस आवश्यक होती है, वैसे ही शिष्य के जीवन को सार्थक और उन्नत बनाने के लिए गुरु-भक्ति अत्यंत आवश्यक है।

मुनिराज ने अपने पूज्य गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं कहा कि जिन्होंने उन्हें न केवल जीवन का मूल्य समझाया, बल्कि उसे कैसे जीना है, यह भी सिखाया। मानव जीवन को अत्यंत दुर्लभ बताया गया है। इसके बाद जैन कुल में जन्म लेना और उससे भी बढ़कर सच्चे सद्गुरु की प्राप्तिकृए सभी दुर्लभ सौभाग्य की श्रेणी में आते हैं। फिर भी, अधिकांश लोग इन अवसरों का वास्तविक महत्व नहीं समझ पाते और उनका सदुपयोग करने से चूक जाते हैं। भरत चक्रवर्ती का उदाहरण इस संदर्भ में प्रेरणादायक है। जब तक उनके बाल काले थे, वे संसारिक भोगों और ऐश्वर्य में लिप्त थे। परंतु जब उन्होंने अपने सिर में एक सफेद बाल देखा, तो उन्हें जीवन की क्षणभंगुरता का बोध हुआ। उस क्षण उन्होंने संसार से विरक्ति का मार्ग अपनाया। यह उदाहरण इस बात को स्पष्ट करता है कि जब व्यक्ति को अपने जीवन की दुर्लभता और उसकी अस्थिरता का बोध होता है, तभी वह आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ता है।इसलिए आवश्यक है कि हम गुरु की कृपा से प्राप्त इस दुर्लभ जीवन और सत्संग का पूर्ण लाभ लें और आत्मा की शुद्धि व मोक्ष की दिशा में अग्रसर हों।

आवारा कुत्तों ने राहगीरों पर किया हमला

शाह टाइम्स संवाददाता

शामली। शहर के भिक्की मोड पर उस समय हडकंप मच गाय, जब आरावा कुत्तों के एक झुंड ने तीन राहगीरों पर हमला कर घायल कर दिया गया। कांवड मार्ग पर कुत्तों द्वारा मचाए गए आतंक से काफी देर तक अफरा तफरी मची रही। कुत्तों का शहर में दिन प्रतिदिन आतंक बढ रहा है। आए दिन कोई न कोई कुत्ते के काटने की सामने आ रही है। रविवार को शहर के भिक्की पर आवारा कुत्तों का एक झुंड पहुंच गया और देखने ही देखते आते जाते राहगीरों पर हमला बोल दिया। कुत्तों के हमले में काकानगर निवासी हरेन्द्र, सिंभालका निवासी राजीव व माजरा रोड निवासी सूरज घायल हो गए। काफी देर तक कुत्तों द्वारा सडक पर आतंक फैलाया गया। पास में ही कांवड मार्ग होने से काफी देर तक अफरा तफरी की स्थिति मची रही। जिसके बाद घायल लोगों ने सीएचसी शामली पहुंचकर अपना उपचार कराया।

दिल का दौरा पड़ा, हायर सेंटर रेफर

शामली। झारखंड निवासी रवि पुत्र मुकेश रविवार को दिल्ली जाने के लिए जैसे ही रेलवे स्टेशन पर पहुंचा तो तभी उसे दिल का दौरा पड गया और वह अचेत होकर रेलवे स्टेशन पर गिर पडा। पुलिसकर्मियों द्वारा मूर्छित अवस्था में रवि को सीएचसी शामली में भर्ती कराया गया, जहां से उसे हायर सैंटर के लिए रेफर कर दिया गया।

नाली विवाद में घर में घुसकर जानलेवा हमला

शाह टाइम्स संवाददाता

चौसाना। क्षेत्र के गांव उदपुर में रविवार दोपहर उस वक्त अफरा-तफरी मच गई जब एक युवक पर उसके ही घर में घुसकर लाठी-डंडों व लोहे की रॉड से जानलेवा हमला कर दिया गया। घायल युवक को गंभीर हालत में अस्पताल भेजा गया है। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को हिरासत में लिया है, जबकि अन्य की तलाश जारी है ।

उदपुर निवासी ओमवीर सिंह ने पुलिस चौकी चौसाना पर तहरीर दी है। पीड़ित के अनुसार, रविवार दोपहर करीब 12।20 बजे वह अपने घर पर मौजूद था, तभी कुछ लोग सुनियोजित तरीके से हथियारों से लैस होकर उसके घर में घुस आए और गाली-गलौच करते हुए हमला बोल दिया। पीड़ित ने विरोध किया तो उसके सिर पर लोहे की रॉड से वार किया गया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया और जमीन पर गिर पड़ा।

शोर-शराबा सुनकर मोहल्ले के लोग मौके पर पहुंचे और किसी तरह बीच-बचाव कर पीड़ित को हमलावरों से बचाया। आरोपी जाते-जाते जान से मारने की धमकी भी देकर फरार हो गए।

पीड़ित का कहना है कि विवाद की जड़ गांव की नाली थी, जिसे लेकर पहले भी कहासुनी हो चुकी थी। उसी रंजिश के चलते योजनाबद्ध तरीके से उस पर हमला किया गया। चौकी चौसाना के प्रभारी ज्ञानेंद्र सिंह ने बताया कि, घायल युवक को इलाज के लिए भेजा गया है। दो लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। मेडिकल रिपोर्ट आने के बाद गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया जाएगा और बाकी आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए दबिश दी जा रही है।

अखिलेश यादव के नेतृत्व में होगा सत्ता परिवर्तनः विनीत कुशवाह

शाह टाइम्स संवाददाता

शामली। समाजवादी छात्र सभा का पीडीए जनपंचायत कार्यक्रम हरदेव नगर शामली स्थित कैम्प कार्यालय में आयोजित हुआ जिसमें बड़ी संख्या में युवाओं एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाजवादी छात्र सभा के प्रदेश अध्यक्ष विनीत कुशवाह ने कहा कि पिछले 10 वर्षों में सरकार की नीतियों के कारण जहां एक और शिक्षित युवाओं में बेरोजगारी बढ़ी है वहीं दूसरी और आउटसोर्सिंग पर भर्ती में आरक्षण न देकर पिछड़ों एवं अनुसूचित जातियों के आरक्षण के संवैधानिक अधिकारों को छीना गया है। प्रदेश में 2027 में अखिलेश यादव के नेतृत्व मे सत्ता परिवर्तन होगा जिसमे युवाओं एवं छात्रों की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। समाजवादी छात्र सभा के जिलाध्यक्ष भूपेन्द्र सैनी शामली ने कहा कि शामली परिवर्तन की धरती है, यहां का युवा समझदार है। प्राथमिक स्कूल बंद करने के निर्णय की आलोचना करते हुए उन्होंने कहा कि सरकार बच्चों को स्कूल से दूर रखना चाहती है क्योंकि वो शिक्षित पीडीए समाज से डरने लगी है। मौके पर महिला सभा की जिलाध्यक्ष अर्चना चौधरी, अरविंद प्रधान, रणवीर सैनी, तेजपाल सैनी, सुरेंद्र ताना, अमरदीप पंवार, मांगेराम प्रधान सिलावर, शमशाद मिरासी, गोपाल कश्यप, नितिन सैनी, विनीत पिंडौरा आदि मौजूद रहे।

20 कुन्तल नकली पनीर पकड़ा

शाह टाइम्स संवाददाता

छुटमलपुर। सहारनपुर खाद्य विभाग ने चमारी खेड़ा टोल प्लाजा पर बड़ी कार्रवाई करते हुए 20 क्विंटल नकली पनीर बरामद किया। यह पनीर करनाल, हरियाणा में तैयार कर उत्तराखंड भेजा जा रहा था। जांच में पता चला कि नानौता के हाजी नाजर के पुत्र आजम ने इस गोरखधंधे को अंजाम दिया। खाद्य विभाग ने नमूने लेकर शेष पनीर को नष्ट कर दिया।

चमारी खेड़ा टोल पर गाड़ी की तलाशी के दौरान यह खुलासा हुआ कि पनीर रिफाइंड और अन्य हानिकारक पदार्थों से बनाया गया था। आजम ने करनाल में नकली पनीर की इकाई स्थापित की थी, जिसके जरिए उत्तराखंड के बाजारों को निशाना बनाया जा रहा था। खाद्य विभाग की टीम ने तत्काल कार्रवाई कर नमूने जांच के लिए भेजे, ताकि स्वास्थ्य जोखिमों का आकलन किया जा सके। स्थानीय लोगों ने इस कार्रवाई की सराहना की और मांग की कि मिलावटखोरों पर कड़ी सजा दी जाए। खाद्य विभाग ने कहा कि सहारनपुर में सख्त निगरानी के कारण मिलावटखोर पड़ोसी राज्यों में इकाइयां शिफ्ट कर रहे हैं। विभाग ने चेतावनी दी कि ऐसी गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी जाएगी। यह कार्रवाई खाद्य माफिया के खिलाफ प्रशासन की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। जनता की सेहत से खिलवाड़ करने वालों के खिलाफ आगे भी सख्त कदम उठाए जाएंगे।

दो दिन और बढ़ाया गया विद्युत मेगा कैम्पः विजय

शाह टाइम्स संवाददाता

रामपुर मनिहारान। विद्युत विभाग के अधिशासी अभियंता विजय कुमार ने बताया कि विद्युत उपभोक्ताओं की सुविधा के लिए तीन दिवसीय विद्युत बिल सुधार व अन्य समस्याओं के निस्तारण के लिए आयोजित मैगा कैम्प को दो दिन के लिए बढ़ा दिया गया है ताकि अधिक लोगों को कैम्प का लाभ मिल सके।अब 21 व 22 जुलाई को भी समस्याओं का समाधान किया जाएगा।

विद्युत विभाग के अधिशासी अभियंता विजय कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि 17 जुलाई गुरुवार से 19 जुलाई शनिवार तक विद्युत वितरण खंड रामपुर मनिहारान में तीन दिवसीय मैगा कैम्प का आयोजन किया गया था। जिसमें खंड के अंतर्गत समस्त उपभोक्ताओं की विद्युत सम्बन्धित समस्याओं जैसे बिलों में संशोधन, खराब मीटरों को बदलना, सम्भावित खराब मीटरों पर चौक मीटर लगाना, नए संयोजनों का निर्गमन, भार वृद्धि एवं अन्य विद्युत समस्याओं का कैम्प में ही निराकरण किया जा रहा था।अब इस कैम्प की अवधि दो दिन के लिए बढ़ा कर 21 व 22 जुलाई कर दी गई है।

अधिशासी अभियंता विजय कुमार ने कहा कि जिस उपभोक्ता को कोई समस्या हो तो 21 व 22 जुलाई को कैम्प में आकर अपनी समस्या का समाधान करा सकता है।

नशा है बुराइयों की जड़ः सुरेंद्र

शाह टाइम्स संवाददाता

नागल। जिला आर्य उप प्रति. निधि सभा तहसील देवबंद के तत्वावधान में घर घर यज्ञ हर घर यज्ञ कार्यक्रम के अंतर्गत ग्राम आमकी दीपचंदपुर में 80 घरों में एक साथ यज्ञों का आयोजन किया गया ।

इस अवसर पर नशा मुक्ति अभियान के तहत सुरेंद्र आर्य, मुकेश आर्य भजनोपदेशक ने भजनों के माध्यम से समाज में तरह तरह के नशों की बुराई का उल्लेख करते हुए उन्हें जड़ से समाप्त करने के उपायों पर प्रकाश डाला। कुटेसरा से आए आर्य विद्वान विनित आर्य ने वेदों के माध्यम से बताया कि हम दुर्व्यसनों, नशे की इस भयंकर आपदा से कैसे बचे ।देव दयानंद के बताए मार्ग पर चल कर ही इन सभी बुराइयों से बचा जा सकता है। डॉ सुरेंद्र आर्य देवबंद, प्रभात आर्य ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

अध्यक्षता जनकवीर आर्य व संचालन विपिन आर्य अंबोली ने किया । इस दौरान मुख्य रूप से वैद्य राम कृष्ण मुनि, अमरीश आर्य, मुकेश प्रधान, विनोद आर्य, विजयपाल आर्य,अजब सिंह आर्य, राजवीर प्रधान, देवव्रत आर्य, ईश्वर आर्य, पंकज आर्य, रोहित आर्य, राज कुमार आर्य, अजब सिंह आर्य, विनोद आर्य, रजनीश आर्य, जोगेंद्र आर्य, देवीदयाल आर्य, ओमपाल आर्य, पं संदीप आर्य, हरपाल सिंह शान्त, जिलेसिह आर्य, महिला पुरोहित अर्चना आर्या, नीतू आर्या, नरेशना आर्या, सुभद्रा आर्या, करूणेश आर्या सुनीता आर्या आदि उपस्थित रहे।

नील गाय से टकरा भाई बहन घायल

तल्हेडी बुजुर्ग। नीलगाय से टकराकर बाइक सवार भाई बहन गम्भीर रूप से घायल हो गए, मौके पर मौजूद राहगीरों ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया।

मिली जानकारी के अनुसार रविवार को बसेड़ा निवासी रोहित धीमान पुत्र रविन्द्र बाइक पर सवार होकर अपनी बहन सोनिका को उसकी ससुराल गांव कोलाहेडी थाना क्षेत्र तीतरों से लेकर आ रहा था। जैसे ही वह तल्हेडी क्षेत्र के गांव अंबोली के निकट पहुंचे तो अचानक उनकी बाइक के सामने नीलगाय आ गई। नीलगाय से टकराकर बाइक सड़क पर गिर गई जिसके कारण वह गम्भीर रूप से घायल हो गए। वहां से गुजर रहे राहगीरों ने उनके परि. जनों को सूचित किया ओर दोनों घायलों को तल्हेडी कस्बे के एक निजी चिकित्सक के यहां भर्ती कराया। जानकारी मिलते ही घायलों के परिजन व बसेड़ा के प्रधान प्रतिनिधि मोहित त्यागी भी मौके पर पहुंच गए।तत्पश्चात चिकित्सक द्वारा उन्हें आवश्यक प्राथमिक उपचार दिया गया लेकिन उनके सिर में गम्भीर चोटें होने के कारण चिकित्सक ने उन्हें सहारनपुर रेफर कर दिया। परि. जनों ने बताया कि दोनों भाई बहनों को सहारनपुर के तारावती अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जहां उनकी हालत सामान्य बताई गई है।

पूर्व प्रधान मौ. इमरान के प्रयासों से सड़क का निर्माण कार्य शुरू

शाह टाइम्स संवाददाता

छुटमलपुर। विकास खंड के पुंवारका क्षेत्र की ग्राम पंचायत गंदेवड़ा में लंबे समय से उपेक्षित पड़ी कॉलोनी की सड़क आखिरकार बनने जा रही है। यह उपलब्धि पूर्व प्रधान मोहम्मद इमरान की अथक मेहनत और ब्लॉक प्रमुख मेहरबान मुखिया के सहयोग से संभव हुई है। 180 मीटर लंबी आरसीसी सड़क का निर्माण ब्लॉक प्रमुख के कोटे से शुरू हुआ है, जिसके लिए ग्रामवासियों ने दोनों नेताओं का दिल से आभार जताया है। ग्रामीणों का कहना है कि इस बार उन्होंने गलत प्रधान चुनने की भूल की थी, जिसके चलते गांव में विकास कार्य ठप रहे। अब पूर्व प्रधान और ब्लॉक प्रमुख के प्रयासों से गांव में विकास की नई किरण जगी है।

ग्रामवासियों, जिनमें हाजी शाहिद, बुरा भाई, जाहिर मलिक, नौशाद, इरशाद, खुर्शीद, आवेश, शमीम, मुस्तकीम, शहनवाज, जीशान, अफजल, वकील, अहसान, असलम, रिजवान, जुल्फान शहनजर, और मेहरबान शामिल हैं, ने एक स्वर में कहा कि मोहम्मद इमरान ने हमेशा गांव के विकास को प्राथमिकता दी। उनके कार्यकाल में हुए विकास कार्य आज भी गांव में दिखाई देते हैं, जैसे कि सड़कें, नालियां और अन्य बुनियादी सुविधाएं। ग्रामीणों ने मौजूदा प्रधान पर निराशा जताते हुए कहा कि उन्होंने कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं किया। अब विधायक, जिला पंचायत और ब्लॉक प्रमुख के कोटे से सड़क निर्माण जैसे कार्य कराए जा रहे हैं।

ग्रामवासियों ने ठान लिया है कि अगले चुनाव में वे फिर से मोहम्मद इमरान को प्रधान बनाएंगे। उनका कहना है कि इमरान की मेहनत और समर्पण ने गांव की तस्वीर बदली है। इस सड़क निर्माण से न केवल आवागमन आसान होगा, बल्कि कॉलोनी का समग्र विकास भी होगा. यह सड़क निर्माण न केवल गंदेवड़ा के लिए एक उपलब्धि है, बल्कि यह दर्शाता है कि समर्पित नेतृत्व और सामुदायिक सहयोग से विकास के नए द्वार खोले जा सकते हैं। ग्रामीणों की मांग है कि प्रशासन और जनप्रति. निधि भविष्य में भी ऐसे प्रयासों को बढ़ावा दें। पूर्व प्रधान मोहम्मद इमरान ने कहा मैंने हमेशा गंदेवड़ा पंचायत को अपना परिवार माना है। अपने कार्यकाल में मैंने सड़क, नाली, और अन्य सुविधाओं के लिए काम किया, जो आज भी गांव में दिखता है। अब भी मैं ग्रामवासियों की समस्याओं को दूर करने के लिए प्रयासरत हूं।

ब्लॉक प्रमुख मेहरबान मुखिया के सहयोग से यह सड़क बन रही है, और मैं भविष्य में भी गांव के विकास के लिए काम करता रहूंगा। ग्रामवा. सियों का प्यार और विश्वास मेरी सबसे बड़ी ताकत है।

संदिग्ध पकड़ा

शाह टाइम्स संवाददाता

चिलकाना। पुलिस टीम ने गस्त के दौरान चाकू के साथ संदिग्ध अवस्था में घूम रहे एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। जिसको मुकदमा दर्ज करने पश्चात न्यायालय के समक्ष पेश किया गया है।

चिलकाना थाना प्रभारी निरिक्षक चन्द्रसेन सैनी ने जानकारी देते हुए बताया कि वरिष्ठ पुलिस अधिक्षक सहारनपुर आशीष तिवारी के आदेशानुसार कावड यात्रा के मद्देनजर क्षेत्र में सुरक्षा व शान्ति व्यवस्था बनाये रखने के लिए चलाये जा रहे अभियान के दौरान ग्राम दूधगढ के निकट सडक पर संदिग्ध अवस्था में घूम रहे एक युवक को पुछताछ के लिए रोका गया तो वह पुलिस टीम को देख खेतों की ओर दौडने लगा, शक होने पर पुलिस ने घेराबंदी करते हुए दौडकर युवक को दबौच लिया, जिसके कब्जे से एक नाजायज चाकू बरामद हुआ।

ग्रामीणों की खुशहाली के लिए कार्य कर रही सरकारः निम

शाह टाइम्स संवाददाता

रामपुर मनिहारान। विधायक देवेंद्र निम ने कहा कि सरकार ग्रामीणों किसानों के जीवन में खुशहाली, उन्नति लाने और अधिकतम सुविधाएं देने के लिए लगातार कार्य कर रही है।

भाजपा विधायक देवेंद्र निम ने क्षेत्र के गाँव जन्धेडा समसपुर में नवगठित बहुउद्देश्यीय प्राथमिक ग्रामीण समिति का उद्घाटन किया।सम्बोधित करते हुए विधायक देवेंद्र निम ने कहा कि सरकार ग्रामीणों किसानों के जीवन में खुशहाली और लाने के लिए लगातार काम कर रही है। जिसकी आज जन्धेडा समसपुर में नवगठित बहुउद्देशीय प्राथमिक ग्रामीण समिति (बी-पैक्स) का शुभारंभ होना है।इसके माध्यम से किसानों को खाद बीज आदि यहीं उपलब्ध कराए जाएंगे साथ ही छोटे ऋण भी उपलब्ध कराए जाएँगे। गेहूँ खरीद सेंटर भी लगाया जाएगा। उन्होंने कहा कि जब आपको सुविधाएं यहीं मिलेंगी तो आपका दूर दराज क्षेत्रों में आने जाने का समय बचेगा। देवेंद्र निम ने कहा कि यह पहल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करेगी और स्थानीय स्तर किसानों व निवासियों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाएगी। उन्होंने कहा कि यह समिति सहकार से स्मृद्धि के लक्ष्य को पूरा करेगी।

इस दौरान पिछड़ा वर्ग आयोग सदस्य मेलाराम पँवार, मंडल अध्यक्ष विनोद पँवार, चेयरमैन जगबीर सिंह, राजेंद्र प्रधान, राजकुमार पँवार, विकास पँवार, अक्षय पँवार, रवि पँवार, राकेश नल्हेड़ा, रामदास, राजपाल, सजंय चेयरमैन, ब्रह्म सिंह, सुमित बीडीसी, घनश्याम सिंह, डायरेक्टर बिट्टू आदि काफी लोग मौजूद रहे।

श्रद्धालुओं की भीड़ जुटी

गंगोह। श्रावण मास में शिवालयों में भगवान भोलेनाथ की पूजा के लिए दिनभर श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रही है।

श्रावण मास में राम बाग, वैष्णोदेवी धाम, सरार्फ बाजार स्थित शिव-हनुमान मंदिर, सनतान धर्म सभा, बालाजी धाम, भुवनेश्वर झगड़ा मंदिर, शिव चौंक स्थित शिव मंदिर, गणेश चौंक, नवदुर्गा मंदिर आदि शिव मंदिरों में भगवान शिव का अभिषेक व पूजा अर्चना के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ हो रही है। शिवालयों में दिनभर हर-हर महादेव के जयकारों से गूंजमान रहे हैं। प्रतिदिन ही मंदिरों में श्रद्धालुओं द्वारा अभिषेक, फल-फूल, आंक, धतूरा, दूध, दही व जल अर्पण कर विशेष पूजा-अर्चना कर रहे हैं। जिसके चलते चहुंओर बम भोले के जयकारों से क्षेत्र गूंजमान होने से क्षेत्र का माहौल भक्तिमय बना हुआ है।

सृष्टि विस्तार में आई कठिनाइयों की कथा सुनाई

शाह टाइम्स संवाददाता

चिलकाना। गांव चौरीमंडी के शिव मन्दिर में चल रही शिव महापुराण के दसवे दिन महात्मा आत्मानन्द गिरि महाराज ने ब्रह्मा जी के मानस पुत्र दक्ष प्रजापति के द्वारा किये गये सृष्टि विस्तार ओर सृष्टि विस्तार के समय आयी कठिनाइयों के बारे में विस्तार से बताया।

महाराज ने बताया कि ब्रह्मा जी ने दक्ष को अपनी मानस संतान के रूप में उत्पन्न किया था। दक्ष, प्रजापति के रूप में, सृष्टि के विस्तार के लिए नियुक्त किए गए थे। उन्होंने अनेक पुत्रों और पुत्रियों को जन्म दिया, जिनसे सृष्टि का निर्माण हुआ। एक बार ब्रह्मा जी ने दक्ष को बुलाया और उन्हें प्रजा उत्पन्न करने का आदेश दिया। तदानुसार दक्ष ने देवताओं, मुनियों, गंधर्वों, असुरों, नागों आदि की रचना की। यह देखकर कि उनके द्वारा निर्मित प्रजा की संख्या आवश्यकतानुसार नहीं बढ़ रही है।

उन्होंने स्त्री -पुरुष के संयोग से प्रजा उत्पन्न करने का विचार किया, और उनकी पत्नी असिक्नी से पाँच हजार पुत्र उत्पन्न हुए, जो हर्यश्र्व कहलाए। वे अपनी बारी आने पर प्रजा उत्पन्न करने ही वाले थे कि नारद उनके समक्ष प्रकट हुए और बोले, ष्हे हर्यश्र्व! तुम तो मात्र बालक हो और इस संसार के रहस्यों से अनभिज्ञ हो। तुम प्रजा की रचना कैसे करना चाहते हो? तुममें ऊपर-नीचे, लंबाई-चौड़ाई में जाने की शक्ति है, तो तुम पृथ्वी के छोर का पता लगाने का प्रयास क्यों नहीं करते? नारद के वचन सुनकर, वे सभी भिन्न-भिन्न दिशाओं में भाग गए और तब से वापस नहीं लौटे। इस प्रकार दक्ष ने हर्यश्र्वों को खो दिया। दक्ष ने असिक्नी से पुनः एक हजार पुत्र उत्पन्न किए और वे शबलश्र्व कहलाए।

यह देखकर कि वे भी प्रजा उत्पन्न करने वाले हैं, नारद ने किसी युक्ति से उन्हें भी तितर-बितर कर दिया। पृथ्वी का अंत देखने गए शबलश्र्व अभी तक वापस नहीं लौटे हैं। यह सुनकर दक्ष नारद पर क्रोधित हो गए और उन्हें शाप दिया ष्तुम भी मेरे बच्चों की तरह पृथ्वी पर जगह-जगह भटकते रहोगेष। उस शाप के बाद से नारद एक निश्चित निवास स्थान के बिना, एक घुमक्कड़ बन गए। प्रजापति दक्ष ने फिर से असिक्नी से साठ कन्याओं को जन्म दिया। दस कन्याएँ धर्मदेव को, तेरह कश्यप को, सत्ताईस सोम को और चार अरिष्टनेमि को दीं गई। शेष में से दो बाहुपुत्र को, दो अंगिरस को और दो बुद्धिमान कृष्णश्र्व को दीं गईं, जिनसे सृष्टि का निर्माण हुआ।

प्रकाश व्यवस्था सुदृढ बनाने की मांग

गंगोह। जन्माष्टमी पर्व पर पथ प्रकाश व्यवस्था सुदृढ़ कराने व सफाई कराने की मांग अनेक संस्थाओं ने नगर पालिका प्रशासन से की है।

नगर पालिका गंगोह से की गई मांग में रामजन्मोत्सव समिति, कला निकेतन, सुदर्शन क्लब आदि संस्थाओं ने कहा है कि जन्माष्टमी पर्व पर नगर में अनेक स्थानों पर झांकियों का आयोजन किया जाता है। जिन्हें देखने के लिए पूरा समाज सडकों पर उतर आता है, इस समय मौसम बेहद ही संवेदनशील चल रहा है तथा कई स्थानों पर सफाई व्यवस्था में पूरी तरह सुधार नहीं है। जन्माष्टमी पर्व मे अभी लगभग एक माह का समय है, इसलिए समय रहते व्यवस्था कर लेनी चाहिए। इन संस्थाओं का कहना है कि नगर में जनरेटर द्वारा की गई प्रकाश व्यवस्था का लाभ आम नागरिक को हुआ है।

कांवड़ियों की बाइक में लगी आग

शाह टाइम्स संवाददाता

नकुड। सरसावा रोड पर कांवड़ियों की बाइक में अचानक आग लग गई। आग की लपटों ने बराबर में रखा एक खोखा भी चपेट में ले लिया। सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड के आने से पूर्व ही लोगों ने कड़ी मशक्कत कर आग पर काबू पाया।

रविवार दोपहर कस्बे के सरसावा रोड पर उस समय हड़कंप मच गया जब कांवड़ यात्रा पर हरिद्वार के लिए निकले दो युवकों की बाइक अचानक धधक उठी। लपटें इतनी तेज थीं कि बाइक के पास स्थित एक खोखा भी आग की चपेट में आ गया। गनीमत रही कि दोनों कांवड़िए समय रहते बाइक से कूदकर बाल बाल बच गए। पुलिस के अनुसार बाइक चला रहा युवक दीक्षित पुत्र अरविंद व कार्तिक पुत्र सुशील गंगोह थाना क्षेत्र के गांव किशनपुरा के निवासी बताए गए हैं। अत्यधिक गर्मी के चलते उसमें आग लगने की आशंका जताई जा रही है। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया। पास में रखा खोखा भी आग की चपेट में आ गया। मौके पर पहुंचे नगर वासियों ने फायर ब्रिगेड को सूचना दी, जिसके बाद सरसावा से दमकल वाहन मौके पर पहुंचा। लेकिन उससे पूर्व ही आग पर काबू पा लिया गया। घटना के चलते कुछ देर के लिए क्षेत्र में अफरा-तफरी मच गई।

नेत्र जांच शिविर में 214 मरीजों की जांच

शाह टाइम्स संवाददाता

चिलकाना। पठेड क्षेत्र के डॉ. विमल शर्मा द्वारा अपने पूज्य पिताजी व वरिष्ठ समाज सेवी स्व. बिजेन्द्र कुमार शर्मा की स्मृति में नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया।

बडी पठेड स्थित महादेव मन्दिर धर्मशाला में लगे नेत्र जाँच शिविर का उदघाटन शि. विर में पहुंचे मुख्य अतिथि व नकुड विधानसभा विधायक के प्रतिनिधि प्रोफेसर विंकेश चौधरी द्वारा फीता काटकर किया गया। सर्वप्रथम शिविर में पहुंचे सभी अतिथियों ने वरिष्ठ समाज सेवी स्व. बिजेन्द्र कुमार शर्मा के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्वलित कर पुष्प अर्पित किये, तत्पश्चात शिविर में पहुंचे मुख्य अतिथियों का फूल माला पहना कर स्वागत किया गया।

इस अवसर पर डॉ. कर्मजीत कौर ने लोगो को अपनी आंखों का ख्याल रखने के लिए बताया कि हमारा खानपान आज के समय में सही नहीं रहा, हमारी जनरेशन फास्टफूड व जंक फूड की ओर दौड रही है, जो हमारी आंखो के लिए घातक है। हमें अपनी आंखों को सही रखने के लिए हरी साग सब्जियों का प्रयोग करना आवश्यक है। शिविर में लगभग 214 मरीजो ने पहुंचकर निशुल्क नेत्र जांच का लाभ उठाया।

इस दौरान डॉ. कर्मजीत कौर, वीसी लीड दीपक रावत, विजन सेंटर कॉर्डिनेटर विमल जोशी, पीयूष सैनी, कर्म सिंह, मो.असलम, डॉ. विमल शर्मा, डॉ.अशोक सैनी, भाजपा मण्डल अध्यक्ष मुकेश शर्मा, जायर हुसैन चांद, पंडित मामचंद शर्मा, राज. ेश्वर दयाल शर्मा, शशिकांत कौशिक, सोमप्रकाश रोहिला, डॉ. इलियास अहमद, जतिन शर्मा, अजय भारद्वाज आदि उपस्थित रहे।

सूचना

मैने अपने पुत्र दानिश व पुत्रवधू गुलफशा को अपनी चल अचल सम्पत्ति से बेदखल कर सम्बन्ध विच्छेद कर लिये है। भविष्य में उनके कार्यो की मैं व मेरा परिवार जिम्मेदार नही होगा।

शिबा पत्नि जमशेद निवासी अब्दुल मजीद कालोनी पास कच्चा 62 फुटा, थाना कुतुबशेर, जिला सहारनपुर।

151 लीटर गंगाजल ले जा रहा कपिल

शाह टाइम्स संवाददाता

तल्हेडी बुजुर्ग। देश की सुख शांति व समृद्धि की मनोकामना लेकर 151 लीटर की कांवड़ से कपिल महादेव का जलाभिषेक करने के लिए अपने गंतव्य की ओर अग्रसर है।

महादेव की भक्ति में लीन 20 वर्षीय युवक कपिल पुत्र अनिल निवासी सरसीना 151 लीटर की भारी भरकम कांवड़ लेकर हर हर महादेव का उद्घोष करते हुए अपने गंतव्य की ओर बढ़ा चला आ रहा है। इस दौरान कपिल से हुई खास बातचीत में उसने बताया कि वह 11 जुलाई को हरिद्वार से गंगाजल लेकर चला था जो 23 जुलाई को गांव के भूमिया खेड़े पर पहुंचकर महादेव का जलाभिषेक करेगा। उन्होंने बताया कि इससे पूर्व भी वह दो वर्षों से कांवड़ लेकर आ रहा है जिसमें पहले वर्ष 21 लीटर ओर दूसरे वर्ष 51 लीटर की कांवड़ से महादेव का जलाभिषेक किया था।कपिल का कहना है कि महादेव में उसकी अटूट आस्था है और देश की सुख शांति व सम्रद्धि की मनोक. ामना के लिए वह अपने शरीर से ढाई गुना ज्यादा गंगाजल लेकर महादेव का जलाभिषेक करेगा।

101 फीट लम्बी तिरंगा कांवड़ बनी आकर्षण

गागलहेड़ी। काँवड़ यात्रा में देश भक्ति का रंग दिखाई दे रहा है। गांव हंगावली के युवा हरिद्वार से 101 फीट लम्बी तिरंगा काँवड़ लेकर अपने गंत्वय की और बढ़ रहे है। जिनका गागलहेड़ी पहुंचने पर भव्य स्वागत किया गया है ।

गागलहेड़ी में पहुंची 101 फीट लम्बी तिरंगा काँवड़ जो देश भक्ति का संद. ेश दे रही थी।जिसका कस्बा वासियो ने फूलो की वर्षा कर भव्य स्वागत किया है। जनपद सहारनपुर के गांव हंगावली के रहने वाले युवाओं का एक सांब सदा. शिव ग्रुप हरिद्वार से पहली बार 101 फीट की तिरंगा काँवड़ लेकर आ रहे है। जो आकर्षण का केंद्र बनी हुई है कस्बा गागलहेड़ी में पहुंचने पर तिरंगा काँवड़ का कस्बा वासियों ने भव्य स्वागत किया और सुरक्षा की दृष्टि से गागलहेड़ी थाना प्रभारी विनोद कुमार ने पुलिस बल के साथ स्वागत किया।

बिना भेदभाव विकास कराना प्राथमिकताः ताहिर

शाह टाइम्स संवाददाता

मिर्जापुर। थाना मिर्जापुर के गांव खेरी मे जिला पंचायत सदस्य ताहिर पहलवान ने जिला पंचायत निधि से 25 लाख रुपए की लागत से बनने वाले नाला निर्माण का फीता काटकर शुभारम्भ किया है। कहा कि बिना भेदभाव के विकास कार्य कराना ही उनकी प्राथमिकता है।

बतादे की मिर्जापुर क्षेत्र के वार्ड 8 से जिला पंचायत सदस्य चो ताहिर पहलवान ने गांव खेरी मे 25 लाख रुपए की लागत से बनने वाले नाला निर्माण का फीता काटकर शुभारम्भ किया है। ताहिर पहलवान ने बताया की वार्ड मे बिना भेदभाव विकास कार्य कराना ही उनकी प्राथमिकता है। उन्होंने वार्ड सहित विधानसभा से करोड़ो रुपए के विकास कार्य अभी तक करवा चुके हैं। बताया की यदि क्षेत्र की जनता उन्हें दोबारा चुनाव मे मौका देती है। तो विकास कार्य लगातार जारी रहेंगे सक्षेत्वासियों ने बताया की चो ताहिर ताहिर पहलवान एक मिलनसार व्यक्ति के तौर पर भी जाने जाते हैं और उनके आवास पर हर समय फरियादियों की भीड़ लगी रहती है जिनकी समस्याओ का भी समाधान करवाते हैं। इस दौरान प्रधान जीजू रहमान, हाजी शाहिद, साजिद ठेकेदार, चो शोभान, अकरम, अब्दुल्ला, चो कलीम आदि मौजूद रहे।

बम-बम भोले के जयकारों से गूंजा कांवड़ मार्ग

पुलिसकर्मियों ने शिवभक्तों के जख्मों पर लगाया मरहम

देवबन्द। श्रावण मास में कांवड़ यात्रा का आयोजन धूमधाम से किया जा रहा है। कांवड़ियों की आस्था और भक्ति के साथ-साथ उनकी कठिनाइयां भी इस यात्रा का हिस्सा हैं। कांवड़ियों के पैरों में छाले पड़े और थकान उनके चेहरे पर थी तब पुलिसकर्मियों ने शिवभक्तों के जख्मों पर मरहम लगाने का कार्य किया।

कांवड़ यात्रा में शामिल श्रद्धालु बम-बम भोले के जयकारों के साथ शिवभक्ति में लीन हैं। पैरों के छाले और थकान भी उनकी आस्था को डगमगा नहीं रही है। इस यात्रा में कांवड़िए पैरों में सूजन से होने वाले दर्द और छाले सहन करते हुए यात्रा तय कर रहे हैं। उनकी यात्रा में पुलिसकर्मियों ने उनके मद्दगार बन रहे हैं। देवबंद-मंगलौर कांवड़ मार्ग पर

कई स्थानों पर चिकित्सा कैंप लगाए गए हैं। जहां पुलिसकर्मी शिवभक्तों के जख्मों पर मरहम पट्टी कर उनकी सेवा कर रहे हैं। पुलिसकर्मी राकेश कुमार, तरुण और संदीप का कहना है कि हमारा कर्तव्य है कि हम श्रद्धालुओं की सुरक्षा और भलाई का ध्यान रखें। जब हमने देखा कि कांवड़ियों को मुश्किल हो रही है, तो हमने तुरंत चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई। यह उनकी भक्ति का सम्मान करने का हमारा तरीका है।

मौलाना जमीर अब्बास जाफरी 25 मोहर्रम को सहारनपुर में करेंगे मजलिस को खिताब

शाह टाइम्स संवाददाता

सहारनपुर। 25 मोहर्रम 1447 हिजरी को शहर की फिजाओं में एक बार फिर इमाम हुसैन (अ.स) की यादें ताजा होंगी, जब मशहूर आलिम-ए-दीन मौलाना जमीर अब्बास जाफरी छोटे इमामबारगाह अंसारियान सहारनपुर में मजलिस-ए-अजा को खिताब फरमाएंगे। यह मजलिस सैयदुस्साजिदीन, इमाम जैनुल आबि. दीन (अ.स) की शहादत की मुना. सिबत से आयोजित की जा रही है। इमाम सज्जाद (अ.स) के मसाएब और उनकी अज्मत को मौलाना जमीर अब्बास जाफरी अपने दिल को छू लेने वाले अंदाज में बयान फरमाएंगे। मौलाना जमीर अब्बास जाफरी अपनी मुनफरिद अंदाज-ए-बयान, इल्मी गहराई और दिल को छू लेने वाले अंदाज में मसाएब-ए-अहलेबैत (अ.स) को पेश करते हैं। उनका हर

लफ्ज, हर तर्ज-ए-बयान न सिर्फ आंखों को नम करता है, बल्कि दिलों को हुसैनी जज्बे से रौशन करता है। छोटा इमामबारगाह अंसारियान, सहारनपुर की यह मजलिस इमानी जोश का प्रतीक बनेगी , जहां पर अजादार दूर दराज से जमा होंगे। इस साल 25 मोहर्रम को होने वाली यह मजलिस खास अहमियत रखती है क्योंकि मौलाना जाफरी जैसे बुलंद शख्सियत की मौजूदगी, इस मजलिस को और भी असरदार बना देगी। इस मजलिस-ए-पाक की इंतिजामी जिम्मेदारी जनाब सैयद नवाजिश अली, सैयद नासिर अली, सैयद शजर अली, आप तमाम अजादाराने हुसैनी से गुजारिश है कि वक्त पर तशरीफ लाएं और इस नूरानी मजलिस में शरीक होकर सवाब हासिल करें।

दीपक राज सिंघल व राजकिशोर गुप्ता का किया स्वागत

शाह टाइम्स ब्यूरो

देवबन्द। अग्रवाल सभा के संस्थापक सदस्य दीपकराज सिंघल तीसरी बार केएल जनता इण्टर कालेज के प्रबंधक निर्वाचित होने एवं दून वैली पब्लिक स्कूल के चेयरमैन राजकिशोर गुप्ता का स्वागत करने के साथ ही 22 सितंबर को प्रथम नवरात्र पर महाराजा अग्रसेन जयंती महोत्सव धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया गया।

अग्रवाल सभा की आयोजित बैठक में अग्रवाल सभा के संस्थापक सदस्य दीपकराज सिंघल एवं सचिव राजकिशोर गुप्ता का सामाजिक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए अभिनंदन किया गया। इस मौके पर डा. सुधीर गुप्ता ने कहा कि दोनों ही सामाजिक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते आ रहे हैं। दीपकराज सिंघल ने अपने स्वागत के उपरांत कहा कि अग्रवाल सभा हमेशा हर कार्य में हमारा तन मन धन से सहयोग करती आई है। राजकिशोर गुप्ता ने कहा कि रामल. ीला मैदान से साप्ताहिक पैठ हटाने में सभी लोगों

का सहयोग रहा है। इस अवसर पर डा. विजेंद्र गोयल, राजीव गर्ग ने भी अपने विचार व्यक्त किये। इस दौरान महाराजा अग्रसेन जयंती समारोह के लिए पंकज अग्रवाल व राजीव गर्ग को संयोजक नियुक्त किया गया। बैठक में विपिन राज गर्ग, संजय गर्ग, अवनीश गर्ग, अरविंद गुप्ता, अनुज अग्रवाल, राहुल गर्ग, राजकुमार, रस्तोगी, सुधीर गर्ग आदि अग्रवाल सभा के पदाधिकारी व सदस्य शामिल रहे।

महिपाल का चांदी का मुकुट पहनाकर किया सम्मान

शाह टाइम्स ब्यूरो

देवबन्द। वाल्मीकि समाज की धर्मशाला को कब्जा मुक्त कराने में योगदान देने के लिए समाज द्वारा एससी एसटी आयोग के सदस्य महिपाल वाल्मीकि को चांदी का मुकुट पहनाकर सम्मानित किया गया।

वाल्मीकि बस्ती स्थित भगवान वाल्मीकि आंबेडकर धर्मशाला में वाल्मीकि समाज द्वारा अपने सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में एससी एसटी आयोग के सदस्य महिपाल वाल्मीकि ने कहा कि वाल्मीकि समाज का उत्पीड़न किसी भी दशा में सहन नहीं किया जायेगा।

उनका सम्मान बरकरार रखा जाएगा। उन्होने कहा कि समाज की समस्याओं का समाधान कराये जाने के लिए हर संभाव प्रयास किया जायेगा। संचालन कर रहे कुलदीप

लहरी ने कहा कि वाल्मीकि धर्मशाला को कब्जा मुक्त कराने में सहयोग करने के लिए समाज उनका आभारी है। राकेश गांगुली, विजय गांगुली, मनुज गांगुली, अमन, दीपक, सुनील, राकेश चंद्र, कमल, सतीश प्रधान, करण, राजेश, सीताराम, संदीप, निर्देश आदि समाज के लोग शामिल रहे।

धूमधाम से श्रीकृष्ण रथयात्रा महोत्सव मनाने का लिया निर्णय

शाह टाइम्स ब्यूरो

देवबन्द। श्री पंचायती ठाकुरद्वारा मंदिर में आयोजित बैठक में आगामी 9 से 18 अगस्त तक आयोजित होने वाले श्रीकृष्ण रथयात्रा महोत्सव पर चर्चा कर महोत्सव को धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया गया।

मैन बाजार स्थित श्री पंचायती ठाकुरद्वारा मंदिर परिसर में आयोजित हुई बैठक में कमेटी अध्यक्ष विनोद प्रकाश गुप्ता ने कहा कि 9 अगस्त को महोत्सव का शुभारम्भ मंदिर शिखरों पर धर्मध्वज स्थापना के साथ होगा। 17 अगस्त को मंदिर में प्रभु के स्वर्णिम रथ एवं लड्डू गोपाल के प्रसाद रथ पर सारथी बनने, चंवर डुलाने और प्रसाद वितरण आदि बोलियां होंगी और जन्माष्टमी से दो दिन बाद 18 अगस्त को नगर में भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी। जिसमें ठाकुर जी महाराजा का स्वर्णिम रथ शामिल होगा। जिस पर भगवान श्री कृष्ण संग श्री राधा रानी प्रतिमूर्ति रूप में विराजमान होकर श्रद्धालुओं को अपने दर्शनों से अभिभूत करेंगे। शोभायात्रा में बैंड बाजे, मनोरम झांकियां, कीर्तन मंडलियां व अखाड़े आकर्षण का केंद्र रहेंगे।

बैठक में अशोक गुप्ता, राकेश अग्रवाल, राजीव गुप्ता, ऋषिपाल कश्यप, ब्रह्म सिंह पुंडीर, सुशील गुप्ता, मुकेश गर्ग, राधे श्याम गर्ग, श्रवण सिंघल, डा. संजय शर्मा आदि मौजूद रहे।

गढ़ी अब्दुल्ला खां में कांवड़ सेवा शिविर का भव्य उद्घाटन

शाह टाइम्स संवाददाता

गढ़ीपुख्ता। क्षेत्र के गांव गढ़ी अब्दुल्ला खां में ऊन थाना भवन रोड पर स्थित प्राचीन भूमिया खेड़ा, शिव मंदिर है। जिसमें सावन माह के अवसर पर कांवड़ियों के लिए शि. विर का आयोजन किया जाता है। जिसमें ऊन थाना रोड पर आसपास क्षेत्र के गांव हरियाणा जाने वाले कांवड़ियों होकर गुजरते हैं।

भूमिया खेड़ा कावड़ शिविर के प्रबंधक मास्टर विनोद सैनी ने बताया यह लगभग 20 वर्षों से लगाया जा रहा है। जिसमें सावन माह में गांव एम क्षेत्र के आसपास व हरियाणा जाने वाले के कावड़ियों के लिए विश्राम की सुविधा दी जाती है। जिसमें 24 घंटे भंडारे

आयोजन किया जाता है। सुबह शाम शिविर में आरती का आयोजन किया जाता है ।

इस शिविर का उद्घाटन बिजेंद्र सैनी पूर्व प्रधान, अंतर सिंह ठेकेदार चतर सिंह सहित गांव के गणमान्य व्यक्ति द्वारा किया गया। इस दौरान मांगे राम कश्यप ,भूरा ,टोनी बाबा ,मही पाल, काशी राम सैनी ,ओम पाल ,सतपाल, सूर्य प्रताप ,मित्रा , विजयपाल सैनी, राकेश कश्यप विनोद सनी आदि मौजूद रहे।

एक नजर

कांवड़ मार्ग का निरीक्षण कर पुलिसकर्मियों को दिए दिशा निर्देश

शाह टाइम्स ब्यूरो

देवबन्द। पुलिस अधीक्षक ग्रामीण सागर जैन ने कांवड मार्ग का निरीक्षण कर डयूटी पर तैनात पुलिस कर्मियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये।

श्रावण मांस व कांवड यात्रा को सकुशल संपन्न कराये जाने के लिए पुलिस अधीक्षक ग्रामीण सागर जैन ने सुभाष चौक, लोक निर्माण अतिथिग्रह तिराहा, मंगलौर रोड, देवबन्द से उत्तराखंड बोर्डर तक कांवड मार्ग का निरीक्षण किया इस दौरान उन्होने डयूटी में तैनात पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारियों की चैकिंग कर ब्रीफ करने के साथ ही आवश्यक दिशा निर्देश दिये।

आशा कार्यकर्ता की गोली मारकर की हत्या

परिजनों ने जताई महिला के साथ दुष्कर्म करने की आशंका, पुलिस कर रही पूरे मामले की जांच

शाह टाइम्स संवाददाता

बागपत। बड़ौत कोतवाली क्षेत्र में एक आशा कार्यकर्ता की हत्या का मामला सामने आया है। मृतका अंजलि 40 वर्षीय की सिर में गोली मारकर हत्या कर दी गई। शव को बोरे में बंद कर निर्माणाधीन मकान के कमरे में छिपा दिया गया। घटना की सूचना मिलते ही एसपी मौके पर पहुंचे और शव को अपने कब्जे में लेकर पंचनामा भरने के बाद शव को पोस्टमार्टम में लिए बागपत भेज दिया। पुलिस पूरे मामले की जांच कर रहे हैं।

अंजलि शनिवार सुबह 9 बजे बागपत के सरकारी अस्पताल में आई थी। दोपहर 2 बजे उसने अपने बेटे सक्षम को फोन कर बताया कि

मृतका का फाइल फोटो

भूपेंद्र से 4 हजार रुपए लेने जा रही है। शाम 5 बजे के बाद उसका फोन बंद हो गया। कॉल नहीं मिलने पर परिजनों को चिंता होने लगी। रात 11 बजे पुलिस को निर्माणाधीन मकान से उसका शव मिला। आरा. ेपी भूपेंद्र गन्ना क्रय केंद्र में लिपिक

का काम करता है। अंजलि पिछले 10 वर्षों से आशा कार्यकर्ता के रूप में काम कर रही थी। उसकी शादी 23 वर्ष पहले हुई थी और उसके तीन बेटे हैं। राजपुर खानपुर गांव निवासी मृतका के पति चश्मवीर की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। मृतका के बेटे सक्षम का कहना है कि भूपेंद्र ने पैसों के लेनदेन को लेकर उसकी मां की हत्या की है। परिजनों ने दुष्कर्म की भी आशंका जताई है। पुलिस आरा. ेपी की तलाश कर रही है और मामले की जांच कर रही है। बड़ौत कोतवाली प्रभारी मनोज चहल ने मृतक महिला के पति की तहरीर पर मामला दर्ज कर लिया गया है। पूरे मामले की जांच पड़ताल की जा रही है। जल्दी आरोपी को गिरफ्तार किया जाएगा।

गाड़ी चोरी की वारदात से मोहल्ले में हड़कंप, पीड़ित ने लगाई न्याय की गुहार

शाह टाइम्स संवाददाता

गढ़ीपुख्ता। कस्बा गढ़ीपुख्ता के मोहल्ला रैदासपुरी में गाड़ी चोरी की एक सनसनीखेज वारदात सामने आई है, जिसने क्षेत्र में सनसनी फैला दी है। पीड़ित इंद्रा देवी, पत्नी धर्म सिंह ने स्थानीय थाने में तहरीर देकर आरोप लगाया है कि उनके पुत्र की बोलेरो पिकअप गाड़ी को अज्ञात चोरों ने घेर से चुरा लिया।

घटना 18 जुलाई की रात की बताई जा रही है। पीड़िता ने बताया कि उनका बेटा रोज की तरह अपनी बोलेरो पिकअप रजिस्ट्रेशन नंबर UP19T 1928, मॉडल 2016 को अपने घर के बाहर खड़ा कर अंदर चला गया था। रात के अंध. ेरे में कुछ अज्ञात चोरों ने मौका पाकर गाड़ी पर हाथ साफ कर दिया। परिवार वालों ने गाड़ी की खोजबीन करने की भरपूर कोशिश की, लेकिन गाड़ी का कहीं कुछ पता नहीं चला। गाड़ी की चोरी के चलते परिवार काफी परेशान है और अब उन्होंने थक-हारकर पुलिस से न्याय की गुहार लगाई है। इंद्रा देवी ने गढ़ीपुख्ता थानाध्यक्ष को लिखित प्रार्थना पत्र देते हुए मांग की है कि उनकी शिकायत दर्ज कर गाड़ी की बरामदगी कराई जाए और अज्ञात चोरों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्यवाही की जाए। वहीं पीड़िता की तहरीर के आधार पर पुलिस ने मामला दर्ज किया है पुलिस आसपास के सीसीटीवी फुटेज को खंगाल रही है और आगे की कार्यवाही जारी है।

कांवड़ियों की सुरक्षा में लगी जानी पुलिस

जानी खुर्द। चौधरी चरण सिंह कांवड़ मार्ग पर कांवड़ियों का आगमन तेज हो गया है जेसे ही शिवभक्त अपनी मंजिल के करीब है वेसे ही कांवड़ मार्ग भरभराकर चल रहा है वहीं शिविर संचालकों ने भी शिवभक्तों की आस्था देखते हुए देखभाल में जुटे हैं कांवड़ियों को कोई दिक्कत न हो इस लिए अच्छा भोजन जल पान की भी सुविधा अच्छी खासी कर दी है वहीं जानी थाना पुलिस ने भी सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी है और भारी वाहनों पर प्रतिबंध लगा दिया है जरूरत मंदो को ही एंट्री दी जा रही है जेसे एंबुलेंस दूध वाली सब्जी फल वगैरा वाले ही गाड़ी कढ़ी सुरक्षा में ही निकाली जा रही है क्योंकि एन एच 58 और कांवड़ मार्ग पर केई हादसे कांवड़ियों के साथ हो चुके हैं। जानी पुलिस दिन रात कांवड़ियों की सेवा कर रही है।क्योंकि उस अवधि के दौरान जनपद में कोई भी अप्रिय घटना घटित होने की जानकारी सामने नहीं आई है।

सड़क हादसे में महिला सहित तीन घायल

देवबन्द। जिम से वापस अपने गांव लौट रहा युवक अज्ञात वाहन की चपेट में आने से गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल को सरकारी अस्पताल में उपचार के भर्ती कराया गया जहां उसे प्राथमिक उपचार के बाद हायर सेंटर रेफर कर दिया गया। कोतवाली क्षेत्र के गांव बाबूपुर नगली निवासी संदीप पुत्र आशीष शनिवार की देर शाम देवबंद के एक जिम से वर्कआउट कर बाइक द्वारा वापस अपने गांव जा रहा था। जैसे ही वह गांव से कुछ दूरी पर स्थित राजवाहे के निकट पहुंचा तो सामने से आ रहे वाहन की चपेट में आकर घायल हो गया। दुर्घटना के बाद मौके पर एकत्रित हुए लोगों ने आशीष के स्वजनों को सूचना देते हुए उसे उपचार के लिए सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया जहां से प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने उसे हायर सेंटर रेफर कर दिया है। घायल की जान खतरे से बाहर बताई जा रही है।

कांवड़ यात्रा के कारण कई रूटों पर बस बंद होने से बढ़ी परेशानी

शाह टाइम्स संवाददाता

बड़ौत। नगर निगम की रोडवेज बसों के पहिए थम जाने से कांवड़ यात्रा के कारण मेरठ, मुजफ्फरनगर व शामली समेत कई रूटों पर बस बंद हो गई हैं। इससे करीब 60 बसों के पहिए थम गए हैं, जो डिपो में खड़ी कर दी गई हैं। इससे लोगों के सामने आवागमन में परेशानी बढ़ गई है।

लोगों को निजी वाहनों में डबल किराया देकर अपनी मंजिलों को पार करना पड़ रहा है। छोटे-मोटे वाहनों से लिफ्ट लेकर सफर करना पड़ रहा है। कांवड़ यात्रा के चलते कांवड़ियों की सुविधा व सुरक्षा के लिए शामली, मेरठ व मुजफ्फरनगर समेत कई रूटों पर बसों को बंद कर दिया गया है। इन पर चलने वाली करीब 60 बसों के पहिए थम गए। बसों के नहीं चलने से लोगों को आवागमन में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। लोग निजी वाहनों से अधिक पैसा खर्च करके आने-जाने को मजबूर हैं। किसी के पास निजी वाहन नहीं हैं तो वह दूसरों से लिफ्ट लेने के लिए घंटों तक खड़ा रहता है। इस तरह बसें बंद होने से दूर जाने वाले लोगों के लिए परेशानी ज्यादा बढ़ गई है। हाईवे पर चलने वाले छोटे वाहन चालकों ने यात्रियों से डबल किराया वसूलना शुरू कर दिया है। मजबूरी में यात्री तीन गुना किराया तक देकर अपना सफर तय कर रहे है।

डीएम व एसपी ने किया हेलीकॉप्टर से कांवड़ मार्गो का हवाई सर्वेक्षण व पुष्प वर्षा

बागपत। रविवार को जिला. धिकारी अस्मिता लाल व पुलिस अधीक्षक सूरज कुमार राय ने हेलीकॉप्टर द्वारा कावड़ यात्रा मार्ग का हवाई सर्वेक्षण करते हुए और सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया और कावड़ यात्रियों, शिव भक्त श्रद्धालुओं पर पर पुष्प वर्षा की। परशुरामेश्वर महादेव मंदिर पूरा पर श्रावण मास की महाशिवरात्रि पर प्रसिद्ध एवं ऐतिहासिक मेला 21 जुलाई 2025 से 24 जुलाई 2025 तक लगाया जा रहा है।

जिसमे काफी संख्या में शिव श्रद्धालु कावड़िया हरिद्वार एवं विभिन्न स्थानों से पैदल पवित्र गंगा. जल लेकर शिवलिंग पर जलाभिषेक करते हैं।

जिसमें पूरा महादेव मंदिर की मान्यता और प्राचीनता मानी जाती है और श्रद्धालु अपने गंतव्य स्थानों को प्रस्थान बागपत से ही करते हैं। इसी क्रम में जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने शिवरात्रि से पूर्व जनपद के समस्त कावड़ मार्गों पर शिव भक्त श्रद्धालुओं पर पुष्प वर्षा की और उनका अभिवादन व स्वागत किया।

गिल के निशाने पर 19 साल पुराना रिकॉर्ड

मैनचेस्टर, वार्ता। भारतीय टेस्ट कप्तान शुभमन गिल इंग्लैंड के खिलाफ 23 जुलाई से शुरू होने वाले मैनचेस्टर टेस्ट के दौरान बड़ी उपलब्धि हासिल कर सकते हैं। एक तरफ भारतीय टीम की नजरें सीरीज में बराबरी हासिल करने पर टिकी होंगी, वहीं गिल के पास 19 साल पुराना एशियाई रिकॉर्ड तोड़ने का मौका रहेगा।

● **मैनचेस्टर में मोहम्मद यूसुफ को छोड़ देंगे पीछे भारतीय टेस्ट कप्तान**

गिल के पास इंग्लैंड में एक द्विपक्षीय टेस्ट सीरीज में सर्वाधिक रन बनाने वाले एशियाई बल्लेबाज बनने का मौका है। गिल फिलहाल शानदार फार्म में चल रहे हैं और उनके पास यह रिकॉर्ड अपने नाम करने का सुनहरा अवसर है। फिलहाल इंग्लैंड की धरती पर एक टेस्ट सीरीज में सर्वाधिक रन बनाने वाले एशियाई बल्लेबाज का रिकॉर्ड मोहम्मद यूसुफ के नाम है जिन्होंने 2006 में पाकिस्तान के इंग्लैंड दौरे पर चार मैचों में 90.14 के औसत से 631 रन बनाए थे। गिल इस मामले में यूसुफ को पीछे छोड़ने से 25 रन दूर हैं। गिल ने मौजूदा इंग्लैंड दौरे पर गिल ने तीन मैचों में 101.16 के औसत से 607 रन बनाए हैं जिसमें बर्मिंघम टेस्ट की पहली पारी में 269 रन का स्कोर शामिल है।

गिल ने पहले दो मैचों में बल्ले से दमदार प्रदर्शन किया था, लेकिन लार्ड्स में खेले गए तीसरे टेस्ट मैच में उनका बल्ला खामोश रहा और वह 16 तथा 6 रन की पारी ही खेल सके थे। भारत को लार्ड्स टेस्ट में 22 रनों से हार का सामना करना पड़ा था और टीम फिलहाल पांच मैचों की सीरीज में 1-2 से पिछड़ गई है। भारतीय टीम अब आठ दिनों के अंतराल के बाद बुधवार से इंग्लैंड का सामना करने उतरेगी।

चौथे टेस्ट से पहले अंशुल टीम में

● **इंडिया-ए में खेल चुके अंशुल कंबोज पेसर आकाश दीप और अर्शदीप के चोटिल होने के बाद हुआ बदलाव**

ओल्ड ट्रैफर्ड, वार्ता। दाएं हाथ के तेज गेंदबाज अंशुल कंबोज को आकाश दीप और अर्शदीप सिंह के कवर के तौर पर भारतीय टीम में शामिल किया गया है। भारत और इंग्लैंड के बीच खेले जा रहे पांच मैचों की टेस्ट सीरीज का चौथा मुकाबला 23 जुलाई से ओल्ड ट्रैफर्ड में शुरू होगा। भारत सीरीज में 1-2 से पीछे है। आकाश दीप कमर में दर्द से जूझ रहे हैं। वे इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे और तीसरे टेस्ट मैच में खेले थे, जबकि बाएं हाथ के तेज गेंदबाज अर्शदीप ने अभी तक टेस्ट डेब्यू नहीं किया है। टेस्ट सीरीज से पहले खेले गए इंग्लैंड लायंस और इंडिया-ए सीरीज में कंबोज शामिल थे। आकाश दीप की उपलब्धता पर अभी तक कुछ स्पष्ट नहीं है, जबकि अर्शदीप के मैनचेस्टर टेस्ट के लिए चयन के लिए उपलब्ध होने की संभावना कम है। इसलिए सिलेक्टर्स ने कंबोज को टीम में शामिल करने का फैसला किया है। अर्शदीप सिंह गुरुवार को चौथे टेस्ट के लिए प्रैक्टिस कर रहे थे। बालिंग के दौरान वे गेंद रोकने की कोशिश में खुद को इंजर्ड कर बैठे। टीम इंडिया के असिस्टेंट कोच टेन डोश्चटे ने बताया था कि

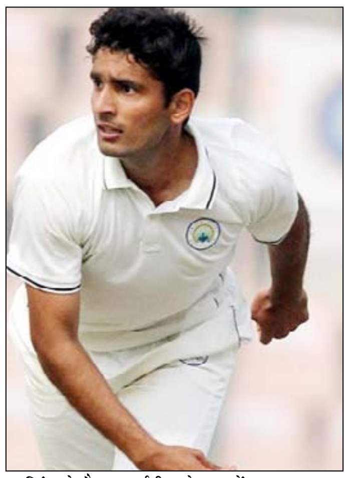

बालिंग के दौरान अर्शदीप के हाथ में कट लग गया। ये कट कितना गहरा है, यह जांच के बाद ही पता चलेगा। अगर उन्हें हाथ में टांके लगाने की जरूरत पड़ी तो उनका प्रैक्टिस सेशन में यशस्वी जायसवाल को गेंदबाजी करने जाते अर्शदीप (हाथ में बाल)। अर्शदीप इसी दौरान चोटिल हुए थे।

लार्ड्स में इंग्लैंड विमेंस ने भारत को हराया, सीरीज 1-1 से बराबरी पर

● **चेस्टर-ले-स्ट्रीट में होगा सीरीज का निर्णायक मुकाबला**

लार्ड्स, वार्ता। लार्ड्स में खेले गए दूसरे वनडे में इंग्लैंड विमेंस टीम ने भारत को 8 विकेट से हराया। इसके साथ ही इंग्लिश टीम ने सीरीज में 1-1 की बराबरी कर ली।

बारिश की वजह से मैच देर से शुरू हुआ और दोनों टीमों के लिए ओवर घटाकर 29-29 कर दिए गए। भारत ने निर्धारित 29 ओवर में 8 विकेट खोकर सिर्फ 143 रन बनाए। वहीं, बारिश की वजह से इंग्लैंड को 24 ओवर में 115 रन का टारगेट दिया गया। इंग्लैंड ने 21 ओवर में 2 विकेट के नुकसान पर 116 रन बना कर टारगेट को हासिल कर लिया। भारत और इंग्लैंड विमेंस के बीच लार्ड्स में खेले गए दूसरे वनडे मैच बारिश की वजह से बाधित रहा। टॉस हारकर बैटिंग करने उतरी भारत की खराब शुरुआत टास हारकर बैटिंग करने उतरी भारतीय टीम की शुरुआत खराब रही। भारत का पहला विकेट 6 रन पर ही आउट हो गई। दूसरे ओवर की चौथी गेंद पर एम अर्लाट ने प्रतीका रावल को बोल्ड कर पवेलियन भेज दिया। रावल ने 10 गेंदों का सामना कर 3 रन बनाए।

उसके बाद स्मृति मंधाना और हरलीन देओल ने भारतीय पारी को संभालने की कोशिश की। दोनों के बीच दूसरे विकेट के लिए 40 रन की साझेदारी हुई। इस पार्टनरशिप को 10वें ओवर में सोफी एक्लेस्टन ने तोड़ा। उन्होंने 46 के स्कोर पर देओल को अपनी ही गेंद पर कैच पकड़कर आउट किया। देओल ने 24 गेंदों का सामना कर 16 रन बनाए। इसके बाद कोई बड़ी साझेदारी नहीं हुई। हालांकि मंधाना एक छोर पर डटी रही लेकिन दूसरे छोर से एक्लेस्टोन ने हरलीन के बाद भारतीय कप्तान हरमनप्रीत (7) को भी चलता किया।

जेमिमा रोड्रिग्स (3) और रिचा घोष (2) भी जल्दी पवेलियन लौट गयी। जिससे भारतीय टीम का स्कोर एक विकेट पर 46 रन से पांच विकेट पर 72 रन हो गया। मंधाना ने 51 गेंदों पर 42 रन बनाए। उसके बाद दीप्ति शर्मा ने पारी को संभालने का प्रयास किया। उन्होंने इस दौरान अरुंधति रेड्डी (14) के साथ सातवें विकेट के लिए 26 रन की साझेदारी की। दीप्ति ने 34 गेंदों पर नाबाद 30 रन की पारी खेल भारत का स्कोर 29 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर 143 रन तक पहुंचाया। शुरुआत में इंग्लैंड को 29 ओवर में 144 रन का लक्ष्य प्राप्त करना था।

प्रिया मलिक ने फ्रीस्टाइल में जीता रजत पदक

● **फाइनल मुकाबले में भारत की प्रिया को ब्राजील की खिलाड़ी के खिलाफ 4-3 से मिली हार**

बुडापेस्ट, वार्ता। दो बार की वर्ल्ड कैडेट्स चैंपियन प्रिया मलिक ने पॉलीक इमरे और वर्गा जानोस मेमोरियल 2025 कुश्ती टूर्नामेंट में महिलाओं की 76 किग्रा फ्रीस्टाइल कैटेगरी में रजत पदक जीता। हंगरी के बुडापेस्ट में खेले गए फाइनल मुकाबले में भारत की प्रिया मलिक को ब्राजील की थामिरेस मार्टिन्स मचाडो के खिलाफ 4-3 के बेहद करीबी अंतर से हारकर रजत पदक से संतोष करना पड़ा।

भारतीय पहलवान ने टूर्नामेंट की शुरुआत क्वार्टरफाइनल में रियो 2016 ओलंपिक कांस्य पदक विजेता कजाकिस्तान की एलमिरा सिजदिकोवा को 7-2 से हराकर की। इसके बाद उन्होंने सेमीफाइनल में वैलेरिया ट्रिफोनोवा पर 11-1 की जबरदस्त जीत दर्ज की। हमवतन मनीषा ने 62 किग्रा वर्ग में कांस्य पदक जीता। जहां कांस्य पदक मुकाबले में मनीषा ने किस्टिना को 9-0 से पटखनी देकर जीत हासिल की। क्वार्टरफाइनल में मनीषा को अमीना टंडेलोवा से 11-0 से हार का सामना करना पड़ा था,

लेकिन उन्होंने रेपचेज राउंड के जरिए वापसी करते हुए फ्रांस की ओलंपियन अमेलिन डोआर को 8-2 से हराया। वहीं, नॉर्डिक सिस्टम के तहत 55 किग्रा वर्ग में खेल रहीं पुष्पा को अमेरिका की क्रिस्टेल नोएल रोड्रिगेज और कनाडा की वर्ल्ड चैंपियनशिप की कांस्य पदक विजेता कार्ला गोडिनेज से हार का सामना करना पड़ा। ग्रीको-रोमन कुश्ती में करण कांबोज (87 किग्रा) क्वालिफिकेशन से, अंकित गुलिया (72 किग्रा) प्रीक्वार्टर फाइनल में हारकर बाहर हो गए। जीते गए पदकों के साथ भारत के पदकों की संख्या आठ हो गई है।

जिसमें तीन स्वर्ण, दो रजत और तीन कांस्य पदक शामिल हैं।

संक्षिप्त खेल समाचार

विश्व चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स में भारत पाक मैच रद्द

बर्मिंघम, वार्ता। शिखर धवन सहित भारतीय खिलाड़ियों के बहिष्कार के कारण बर्मिंघम में रविवार को डब्ल्यूसीएल में भारत और पाक के बीच खेला जाने वाला वेटरन्स क्रिकेट मैच रद्द कर दिया गया है। धवन ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर अपने बयान का स्क्रीनशॉट पोस्ट किया जिसमें लिखा कि यह औपचारिक रूप से दोहराया जाता है कि श्री शिखर धवन आगामी डब्ल्यूसीएल में पाक टीम के खिलाफ किसी भी मैच में भाग नहीं लेंगे। यह चर्चा 11 मई 2025 को कॉल और व्हाट्सएप पर हमारी बातचीत के दौरान पहले ही हो चुकी थी। हमारी वर्तमान भू-राजनीतिक स्थिति और भारत-पाक के बीच मौजूदा तनाव को देखते हुए, श्री धवन और उनकी टीम ने उचित विचार -विमर्श के बाद यह निर्णय लिया है।

हांगकांग को हराकर भारत ग्रुप डी में शीर्ष स्थान पर पहुंचा

इंडोनेशिया, वार्ता। भारत ने रविवार को इंडोनेशिया में चल रही बैडमिंटन एशिया जूनियर मिक्स्ड टीम चैंपियन शिप के ग्रुप चरण में अपनी लगातार जीत के क्रम को जारी रखते हुए ग्रुप डी के आखिरी मुकाबले में हांगकांग को 110-100 से हराकर ग्रुप तालिका में शीर्ष स्थान हासिल किया। भारत और हांगकांग चीन रविवार को आमने-सामने होने से पहले ही नॉक-आउट चरण के लिए क्वालीफाई कर चुके थे, लेकिन जीत की लय बनाए रखना जरूरी था। आज यहां खेले गए मुकाबलों में रुजुला रामू ने एक बार फिर भारत को आईपी सुम याउ को 11-8 से हराकर विजयी शुरुआत दिलाई और भार्गव व विश्व तेज गोब्बूरू की विश्व की छठे नंबर की जूनियर बालक युगल जोड़ी ने चेउंग साई शिंग और ढेंग ची फाई के खिलाफ बढ़त को 22-13 तक पहुंचाया।

जिम्बाब्वे ने रग्बी विश्वकप 2027 के लिए क्वालीफाई किया

कंपाला, वार्ता। जिम्बाब्वे की राष्ट्रीय 15एस रग्बी टीम, सैबल्स ने रग्बी अफ्रीका कप के रोमांचक फाइनल में चिर प्रतिद्वंद्वी नामीबिया को 30-28 से हराकर रग्बी विश्व कप 2027 के लिए क्वालीफाई कर लिया है। कंपाला के मंडेला नेशनल स्टेडियम में कप्तान हिल्टन मुदारिकी की अगुवाई वाली जिम्बाब्वे ने शानदार प्रदर्शन कर जीत के साथ ऑस्ट्रेलिया में होने वाले इस वैश्विक टूर्नामेंट के लिए अपना टिकट पक्का कर लिया। कड़ी टक्कर वाले पहले हाफ 16-16 से बराबरी पर समाप्त हुआ, लेकिन सैबल्स ने ब्रेक के बाद मजबूत वापसी की। गॉडफ्रे मुजानार्ग्वो और ब्रैंडन मुडजेकेन्येदुजी के प्रयासों और इयान प्रायर के त्रुटिहीन रूपांतरणों की बदौलत जिम्बाब्वे ने 30-16 की बढ़त बना ली। नामीबिया ने दो प्रयासों और एक रूपांतरण के साथ देर से वापसी की और अंतर को केवल दो अंकों तक सीमित कर दिया।

क्रिकेट दुनिया के 23 देशों तक फैला

नई दिल्ली, वार्ता। फ्रेंचाइजी क्रिकेट तेजी से बदल रहा है। यह दुनिया में कहीं भी खेला जा रहा हो, इसका भारत से कनेक्शन जरूर है। आईपीएल ने न सिर्फ सबसे सफल टूर्नामेंट के रूप में खुद को स्थापित किया है बल्कि अपनी सफलता से पूरी दुनिया की क्रिकेट अर्थव्यवस्था को नया रूप दिया है।

भारत के सक्रिय क्रिकेटर भले विदेशी लीग में कहीं भी नहीं खेलते हैं, लेकिन भारतीय ब्रांड्स, कंपनियां, ब्राडकास्टर, पूर्व क्रिकेटर्स, अभिनेता बड़े पैमाने पर विदेशी लीग में किसी न किसी रूप में जुड़े हैं। किसी ने लीग में पैसा लगाया है, तो किसी ने टीमें खरीदी हैं। कोई ब्रांड एंबेसडर है तो कोई कमेंट्री कर रहा है। वर्ल्ड क्रिकेटर्स एसोसिएशन के अनुसार, दुनियाभर में 48 क्रिकेट लीग होती हैं। इनमें से 31 में भारत का कनेक्शन है। कुछ लीग में आईपीएल फ्रेंचाइजी का मालिकाना हक है तो किसी लीग में भारत के पूर्व क्रिकेटर या फिर भारतीय मूल के क्रिकेटर खेल रहे हैं। एक

● **टेस्ट खेलने वाले केवल 12 31 लीग में भारत का कनेक्शन, भारत के बाद अमेरिका में सबसे ज्यादा लीग**

चौंकाने वाली बात यह है कि अमेरिका में क्रिकेट इतना लोकप्रिय नहीं है और शुरुआती स्तर पर है। लेकिन, वहां 11 क्रिकेट लीग खेली जाती हैं। इससे ज्यादा लीग सिर्फ भारत (21) में होती हैं। दुनिया की इन 31 लीग में भारतीयों की किसी न किसी रूप में भूमिका 1. आईपीएल, 2. आईएलटी, 3. एसए20, 4. एमएलसी, 5. हंड्रेड, 6. इंटरनेशनल मास्टर्स लीग, 7. यूरो. पियन टी-20 प्रीमियर लीग, 8. बांग्लादेश लीग, 9. बिग बैश, 10. लंका प्रीमियर लीग, 11. वर्ल्ड चैम्पियनशिप आफ लीजेंड्स, 12. नेपाल लीग, 13. हान्गकान्ग क्रिकेट सिक्सेस, 14. मैक्स60 कैरेबियन, 15. ग्लोबल सुपर लीग, 16. कनाडा सुपर60 लीग, 17. अमेरिकन प्रीमियर लीग, 18. लंका टी10, 19. अबु धाबी टी10, 20. यूएसपीएल, 21. एनसीएल60, 22. जिमअफ्रो टी10, 23. माइनर लीग, 24. ह्यूस्टन प्रीमियर लीग, 25. आजी क्रिकेट लीग, 26. यूएसए मास्टर्स टी10, 27. लीजेंड्स लीग क्रिकेट मास्टर्स, 28. एशियन लीजेंड्स लीग, 29. लीग्ज 90 लीग, 30. लीजेंड्स लीग, 31. ओवर 60 इवेंट।

टेस्ट प्लेइंग 12, पर क्रिकेट 23 देशों तक दिलचस्प बात यह है कि इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) ने दुनिया के सिर्फ 12 देशों को टेस्ट नेशन की मान्यता दी है। यानी ये देश ही टेस्ट खेलते हैं। पर, फ्रेंचाइजी क्रिकेट का विस्तार 23 देशों तक है। इनमें अमेरिका, स्पेन, कतर, मलेशिया, हान्गकान्ग, कनाडा, नेपाल, नीदरलैंड्स जैसे क्रिकेट के लिए कम चर्चित देश भी शामिल हैं। सचिन तेंदुलकर और गावस्कर इंटरनेशनल मास्टर्स लीग के को-फाउंडर हैं। अभिषेक बच्चन की यूरोपियन टी-20 प्रीमियर लीग में हिस्सेदारी है।

खो-खो ने वैश्विक स्तर पर बढ़ाया कदम, सिंगापुर में किया पदार्पण

सिंगापुर, वार्ता। भारत के सबसे पुराने देसी खेलों में से एक, खो-खो को वैश्विक मंच पर ले जाने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए, इस खेल ने आज सिंगापुर में अपना पदार्पण किया। इस अवसर पर एक प्रदर्शनी मैच खेला गया जिसमें सिंगापुर की राष्ट्रीय टीम ने पहली बार हिस्सा लिया और उसका मुकाबला मलेशिया की टीम से हुआ, जो भारत में आयोजित खो-खो वर्ल्ड कप 2025 के उद्घाटन संस्करण में भी भाग ले चुकी है। यह ऐतिहासिक आयोजन एशियन खो-खो फेडरेशन (एकेएफए) द्वारा, खो-खो एसोसिएशन ऑफ सिंगापुर (केकेएएस) के सहयोग से, जुरोंग वेस्ट सेकेंडरी स्कूल में आयोजित किया गया। पूरे दिन चले इस कार्यक्रम का उद्देश्य सिंगापुर में खो-खो को लोकप्रिय बनाना था, जिसमें प्रशिक्षण सत्र, खिलाड़ी प्रेजेंटेशन और प्रदर्शनी मैचों का समावेश था। इस अवसर पर इंटरनेशनल खो-खो फेडरेशन (आईकेकेएफ) और खो-खो फेडरेशन ऑफ इंडिया (केकेएफआई) के अध्यक्ष सुधांशु मित्तल ने कहाकि आज खो-खो के लिए एक ऐतिहासिक दिन है क्योंकि यह सिंगापुर में अपना औपचारिक पदार्पण कर रहा है। एशियन खो-खो फेडरेशन की स्थापना इस क्षेत्र में खेल के प्रसार की शुरुआत है, जो अब केवल दक्षिण-पूर्व एशिया तक सीमित नहीं रहेगा।

रन बनाने के लिए पावर की जरूरत होती है: टिम

जमैका, वार्ता। कैरेबियाई मैदान पर अधिक टी-20 मैच खेलने का अनुभव रखने वाले ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज टिम डेविड का मानना है कि होबार्ट हरिकेंस के साथी मिच ओवेन की शैली वेस्टइंडीज में खेलने के लिए उपयुक्त है। आप अच्छी पिच पर निर्भर नहीं रह सकते है, कई बार रन बनाने के लिए पावर की जरूरत होती है।

रविवार से शुरू हो रही टी-20 श्रृंखला से पहले डेविड ने कहाकि वह अपने करियर की शुरुआत में है, इसलिए मुझे यकीन है कि उसे दुनिया के इस हिस्से में खेलने का काफी अनुभव होगा। मैं खुशकिस्मत हूं कि मुझे कैरेबियन में टी-20 क्रिकेट खेलने का थोड़ा अनुभव है और मिच का खेल यहां खेले जाने वाले क्रिकेट की इस शैली के लिए काफी उपयुक्त है। आप केवल अच्छी पिचों पर निर्भर नहीं रह सकते। कई बार रन बनाने के लिए आपको पावर की जरूरत होती है, और आपको खुद पर भरोसा करना होता है। डेविड ने 31 मैच खेले हैं, जिनमें से 24 कैरिबियाई प्रीमियर लीग में और सात पिछले साल के टी-20 विश्व कप के दौरान खेले थे। यह उन्हें मौजूदा ऑस्ट्रेलियाई टीम में कैरिबियाई परिस्थितियों में खेलने का सबसे अनुभवी खिलाड़ी बनाता है। ओवेन, मैट

● **आप केवल अच्छी पिचों पर निर्भर नहीं रह सकते, कई बार रन बनाने के लिए पावर की जरूरत होती है और आपको खुद पर भरोसा करना होता है**

कुहनेमन के साथ ऑस्ट्रेलिया की 16 सदस्यीय टीम में शामिल दो संभावित टी-20 डेब्यू खिलाड़ियों में से एक हैं, जो कि रविवार रात से जमैका में वेस्टइंडीज के खिलाफ शुरू हो रहे पांच टी-20 अंतर्राष्ट्रीय मैचों के लिए टीम में शामिल हैं। हरिकेंस को दक्षिण अफ्रीका 20, पाकिस्तान सुपर लीग, इंडियन प्रीमियर लीग और अमेरिका में मेजर लीग में उनके प्रदर्शन के कारण ऑस्ट्रेलियाई टी-20 टीम में जगह मिली है। 23 वर्षीय मिच, जिन्होंने क्रेग सिमंस के 39 गेंदों में सबसे तेज बीबीएल शतक के रिकॉर्ड की बराबरी करके होबार्ट को अपना पहला बिग बैश खिताब दिलाया था, ने ऑस्ट्रेलियाई टीम में जगह बनाई। उन्होंने कहाकि यह मिच के लिए रोमांचक है, यह ऑस्ट्रेलियाई टीम में उनका पहला मौका है और उनकी पहली सीरीज खास होती है। मिच बेहद आत्मविश्वास से भरा क्रिकेट खेल रहा है, जिसकी बदौलत हमने बीबीएल खिताब जीता, लेकिन वह दुनिया भर में लगातार ऐसा करता रहा है। ओवेन ने लगभग 200 के स्ट्राइक रेट से 313 रन बनाए और रिकी पोंटिंग की वाशिंगटन फ्रीडम के लिए 14 विकेट लिए। उन्होंने एमएलसी प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट का खिताब जीता। उनकी टीम पिछले रविवार को डलास में हुए फाइनल में एमआई न्यूयॉर्क से हार गई थी। जमैका में ऑस्ट्रेलिया के टीम होटल में डेविड के साथ अनप्लेएबल पॉडकास्ट पर बात करते हुए ओवेन ने कहा कि बिग बैश के बाद से, सब कुछ बहुत तेजी से हुआ है।

विराट कोहली-अनुष्का शर्मा को फिल्म महावतार नरसिम्हा दिखाने की जताई इच्छा

मुंबई, वार्ता। फिल्म निर्देशक अश्विन कुमार ने विराट कोहली और अनुष्का शर्मा को अपनी आने वाली फिल्म महावतार नरसिम्हा दिखाने की इच्छा जताई है।

फिल्म महावतार नरसिम्हा के निर्देशक अश्विन कुमार ने कहा है कि वह चाहते हैं विराट कोहली और अनुष्का शर्मा उनकी फिल्म महावतार नरसिम्हा जरूर देखें। उन्होंने दोनों को 'नए समय के प्रेरक' और आज के युवाओं के लिए मिसाल बताया है। अश्विनी कुमार ने कहा कि महावतार नरसिम्हा की टीम की तरफ से मैं सच में चाहूंगा कि विराट और अनुष्का भी यह फिल्म देखें, क्योंकि वे आज के समय के बड़े असरदार लोग हैं और अब भक्ति की राह से भी जुड़े हैं। उन्हें अब ईश्वरीय शक्ति की अहमियत का भी एहसास है, इसलिए वे आज के युवाओं के लिए एक बड़ी मिसाल बन सकते हैं।

अश्विनी कुमार ने कहा कि इस फिल्म का मकसद सिर्फ फिल्म बनाना नहीं है, बल्कि इसे ऐसा काम बनाना है जो युवाओं के दिल में भक्ति और समझ जगाए। उन्होंने यह भी बताया कि वह इसे पूज्य श्री प्रेमानंद महाराज जी को दिखाना चाहते हैं, जिनकी बातों से उन्हें इस फिल्म को बनाने का बड़ा हौसला मिला। उन्होंने कहा, यदि हम विराट-अनुष्का को यह फिल्म दिखा सकें और उन्हें बुला सकें, तो वह हमारे लिए बहुत बड़ी कृपा होगी। क्योंकि वह सच में युवाओं और दुनिया के लोगों की भलाई के बारे में सोचते हैं। उनकी बातें हमारे लिए अनमोल हैं।

जब वह समझेंगे कि हम उन्हीं की सीख को आगे बढ़ा रहे हैं, तो यकीन है वह खुश होंगे और हमारे इस काम से दुनिया को आशीर्वाद देंगे। महावतार नरसिम्हा 3डी और पांच भारतीय भाषाओं में 25 जुलाई को रिलीज होगी।

कमिश्नर व डीआईजी ने कांवड़ियों पर बरसाए फूल

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देशों के क्रम में प्रशासन और पुलिस की ओर से मंडलायुक्त अटल कुमार राय एवं पुलिस उप महा निरीक्षक अभिषेक सिंह ने हेलीकॉप्टर से शिवभक्त कांवड़ियों पर पुष्प वर्षा कर शिवभक्तों का स्वागत किया।

हेलीकॉप्टर पुलिस लाइन सहारनपुर से प्रस्थान कर पुष्प वर्षा करते हुए अंबेडकर चौक, देहरादून चौक, घंटाघर, कुतुबशेर चौक, कल्पना तिराहा, नकुड तिराहा, सरसावा बाईपास पर पहुंचा। उन्होंने साथ ही निर्देश भी दिये कि जनपद के सभी शिवालयों में साफ-सफाई के साथ ही सुरक्षा के भी पुख्ता इंतेजाम रखे जाएं ताकि जल चढाते वक्त किसी भी प्रकार की अव्यवस्था न हो। परम्परा के अनुसार सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित, सुरक्षित एवं सफल बनाना सभी का उत्तरदायित्व है। इस अवसर पर अलग-अलग राज्यों को जा रहे शिवभक्तों का अभिवादन कर उनकी पवित्र कांवड यात्रा के सकुशल सम्पन्न होने की कामना की। ज्ञातव्य है कि जिला प्रशासन कांवड़ यात्रा शुरू होने के पहले दिन से ही शिवभक्त कांवड़ियों की सुरक्षा के साथ ही उन्हें हर प्रकार की आवश्यक सुविधा उपलब्ध कराने के लिए मुस्तैद रहा।

जिलाधिकारी मनीष बंसल एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक आशीष तिवारी द्वारा स्वयं प्रतिदिन कांवड़ मार्गों एवं शिवि. रों का निरीक्षण भी किया गया। इसी का परिणाम है कि विभिन्न राज्यों से आने एवं जाने वाले शिवभक्तों ने शासन एवं प्रशासन द्वारा की गयी व्यवस्था की सराहना की। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी प्रशासन संतोष बहादुर सिंह, एसपी यातायात सिद्धार्थ वर्मा, सिटी मजिस्ट्रेट कुलदीप सिंह, उप जिलाधिकारी सदर सुबोध कुमार उपस्थित रहे।

पत्रकार शेख सत्तार के वालिद हाजी शेख खलील का इंतकाल

शाह टाइम्स संवाददाता

बेहट। कस्बे के युवा पत्रकार शेख सत्तार अहमद के वालिद अजीम शख्सियत हाजी शेखघ खलील अहमद का इंतकाल हो गया। रविवार की सुबह दस बजे उन्हें कस्बे की ईदगाह वाले कब्रिस्तान में सुपुर्द खाक कर दिया गया। उनके इंतकाल पर पत्रकारों, सामा. जिक व राजनीतिक पार्टीयों से जुड़े लोगों ने दुख जाहिर किया है।

बेहट कस्बे के बस स्टैंड निवासी हाजी शेख खलील अहमद (टोपी वाले) की शनिवार की रात अचानक तबीयत बिगड़ गई जिसके बाद उन्हें सहारनपुर अस्पताल ले जाया गया लेकिन चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। उनके इंतकाल की खबर लगते ही उनके आवास पर लोगो की भीड़ जुट गई। हाजी शेख खलील अहमद युवा पत्रकार शेख अब्दुल सत्तार के वालिद (पिता) थे। रविवार की सुबह दस बजे उनके जनाजे की नमाज जामा मस्जिद में अदा की गई जिसके बाद ईदगाह के पास स्थित कब्रिस्तान में उन्हें सुपुर्द खघक कर दिया गया। उनके इंतकाल पर वरिष्ठ पत्रकार हरिओम शर्मा, नासिर हैदर जैदी एडवोकेट, एमएस हुसैन जैदी, धर्मेंद्र सैनी, इकघ्बाल खान मारूफ मिर्जा, शेखघ परवेज आलम, , विनोद कुमार, शेंकी अरोड़ा, खुर्शीद आलम, अशोक सैनी ,तबरेज मलिक, गुड्डू पीरजादा, गय्यूर मलिक, अकरम मलिक, विजय सैनी, भवानी सैनी, नादिर शेख, रियाज हुसैन, सोमपाल कश्यप, डॉक्टर मरगूब, कैसर अराफात, कुर्बान, मौ उस्मान, सद्दाम हुसैन, शौकीन, अशोक सैनी, कलीम अख्तर, सैय्यद दानिश, नरेंद्र कांबोज, अवनीश कंबोज, सुखदेव कांबोज, विजय सैनी, अजय सैनी, अखिलेश कौशिक आदि पत्रकारों सहित पूर्व विधायक नरेश सैनी वरिष्ठ भाजपा नेता संजीव कर्णवाल, आजाद समाज पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारणी सदस्य हाजी अहसान कुरैशी व्यापारी नेता सुधीर कर्णवाल, भाजपा नेता अनिल सिंघल, मौ. शहजाद एडवोकेट प्रधान खुर्शीद रावत, मिर्जा अतीक, रईस अहमद फैजान कुरैशी जकरिया मलिक, सपा नगर अध्यक्ष अजीम मलिक, शेख गुलफाम अहमद, शाहनवाज सिद्दीकी, शेख अरशद, कामरेड शौकत, पीरू मिया, एम ए काजमी, डॉक्टर साबिर आदि ने दुख जताया।

बिजली कटों से शिविर संचालक परेशान: शीशपाल

सहारनपुर। नीलकंठ महादेव सेवा शिविर संघ के मुख्य संरक्षक शीशपाल सिंह जन्धेडा ने कहा कि पर्याप्त बिजली आपूर्ति न आने से शिवि. रों में कांविडयों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड रहा है।

उन्होने कहा कि जिले के सभी व्यक्ति मिल जुल कर भोलो की सेवा के लिए कावड़ शिविर के आयोजन किए हुए है ऐसे में बिजली विभाग बार बार लाइट के लम्बे लम्बे कट मार रहे है जिसका सब से ज्यादा असर रात्रि में भोलो पर पड रहा है घोर अंधकार में चलना पड रहा है साथ ही शिविर पर भोलो का समान अंधेरे में चोरी होने की सम्भावना है बिजली विभाग अनहोनी होने की इंतजार में है।

सेक्रेट हार्ट चर्च में हुई विशेष प्रार्थना सभा

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। सेक्रेड हार्ट चर्च में रविवार को एक विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया, जिसमें नव नियुक्त सहायक फादर संत टियागो का हर्षोल्लास से स्वागत किया गया। इस आयोजन का संयोजन सेंट पीटर ग्रुप के सदस्यों द्वारा किया गया था।

प्रार्थना सभा के दौरान चर्च के वरिष्ठ फादर जॉन चिमन ने जानकारी दी कि फादर संत टियागो अब सहारनपुर में रहकर ईसाई समाज की सेवा करेंगे। उन्होंने बताया कि फादर टियागो का जन्म 1991 में तमिलनाडु के एक शहर में हुआ था और वर्ष 2022में उन्हें मिशनरी ऑफ मेरी मिशनरी सोसायटी का धर्मगुरु नियुक्त किया गया। फादर टियागो ने सिविल इंजीनियरिंग में बीए और बीटेक की डिग्रियां प्राप्त की हैं। वे आध्यात्मिकता एवं प्रेरणा पर कई पुस्तकें भी लिख चुके हैं। इसके साथ ही वे प्रांतीय सचिव के रूप में कार्य कर चुके हैं और अफ्रीका के दक्षिण सूडान में एक प्रभावशाली प्रेरित यात्रा भी कर चुके हैं। फादर संत टियागो का स्वागत सेक्रेड हार्ट स्कूल की प्रिंसिपल सिस्टर जीवन लता द्वारा पुष्पगुच्छ भेंट कर किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती लुईजा ने किया। इस अवसर पर चर्च समुदाय के कई गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे, जिनमें माइकल सोलोमन, मास्टर अजय, जॉय केमिस्टर, अनुष्का सांवली, अलेक्स जॉय, एडी, रोहन, अंजना, कैथरीन, मधु, दिलीप, सरोज मसीह, प्रमिला मसीह, एडविना, ईवा आदि प्रमुख रूप से शामिल थे।

पूर्व सभासद इनाम मलिक के इंतकाल पर जताया शोक

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। समाजस. ेवी अब्दुल गफ्फार के समधी व सभासद दानिश मलिक के पिता नानौता नगर पंचायत के पूर्व सभासद इनाम मलिक का हार्ट अटैक आने से इंतकाल हो गया। उनके इंतकाल पर सामाजिक व राजनीति से जुडे लोगों ने दुख का इजहार किया।

बता दे कि पूर्व सभासद इनाम मलिक एक नरम व नेकदिल इंसान थे और अपने आसपास के लोगों की मदद भी किया करते थे। आज अचानक उनकी तबियत बिगड गयी। जिसके बाद उन्हे सहारनपुर के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया, लेकिन इलाज के दौरान ही उन्होने अंतिम सांस ली और इंतकाल फरमा गये। उनके जनाजे की नमाज ईशा की नमाज के बाद अदा की गयी और स्थानीय कब्रिस्तान में नम आंखों के बीच तदफीन की गयी। उनके इंतकाल पर सामाजिक, राजनीतिक लोगों ने दुख का इजहार किया।

इस दौरान उनके जनाजे में पत्रकार अबूबकर शिब्ली, शाह फैसल, शाहबाज, मौ. दानिश, हाजी खालिद, कमाल अहमद, मुकर्रम अली, अब्दुल सत्तार आदि समेत काफी तादाद में स्थानीय व दूर दराज के लोग शामिल रहे।

चौ. नीरपाल ने बांटा गंगाजल

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। श्रावण मास की पुण्य बेला में राष्ट्रीय लोकदल ने श्रद्धालुओं की सेवा हेतु पवित्र गंगा जल वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया।

शाकुंभरी विहार के सामने दिल्ली रोड पर आयोजित इस कार्यक्रम में रालोद खेल प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व राज्यमंत्री चौधरी नीरपाल सिंह ने स्वयं गंगाजल वितरित किया और शिवभक्तों को शुभाशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर चौ. नीरपाल सिंह ने कहा कि सावन का पवित्र महीना भोलेनाथ की आराधना के लिए सर्वश्रेष्ठ समय होता है। जो भक्त इस माह सच्चे मन से भगवान शिव का स्मरण करते हैं, उनके सभी कष्ट दूर हो जाते हैं और जीवन में सुख-शांति का वास होता है। उन्होंने कहा कि मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है, इसी सोच के साथ राष्ट्रीय लोकदल के कार्यकर्ता कांवड़ सेवा में जुटे हैं। भोले बाबा की भक्ति में ही सच्ची शक्ति है, और मां गंगा का आशीर्वाद सारे दुखों का नाश करता है। कार्यक्रम में उत्तराखंड प्रदेश अध्यक्ष सिद्धान्त चौधरी, जिलाध्यक्ष रिंकू सोनकर, चौ. अरविन्द मलिक, रुपिन चौधरी, आरिफ मलिक, मनोज मलिक सहित अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

हकों के लिए होगा आंदोनल, अटेवा तैयार

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। पुरानी पेंशन बहाली समेत विभिन्न मांगों को लेकर आगामी कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिये अटेवा पदाधिकारियों का जिम्मेंदारियों का निर्वहन करने और एकजुटता का संकल्प लिया।

कलैक्ट्रेट सभागार में आयोजित अटेवा की बैठक में आगामी एक अगस्त को रोष मार्च, एक अक्टूबर को टिवटर कैंपेन, 5 सितंबर को उपवास कार्यक्रम तथा 25 नवंबर को दिल्ली में होने वाली महारैली के संबंध में विचार विमर्श किया गया। सभी पदाधिकारियों ने एक स्वर में कहा कि अटेवा के आगामी कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए दिन-रात मेहनत करेंगे और सभी विभागों के कर्मचारी पदाधिकारी से मीटिंग की जाएगी और 1 अगस्त को होने वाले कार्यक्रम को सफल बनाया जाएगा। अध्यक्षता करते हुए मंडलीय मंत्री प्रवीण चौधरी ने एकजुटता का आहवान किया। जिलाध्यक्ष रजनीश सहगल ने कहा कि अटेवा के सभी कार्यक्रमों सफल बनाने के लिये सभी पदाधिकारी अपने स्तर से भरपूर प्रयास करें।

मंडल अध्यक्ष तालिब हसन, जिला संरक्षक अजय शर्मा जिला महामंत्री पंकज सिरोही, जिला कोषाध्यक्ष शिवकुमार कटारिया, जिला उपाध्यक्ष पंकज, कदम सिंह, निशांत कुमार, रमेशचंद, महिला उपाध्यक्ष श्रीमती चंचल नागपाल, जिला मंत्री महिला श्रीमती ब्रजेश, जिला संगठन मंत्री राकेश सोलंकी, गुलाब सिंह, अनुज कुमार, जिला मीडिया प्रभारी गौरव वर्मा, ब्लॉक अध्यक्ष बीरपाल, प्रमोद, लहरी सिंह नागल, ब्रह्मपाल बलियाखेड़ी, धीरसिंह सरसावा, हरिपाल सैनी, प्रवीण मलिक नकुड व ब्लॉक मंत्री अरविंद, स्वास्थ्य विभाग से मीनाक्षी, श्रीकांत, मनीष पंवार, संदीप वत्स, अमित कुमार, कीरत पाल आदि उपस्थित रहे।

वंचित कार्यकर्ताओं के लिए मांगा हक

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। विभिन्न संगठनों के कार्यकर्ताओं की संपूर्ण आजादी के लिये दलाली हटाओ समाज बचाओ अभियान में जिले से लेकर देश प्रदेश तक जमीन से जुडे कार्यकर्ताओं को निष्पक्ष एवं भ्रष्टाचार रहित चुनाव में संसद एवं विधानसभा में पहुंचाने का आहवान किया गया।

सर्किट हाउस रोड स्थित एक हॉल में आयोजित वंचित कार्यकर्ता परिसंघ की बैठक में यह निर्णय लिया गया। जिसमें जिले में संख्या के अनुसार राजनैतिक दल और उनके नेताओं द्वारा टिकटों में भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचारियो और जमाखोरों पर जनता की अदालत में सुनवाई कराकर तुरंत सजा दिलवाने तथा टिकटों की खरीद फरोख्त करने वाले का चुनावी बहिष्कार किये जाने का आहवान किया गया। मंच पर बैठे जिम्मेंदारों द्वारा कहा गया कि समाज में रात और दिन काम कर रहे कर्मठ कार्यकर्ता को मौका न देना, लंबे शासनकाल होने के बावजूद कार्यकर्ता सत्ता से वंचित रहा, आवाज उठाने पर बडे नेताओं द्वारा कार्यकर्ताओं की आवाज दबा देने पर कहीं न कही मूवमेंट को शून्य तक पहुंचाने का काम हुआ। जब समाज का कर्मठ संघर्षशील व्यक्ति संगठन के रूप मे समाज को नई दिशा देने का प्रयास करता है तो उसको योजनाबद्ध तरीके से उसका और उसके संगठन का अन्य दलों से नाता बताकर दुष्प्रचार फैलाकर उसके मूवमेंट को कुचलने का काम किया जाता है।

इस दौरान संयोजक बलबीर गौतम, नफे सिंह, अरविंद खटकाहेडी, नन्हेलाल, रूचि, मीनाक्षी माजरी, हंसराज, जोश सिंह, उमेश गौतम, महेंद्र प्रधान, महेंद्र प्रधान, वेदप्रकाश आदि मौजूद रहे।

थोक व्यापारी घी के टीन लेकर फरार

अंबेहटा। दिनदहाड़े मेन बाजार में थोक व्यापारी के यहां से बाइक सवार दो लोगों ने दो घी केटीन लेकर हुए फरार।

रविवार की दोपहर कस्बे के मेन बाजार में अज्ञात बाइक सवार दो लोगों ने दिनदहाड़े एक परचून के थोक व्यापारी की दुकान से घी के दो टिन लेकर फरार हो गए चोरों की पुरी घटना लग सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। सूचना मिलते ही पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर जांच में जुटी है। परचून व्यापारी खराती लाल खुराना ने जानकारी देते हुए बताएगी कि वह अपनी दुकान पर सामान दे रहे थे। पास के गोदाम से दो बाइक सवार बदमाश गोदाम से दो घी के टीन चुराकर फरार हो गए। इससे पूर्वी भी बाजार में अज्ञात बदमाशों ने दिनदहाड़े अनेक दुकानदारों से चोरी की घटना को अंजाम दे चुके हैं।

कीड़े के काटने से भैंस की मौत

छुटमलपुर। थाना फतेहपुर क्षेत्र सरदाहैडी गांव के जंगल में दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। खुरशेद उर्फ दागल अपनी भैंस को गांव के जंगल में चराने गया था, तभी एक जहरीले कीड़े ने भैंस को काट लिया, जिसके चलते उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

मृत भैंस की कीमत लगभग 1. 25 लाख रुपये आंकी गई है, जो खुरशेद के लिए बड़ा आर्थिक नुकसान है। यह घटना स्थानीय समुदाय में चर्चा का विषय बन गई है, क्योंकि भैंस खुरशेद के परिवार की आजीविका का प्रमुख साधन थी।

आजाद समाज पार्टी के जिला पंचायत प्रत्याशी राव मेहरबान ने घटनास्थल पर पहुंचकर खुरशेद के साथ संवेदना व्यक्त की और उन्हें हर संभव मदद का आश्वासन दिया। राव मेहरबान ने प्रशासन से आर्थिक मदद की अपील की है।

योगेन्द्र पर हो कार्यवाही: अभिषेक

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। कैराना से सांसद इकरा हसन के विरुद्ध की गई अभद्र टिप्पणी और साक्ष्य मिटाने के प्रयास को लेकर समाजवादी पार्टी महानगर विधानसभा प्रभारी अभिषेक टिंकू अरोड़ा ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक को प्रार्थना पत्र सौंपते हुए आरोपी योगेन्द्र राणा के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की मांग की है।

टिंकू अरोड़ा ने कहा कि मुरादाबाद निवासी योगेन्द्र राणा, जो स्वयं को करणी सेना का पदाधिकारी बताता है, ने सोशल मीडिया पर सांसद इकरा हसन के खिलाफ आपत्तिजनक, अश्लील और नारी गरिमा को ठेस पहुंचाने वाली टिप्पणियां सार्वजनिक रूप से साझा कीं। जब इस पर विरोध हुआ तो संबंधित पोस्ट और वीडियो को हटा दिया गया, जो स्पष्ट रूप से साक्ष्य मिटाने और जांच से बचने का प्रयास है। उन्होंने बताया कि उक्त कृत्य भारतीय न्याय संहिता 2023 की धाराओं 73, 79(2), 356, 113 तथा सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 की धाराओं 67 और 70 के तहत संज्ञेय अपराध की श्रेणी में आता है। उन्होंने एफआईआर दर्ज कर डिजिटल फॉरेंसिक के माध्यम से डिलीट सामग्री पुन: प्राप्त करने की मांग की। इस अवसर पर प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य फैसल सलमानी ने कहा कि ऐसे व्यक्ति पर रासुका के तहत कार्रवाई की जानी चाहिए। प्रधान संगठन के पदाधिकारियों व गुर्जर समाज के प्रतिनिधियों ने भी घटना की तीखी निंदा की और आरोपी की गिरफ्तारी की मांग की। इस दौरान बैलीस्टर गुर्जर, मोनू गुर्जर, अनमोल गुर्जर, गोल्डी गुर्जर, सुमित गुर्जर, शिवम् गुर्जर, शिवांग शर्मा, शुभम शोभा और शुभम थापा सहित कई लोग मौजूद रहे।

अकरम सैफी ने की कांवड़ियों की सेवा

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। श्री नीलकंठ महादेव सेवा शिविर संघ द्वारा देहराद. ून रोड, जेल चुंगी स्थित रिमाऊंट डिपो के सामने आठवां विशाल कांवड़ सेवा शिविर आयोजित किया गया है, जो 23 जुलाई तक चलेगा।

यह शिविर श्रद्धालुओं के लिए विश्राम, भोजन एवं प्राथमिक उपचार जैसी सुविधाओं से युक्त है। हर दिन हजारों शिवभक्त यहां लाभान्वित हो रहे हैं। इस अवसर पर सहारनपुर डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन के चेयरमैन अकरम सैफी दिल्ली से विशेष रूप से समय निकालकर सेवा शिविर पहुंचे और दिनभर शिवभक्तों की सेवा में जुटे रहे। उन्होंने कहा कि यह हमारे लिए गर्व का विषय है कि हमें भोलेनाथ के भक्तों की सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। एसोसिएशन जनहित के ऐसे कार्यों में निरंतर योगदान करता रहेगा। एसोसिएशन के अध्यक्ष राजीव गुप्ता ने कहा कि सहारनपुर गंगा-जमुनी तहजीब का प्रतीक है। पहले हरिद्वार, देहरादून, मसूरी और यमुनानगर तक का क्षेत्र सहारनपुर जिले में आता था और यहीं से धार्मिक आयोजनों की परंपरा शुरू होती थी। जब अकरम सैफी जैसे लोग दिल्ली से आकर सेवा में जुटते हैं, तो यह भाईचारे और एकता की मिसाल बन जाता है। उपाध्यक्ष परविंदर सिंह ने कहा कि "यह हमारे लिए गर्व की बात है कि अकरम भाई स्वयं सेवा के लिए पहुंचे और सुबह से कांवड़ियों की सेवा में लगे रहे। उन्होंने न केवल सेवा की, बल्कि सभी को इस कार्य के लिए प्रेरित भी किया। सेवा शिविर में एसोसिएशन के संरक्षक अमर गुप्ता, एपेक्स मेंबर साजिद उमर, मीडिया प्रभारी सैयद मशकूर, संयुक्त सचिव महेश शर्मा, कोच राजीव गोयल टप्पू, भावना तोमर, प्रीति मेहरा, मृदुल गर्ग, अक्षय चौहान, रविश राठी, अर्जुन सिंह, ललित पंवार, आयुष चौधरी, राहुल और तरुण सहित टीम के सभी सदस्यों ने सहभागिता निभाई।

जनपद में भक्तिमय बना वातावरण, सड़कों पर बम-बम भोले की गूंज

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। शहर से गुजर रहे कांवडियों ने आस्था का भक्तिमय वातावरण बना दिया है। रात्री में कांवड मार्ग पर भक्ति की अलग ही बयार नजर आ रही है।

शहर विधायक राजीव गुम्बर ने सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित, सुरक्षित एवं सफल बनाने का दायित्व निभाते हुए कांवडियों पर पुष्पवर्षा की और शिवभक्तों का अभिनन्दन किया। इस स्वागत समारोह में भाजपा महानगर अध्यक्ष शीतल बिश्नोई, निवर्तमान महापौर संजीव वालिया, वरिष्ठ नेता सुनील गुप्ता, गोकर्णनाथ शर्मा, विजय माहेश्वरी, हेमंत अरोड़ा, अमर गुप्ता, पार्षद दल नेता मुकेश गखड़, किशोर शर्मा, विपिन कुमार, योग चुग, मंडल अध्यक्ष विजय वर्मा, मनोज तिवारी, गोपाल मेहंदी रतन, हनी वर्मा, अजय वशिष्ठ, शैलेंद्र भूषण गुप्ता, सत्यार्थी, सूरज शुक्ला, मानवेंद्र भारद्वाज, पार्षद राजू सिंह, संजय गर्ग, अमित मित्तल, संदीप चौधरी पवार, सुनील पवार, राजकुमार शर्मा, कपिल धीमान, श्रीमती रमा गुप्ता, श्रीमती सरोज शर्मा, श्रीमती रेखा रोहिल्ला आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम में सेवा भाव एवं सामाजिक समर्पण की भावना के साथ सभी शिवभक्तों को सम्मानित किया गया। वातावरण 'बोल बम' और 'हर-हर महादेव' के जयघोष से गुंजायमान हो उठा।

कामधेनू उद्योग नगर एसोसिएशन द्वारा ट्रांसपोर्ट नगर गेट पर तीन दिवसीय आयोजित कावड़ सेवा शिविर का उद्घाटन पूजा अर्चना कर मंडल आयुक्त अटल कुमार राय ने विधिवत रूप से किया। मंडल आयुक्त अटल कुमार राय नगर विधायक राजीव गुंबर व्यापारी नेता लोक. ेश अग्रवाल ने संयुक्त रूप से आयोजक मंडल को बधाई दी। और साथ ही कहा कावड़ यात्रा भगवान शिव की पूजा के लिए की जाती है, जिसमें श्रद्धालु गंगा नदी से जल भरकर अपने नजदीकी शिव मंदिर में जाकर भगवान शिव को जल अर्पित करते हैं। कार्यक्रम का संचालन पश्चिमी उत्तर प्रदेश संयुक्त उद्योग व्यापार मंडल के जिला अध्यक्ष जयवीर राणा ने किया। इस अवसर पर कामधेनु उद्योग नगर एसोसिएशन के अध्यक्ष राजकुमार अरोड़ा महामंत्री आतिश गुप्ता वरिष्ठ उपाध्यक्ष वीरभान भट्टेजा कोषाध्यक्ष गुलशन कावत्र पूर्व परिषद मानसिंह जैन व्यापारी नेता जयवीर राणा सभी ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पूर्व पार्षद सुशील सडाना प्रमोद सडाना किशन राजीव सिंघल प्रेम कावतरा प्रमोद अरोड़ा लकी लूथरा भाई अनिल साहनी अक्षय साहनी नवदीप बजाज विपुल जैन लोकेश अग्रवाल शरद गर्ग दीपक डग आदि सभी उपस्थित रहे।

अंबेहटा। कस्बे के खेड़ा अफगान रोड पर हर वर्ष की तरह इस श्रावण मास मे श्री शिव कावड़ शिविर सेवा समिति द्वारा कावड़ शिविर का आयोजन किया गया पंडित दुब द्वारा हवन-यज्ञ किया गया कावड़ शिविर का उद्घाटन विपिन गोस्वामी ने किया। विद्यालय महासंघ के जिला अध्यक्ष संदीप पंवार ने कहा कि शिवभक्तों की सेवा करना सबसे बड़ा पुण्य का कार्य है। इस दौरान नरेश गोयल, विनोद चौधरी ढायकी,राजू चौधरी, मुकेश कश्यप, अक्षय चौधरी, राजकुमार, जसवीर सिंह,अमित गुप्ता,अपित गुप्ता, शवीर सिंह कश्यप, सेठपाल सिंह, सोनू चौधरी, धर्मवीर कश्यप, विरेन्द्र सिंह, विनय गुप्ता, अंजय गुप्ता, राकेश मित्तल, नितिन भटनागर, सम्मी जैन आदि उपस्थित रहे।

120 यूनिट रक्तदान

शाह टाइम्स संवाददाता

रामपुर मनिहारान। संत निरंक. ारी चैरिटेबल फाउंडेशन द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें रक्तवीरों द्वारा 120 यूनिट रक्तदान किया गया।

रविवार को संत निरंकारी सत्संग भवन में आयोजित रक्तदान शिविर का शुभारंभ क्षेत्रीय भाजपा विधायक देवेंद्र निम, शाखा मुखी बलविंदर सिंह एवं संचालक नत्थूसिंह ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। इस अवसर पर विधायक देवेंद्र निम ने रक्तदान शिविर में रक्तदाताओं को प्रोत्साहित करते हुए जनकल्याण के लिए समर्पित उनकी नि:स्वार्थ सेवाभाव एवं बहूमूल्य योगदान के लिए भूरी भूरी प्रशंसा की।

इस दौरान डॉक्टरों की टीम, साध संगत, रक्तदाता युवाओं और गणमान्य अतिथियों का योगदान रहा। ब्रांच मुखी बलविंदर सिंह ने सभी का आभार प्रकट किया।

अच्छी चर्चाओं की उम्मीद

सोमवार (आज) से संसद का मानसून सत्र शुरू होने जा रहा है। जैसीकि परंपरा हो चली है कि सत्र शुरू होने से पूर्व सर्वदलीय बैठक बुलाई जाती है। रविवार को भी बैठक बुलाई गई। जिसमें विभिन्न दलों के 54 सदस्यों ने भाग लिया। यह बैठक बुलाने का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होता है कि संसद कार्यवाही सुचारू रूप से चले और जिन बातों पर मतभेद हो सकता है, उसको किसी हद तक पहले ही सुलझा लिया जाए। बैठक में विपक्षी दलों ने जिस तरह के तेवर दिखाए, उससे साफ है कि संसद में गर्मागर्म बहस देखने को मिल सकती है, क्योंकि लगभग सभी दलों के नेताओं का कहना था कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को ऑपरेशन सिंदूर पर संसद में देश को संबोधित करना चाहिए। इतना ही नहीं अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के आरोप और बिहार में जिस तरह मतदाता सूची को लेकर काम हो रहा है, उस पर भी अपना वक्तव्य देना चाहिए। कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई ने कहा भी कि इस सत्र में हम पहलगाम पर बात करेंगे। वहीं सपा के रामगोपाल यादव का भी कहना था कि उन्होंने बैठक में पहलगाम आतंकी हमला और इसमें खुफिया विफलता, ऑपरेशन सिंदूर के दौरान ट्रम्प के सैन्य कार्रवाई रोकने वाले बयान, पांच जैट गिराए जाने वाले बयान आदि का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि विदेश नीति की विफलता के कारण ऑपरेशन सिंदूर में दुनिया के किसी देश ने हमारा साथ नहीं दिया। अन्नाद्रमुक व आप नेताओं ने भी इसी तरह की बातें कही। जहां तक बात सरकार की है, संसदीय कार्यमंत्री किरेन रिजिजू ने जहां सर्वदलीय बैठक को सकारात्मक बताया, वहीं कहा कि यह सभी को सुनिश्चित करना चाहिए कि संसद सत्र का शांतिपूर्ण और सफलतापूर्वक संचालन हो, क्योंकि यही सबसे महत्वपूर्ण है। रिजिजू ने कहा कि हम अलग-अलग दलों और विचारधाराओं से हो सकते हैं लेकिन संसद को सफलतापूर्वक चलाना सबकी जिम्मेदारी है। उन्होंने विपक्षी दलों को विश्वास दिलाया कि सरकार सभी की बात को सुनेगी। उनका कहना था कि संसद चलाना जितनी सरकार की जिम्मेदारी है, उतना ही जिम्मेदार विपक्ष भी है। उन्होंने जो और एक अच्छी बात कही वह यह कि छोटे दलों का भी ध्यान रखा जाएगा, उनकी शिकायत रहती है कि उन्हें बेहद कम समय दिया जाता है। सरकार की कोशिश रहेगी कि उनको पर्याप्त समय मिले। उनका छोटे दलों से मतलब उन दलों से है जिनके पास एक-दो सदस्य हैं। वास्तव में ऐसा होता है तो यह एक अच्छी पहल होगी और किसी को शिकायत नहीं होगी, लेकिन देखने में आता है कि संसद सत्र शुरू होने से पूर्व बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में काफी मुद्दों पर सहमति होने की बात सामने आती है, लेकिन जब संसद सत्र शुरू हो जाता है तो सारा वातावरण ही बदल जाता है और जो संसद अच्छी चर्चाओं के लिए जानी जाती है वहां हंगामा और शोर-शराबा देखने को मिलता है। कई बार तो पूरा सत्र ही हंगामे की नजर हो जाता है। जबकि संसद सत्र की कार्रवाई में जनता का भारी भरकम पैसा खर्च होता है। सरकार को और तमाम विपक्षी दलों को इस ओर ध्यान देना होगा कि संसद को किसी तरह का अखाड़ा न बनाया जाए, जनता स्वस्थ देखना चाहती है।

पहली वफादारी देश के लिए, पार्टी के लिए नहीं

किसी भी राजनीतिक दल के नेता की पहली वफादारी देश के प्रति होनी चाहिए, पार्टी के प्रति नहीं, पार्टियां सिर्फ एक रास्ता हैं, देश को बेहतर बनाने का जरिया हैं, अगर देश ही नहीं बचेगा, तो पार्टियों का क्या फायदा, इसलिए जब देश की सुरक्षा का सवाल हो, तब सभी दलों को मिलकर काम करना चाहिए, जब हम कहते हैं कि देश के लिए दूसरे दलों से मिलकर काम करना चाहिए, तो कुछ लोग इसे पार्टी से गद्दारी समझ लेते हैं, यही सबसे बड़ी दिक्कत है, राजनीति में मुकाबला चलता रहता है, लेकिन मुश्किल वक्त में देश के सभी दलों को एकजुट होना चाहिए।

-शशि थरूर, सांसद, कांग्रेस

संसद में प्राइवेट मेंबर बिल: गंभीरता की गिरती रेखा व लोकतंत्र की अनदेखी

वीरेश तरार

भारतीय लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था संसद का स्वरूप वर्षों में किस प्रकार बदला है, इसका सजीव उदाहरण हमें संसद में प्रस्तुत किए जाने वाले विधेयकों के स्वरूप में देखने को मिलता है। संसद में दो प्रकार के विधेयक होते हैं एक वे जिन्हें सरकार स्वयं लाती है, जिन्हें सरकारी बिल कहा जाता है और दूसरे वे, जिन्हें किसी मंत्री के अतिरिक्त संसद का कोई भी सदस्य जिसे हम सांसद कहते हैं पेश करता है, जिसे प्राइवेट मेंबर बिल के नाम से जाना जाता है।

सरकारी बिल सरकार की नीतियों को लागू करने या किसी नए कानून को बनाने के लिए लाया जाता है। इसे सरकार का समर्थन प्राप्त होता है, इस कारण से संसद में बहुमत से पारित होने की संभावना सबसे अधिक रहती है। इसके उलट प्राइवेट मेंबर बिल उस सांसद के व्यक्तिगत या क्षेत्रीय चिंताओं, किसी जनसमूह की पीड़ा, सामाजिक अन्याय या उपेक्षित वर्ग की समस्याओं को संसद के माध्यम से उजागर करने का माध्यम होते हैं। यह बिल इसलिए भी खास होते हैं क्योंकि इनके माध्यम से आम नागरिकों के जीवन से जुड़े मुद्दे संसद में उठते हैं परंतु विडंबना यह है कि ऐसे बिलों को संसद में वह स्थान या महत्व नहीं मिलता, जिसकी एक जीवंत लोकतंत्र में अपेक्षा की जाती है।

अगर हम भारत की स्वतंत्रता के बाद की संसदीय यात्रा पर दृष्टिपात करें, तो पाते हैं कि 1970 तक संसद में प्राइवेट मेंबर बिलों को विशेष गंभीरता से लिया जाता था। उस कालखंड में कुल तीन सौ सत्तर प्राइवेट मेंबर बिल संसद में प्रस्तुत किए गए और उनमें से चौदह बिल कानून बनकर जनता तक पहुंचे। यह संख्या न केवल सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह इस बात का प्रमाण भी है कि उस समय संसद में हर सदस्य की बात को सुना जाता था, बहस होती थी और यदि जनहित में उचित पाया जाता था तो उसे कानून का रूप भी दिया जाता था। उस दौर के कुछ बिल तो इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हो चुके हैं। बाल विवाह को समाप्त करने वाला ऐतिहासिक शारदा अधिनियम, महिलाओं को संपत्ति में अधिकार दिलाने वाला हिंदू उत्तराधिकार संशोधन अधिनियम, धार्मिक संस्थानों में पारदर्शिता लाने वाला मुस्लिम वक्फ अधिनियम जैसे अनेक उदाहरण इस बात को प्रमाणित करते हैं कि संसद तब केवल सरकार की आवाज नहीं थी, वह आमजन की आवाज का वास्तविक मंच थी। दुर्भाग्यपूर्ण सत्य यह है कि 1970 के बाद से संसद का स्वरूप बदलता गया और संसद में प्राइवेट मेंबर बिल महज औपचारिकता बनकर रह गए।

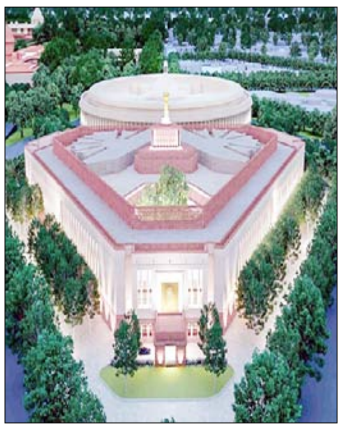

आजादी के बाद का वह स्वर्णकाल एक विराम के साथ समाप्त हो गया। पिछले पचपन वर्षों में एक भी प्राइवेट मेंबर बिल कानून नहीं बन पाया है। न केवल कानून नहीं बना, बल्कि अनेक ऐसे बिल जिनमें समाज की धड़कनें थीं, जिनमें जनता की पीड़ा थी, उन पर बहस तक नहीं हो पाई। ऐसा लगता है कि संसद केवल सरकार के एजेंडे तक सीमित होकर रह गई है।

आज की 18वीं लोकसभा और राज्यसभा में प्राइवेट मेंबर बिलों की स्थिति अत्यंत निराशाजनक है। यदि हम मौजूदा लोकसभा की बात करें तो अब तक कुल चौसठ प्राइवेट मेंबर बिल पेश किए जा चुके हैं। वहीं राज्यसभा में उनचास बिल प्रस्तुत किए गए हैं परंतु इन दोनों सदनों में इन बिलों पर गंभीर बहस की कोई मिसाल देखने को नहीं मिलती। कोई बिल चर्चा के लिए नहीं आता और बिना चर्चा के सूची से बाहर कर दिया जाता है। यह स्थिति यह संकेत देती है कि संसद के भीतर सत्ता पक्ष की सोच किस प्रकार एकपक्षीय होती जा रही है।

बीते वर्षों में अनेक ऐसे प्राइवेट मेंबर बिल लाए गए, जिनके समाज और राजनीति पर दूरगामी प्रभाव पड़ सकते थे। भारतीय जनता पार्टी के युवा सांसद वरुण गांधी ने शहरी गरीबों के लिए एक ऐतिहासिक प्राइवेट मेंबर बिल संसद में प्रस्तुत किया था, जिसके माध्यम से शहरी क्षेत्रों में भी मनरेगा जैसी योजना लागू करने का सुझाव था। यदि यह बिल कानून बन जाता तो भारत के करोड़ों शहरी गरीबों के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन आ सकता था, लेकिन इस बिल को संसद में चर्चा का अवसर ही नहीं मिला। इसी प्रकार कांग्रेस की महिला नेता अलका लांबा ने महिलाओं के कार्यस्थल पर उत्पीड़न रोकने के लिए एक महत्वपूर्ण बिल प्रस्तुत किया, परंतु इस बिल को भी गंभीरता से नहीं लिया गया और चर्चा तक नहीं हो सकी।

राज्यसभा में ओडिशा के युवा सांसद सुजीत कुमार द्वारा लाए गए सस्टेनेबल फैशन बिल और हेपेटाइटिस नियंत्रण विधेयक इस समय चर्चा में हैं। यदि इन विधेयकों को गंभीरता से लिया जाता तो भारत में पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक जवाबदेही और सार्वजनिक स्वास्थ्य नीति में बड़ा सुधार संभव हो सकता था लेकिन अब तक के अनुभव यही कहते हैं कि संसद में ऐसी गंभीर पहलें हाशिए पर डाल दी जाती हैं। इस बार कांग्रेस के वरिष्ठ सांसद मनीष तिवारी ने स्थानीय स्वशासन को मजबूती देने के उद्देश्य से एक बड़ा प्राइवेट मेंबर बिल प्रस्तुत किया है, जिसमें नगर निगम के मेयर के कार्यकाल को एक वर्ष से बढ़ाकर पांच वर्ष करने और उनके प्रत्यक्ष चुनाव का प्रावधान है।

यदि यह बिल कानून बनता है तो नगरीय लोकतंत्र को नई ऊर्जा मिल सकती है, शहरी प्रशासन में स्थायित्व आ सकता है और जनता को सीधे अपने नेतृत्व को चुनने का अवसर प्राप्त हो सकता है। परंतु संसद में प्राइवेट मेंबर बिलों के हालात देखते हुए इस बिल के भी बहस में आने या कानून बनने की संभावना क्षीण प्रतीत होती है। इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि संसद अब वैसी नहीं रह गई जैसी वह अपने प्रारंभिक दशकों में थी। जनप्रतिनिधियों की आवाजें अब सत्ताधारी दलों के एजेंडे के नीचे दब जाती हैं। संसद में विपक्ष और स्वतंत्र सांसदों के सुझावों को गंभीरता से सुनने की परंपरा लगभग समाप्त हो गई है। आज सरकार की प्राथमिकता केवल उन्हीं बिलों को पारित करना है जो उसके नीतिगत और राजनीतिक हितों के अनुकूल हों। प्राइवेट मेंबर बिलों पर बहस तक न होना यह सिद्ध करता है कि वर्तमान लोकतंत्र एकपक्षीय हो गया है। अब संसद का मानसून सत्र आरंभ होने जा रहा है। यह सत्र इतिहास बनाएगा या बीते पचपन वर्षों की परंपरा को ही दोहराएगा, यह देखना अत्यंत महत्वपूर्ण होगा। क्या संसद इस बार प्राइवेट मेंबर बिलों को गंभीरता से बहस का विषय बनाएगी? क्या जनप्रतिनिधियों की आवाजें संसद में गूंजेंगी या वे सत्ता के अहंकार में दब जाएंगी? यह सवाल संसद के लोकतांत्रिक चरित्र की परीक्षा का क्षण है। यदि इस सत्र में भी प्राइवेट मेंबर बिलों पर बहस नहीं होती और उन्हें कानून का दर्जा नहीं मिलता, तो यह स्पष्ट संकेत होगा कि संसद अब आमजन की आवाज नहीं, बल्कि सरकार का एजेंडा बनकर रह गई है, लेकिन यदि संसद इस परंपरा को तोड़ती है, तो यह लोकतंत्र के लिए एक नई उम्मीद की किरण होगी।

समाज और लोकतंत्र के सजग प्रहरी के नाते हमें इस सत्र पर पैनी दृष्टि रखनी होगी। यह जानना होगा कि संसद का यह मानसून सत्र मात्र औपचारिकता में बीतेगा या इतिहास रचेगा। क्या संसद की दीवारें फिर से जनहित की आवाजों से गूंजेंगी या वे सत्ता के आदेशों की गूंज बनकर रह जाएंगी? समय ही इसका उत्तर देगा।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

विदेशी बाजार में तेजी से पकड़ बनाता प्रसार भारती

दूरदर्शन के वेव्स ओटीटी की सीधी टक्कर ओटीटी के बेताज बादशाह नेटफ्लिक्स से है। नेटफ्लिक्स 200 से ज्यादा देशों में देखा जाता है। यह हर देश के लिए अलग-अलग भाषा में कंटेंट और डबिंग तैयार करता है। हाल ही में नेटफ्लिक्स पर 210 करोड़ की संजय लीला भंसाली की हीरा मंडी सिरीज 43 देशों में देखी गई और 10 ट्रेंडिंग लिस्ट में जगह बनाई। दूरदर्शन अब इसी स्तर की भव्यता के लिए मेगा कंटेंट्स पर काम कर रहा है। दूरदर्शन के लिए एक खास बात यह है कि उसके पास बजट की कमी नहीं है। इसके अलावा बना-बनाया इंफ्रास्ट्रक्चर है।

पवन सिंह

प्रसार भारती ने भारत से बसे करोड़ों प्रवासी भारतियों के लिए कई ऐसे कार्यक्रम ला रहा है जो देश की तमाम परंपराओं, रीति-रिवाजों के अलावा जिदंगी की जद्दोजहद से उनको रू-ब-रू कराएंगे।

यह मानवीय स्वभाव होता है कि जब आदमी अपनी सरजमीं से दूर होता है तो वह भावनात्मक रूप से अपनी माटी के ज्यादा करीब होता है। वह उन पलों को पर्दे पर ही देखकर अपने अतीत और वर्तमान को उनसे जोड़ लेता है। प्रसार भारती वेव्स सहित अपने अन्य इंटरटेनमेंट चौनलों को अब इसी कंटेंट से भरने की तैयारी कर चुका है। प्रसार भारती अपने प्रसार का दायरा तेजी से बढ़ा रहा है, नए चेयरमैन, सीईओ व डीजी के आने से भविष्य में बड़े मेगा सीरियल्स दिखेंगे। विदेशों में भारतीयों की संख्या लगभग 3.54 करोड़ है, जिसमें अनिवासी भारतीय (एनआरआई) और भारतीय मूल के व्यक्ति (पीआईओ) शामिल हैं। यह संख्या दुनिया की सबसे बड़ी प्रवासी आबादी में से एक है। वेव्स ओटीटी ने अब

विदेशी ओटीटी प्लेटफार्मों को उनके ही घर में टक्कर देने की योजना बनाई है। भारतीय संस्कृति व परंपराएं, भारतीय परिवारों का सामाजिक ढांचा, पहनावा और खान-पान।

ये तमाम ऐसे विषय लंबे समय से विदेशी दर्शकों को आकर्षित करते रहे हैं, लेकिन तमाम इंटरटेनमेंट चैनलों ने विगत 20-25 सालों में इसी भारतीय समाज की कहानियों को जिस विद्रूपता के साथ परोसा, उसने बहुत नुकसान किया है। आधुनिकता को अपनाए हुए और टूटती पारिवारिक मान्यताओं की एकता कपूर स्टाइल इंटरटेनमेंट से हुए नुकसान की भरपाई करने को दूरदर्शन खुद को तैयार कर चुका है। पाकिस्तान में भारतीय इंटरटेनमेंट चैनलों का एक विशाल दर्शक समूह है लेकिन जब भारतीय परिवारों को हर क्षेत्र में मान्यताओं को धूलधूसरित करने और महिला पात्रों को यत्र-तत्र-सर्वत्र मुंह मारते हुए दिखाया जाने लगा तो इनके देखने का विरोध हुआ। परिणामस्वरूप भारतीय इंटरटेनमेंट चैनलों की लोकप्रियता का ग्राफ गिरा। दूरदर्शन इस बीच उसी तरह से खरामा-खरामा चलता रहा जैसे 84-85 के दशक में था। जहां निजी इंटरटेनमेंट चैनल्स ने भव्यता सेट लगाकर और बड़े स्टार कास्ट व बंपर पब्लिसिटी का सहारा लिया वहीं दूरदर्शन हल्के-फुल्के सेट लगाकर काम चलाता रहा। अचानक दूरदर्शन गहरी नींद से जागा और खुद को अपने ही एक चर्चित विज्ञापन ईसीई बल्ब के एक ब्लैक एंड व्हाइट विज्ञापन की तरह जागा। पूरे घर के बदल डालूंगा। शीर्ष स्तर पर बदलाव हुए और चेयरमैन, सीईओ और डीजी की तिकड़ी ने खोया हुआ जनाधार आक्रामक तरीके से हासिल करने के लिए कमर कसी। बड़ा बजट, मेगा सिरियल्स, बड़े डायरेक्टर्स, बड़े स्टार्स के साथ मनोरंजन की गला काट प्रतियोगिता में यह तिकड़ी कूद चुकी है। अब मीडिया सोशल मीडिया के सभी प्लेटफार्मों पर अपने प्रोजेक्ट्स की पब्लिसिटी का खाका तैयार है। दूरदर्शन के सूत्र बताते हैं कि दर्शकों ने साफ-सुथरे व मीनिंगफुल कंटेंट्स को फिर से देखना शुरू किया है। मेरा पुराना दर्शक वापस लौट रहा है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

हर दिन बढ़ती बेरोजगारी देश के लिए विकट समस्या

विनीत नारायण

पिछले दिनों खबर छपी कि उत्तर प्रदेश में 2 हजार पदों के लिए 29 लाख आवेदन प्राप्त हुए। इसी तरह एक बार ऐसी भी खबर आई थी कि आईआईटी से पास हुए 38 फीसदी युवाओं को रोजगार नहीं मिला। अक्सर यह देखा जाता है कि जब भी कभी कोई सरकारी पद पर भर्ती खुलती है तो कुछ हजार पदों के लिए लाखों आवेदन आ जाते हैं। फिर वो पद छोटा हो या बड़ा, उस पद की योग्यता से अधिक योग्य आवेदक अपना आवेदन देते हैं। बात बिहार की हो उत्तर प्रदेश की या देश में किसी अन्य राज्य की, जब भी एक पद पर उम्मीद से ज्यादा आवेदन आते हैं तो स्थिति अनियंत्रित हो जाती है।

आज के दौर में अगर मेनस्ट्रीम मीडिया किन्ही कारणों से ऐसे सवालों को जनता तक नहीं पहुंचाता है तो इसका मतलब यह नहीं है कि जनता तक वह सवाल पहुंच नहीं पाएंगे। सोशल मीडिया पर ऐसे सैकड़ों इंटरव्यू देखे जा सकते हैं जो बेरोजगारी की भयावय समस्या से जूझते युवाओं की हताशा दर्शाते हैं। जब यह युवा रोजगार की मांग लेकर सड़कों पर उतरते हैं तो इनके राज्यों की सरकारें पुलिस से इन पर डंडे बरसाती हैं। अगर युवाओं को सरकारी नौकरी मिलने की भी उम्मीद नहीं होगी तो हार कर उन्हें निजी क्षेत्र में जाना पड़ेगा और निजी क्षेत्र की मनमानी का सामना करना पड़ेगा। दिक्कत यह है कि निजी क्षेत्र में भी रोजगार की संभावनाएं बहुत तेजी से घटती जा रही हैं। इससे और हताशा फैल रही है। नौकरी नहीं मिलती तो युवाओं की शादी नहीं होती और उनकी उम्र बढ़ती जाती है। समाज

शास्त्रीय शोधकर्ताओं को इस विषय पर शोध करना चाहिए कि इन करोड़ों बेरोजगार युवाओं की इस हताशा का समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

देश के आर्थिक और सामाजिक ढांचे को देखते हुए शहरों में अनौपचारिक रोजगार की मात्रा को क्रमशः घटा कर औपचारिक रोजगार के अवसर को बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए। देश की सिकुड़ती हुई अर्थव्यवस्था के कारण बेरोजगारी खतरनाक स्तर पर पहुंच चुकी है। एक शोध के अनुसार भवन निर्माण क्षेत्र में 50 प्रतिशत, व्यापार, होटेल व अन्य सेवाओं में 47 प्रतिशत, औद्योगिक उत्पादन क्षेत्र में 39 प्रतिशत और खनन क्षेत्र में 23 प्रतिशत बेरोजगारी फैल चुकी है।

चिंता की बात यह है कि यह वो क्षेत्र हैं जो देश को सबसे ज्यादा रोजगार देते हैं। इसलिए उपरोक्त आंकड़ों का प्रभाव भयावह है। जिस तीव्र गति से यह क्षेत्र सिकुड़ रहे हैं उससे तो और भी तेजी से बेरोजगारी बढ़ने की स्थितियां पैदा हो रही हैं। दो वक्त की रोटी का भी जुगाड़ न कर पाने की हालत में लाखों मजदूर व अन्य लोग जिस तरह लॉकडाउन शुरू होते ही पैदल ही अपने गांवों की ओर चल पड़े उससे इस स्थिति की भयावयता का पता चलता है।

उल्लेखनीय है कि दक्षिण एशिया के देशों में अनौपचारिक रोजगार के मामले में भारत सबसे ऊपर है। जिसका मतलब हुआ कि हमारे देश में करोड़ों मजदूर कम मजदूरी पर, बेहद मुश्किल हालातों में काम करने पर मजबूर हैं, जहां इन्हें अपने बुनियादी हक भी प्राप्त नहीं हैं। इन्हें नौकरी देने वाले जब चाहे रखें, जब चाहें निकाल दें, क्योंकि इनका ट्रेड यूनीयनों में भी कोई प्रतिनिधित्व नहीं होता। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) के अनुसार भारत में 53.5 करोड़ मजदूरों में से 39.8 करोड़ मजदूर अत्यंत दयनीय अवस्था में काम करते हैं। जिनकी दैनिक आमदनी 200 रुपये से भी कम होती है। इसलिए मोदी सरकार के सामने दो बड़ी चुनौतियां हैं। पहलीय शहरों में रोजगार के अवसर कैसे बढ़ाए जाएं, क्योंकि पिछले 7 वर्षों में बेरोजगारी का फीसदी लगातार बढ़ता गया है। दूसरा शहरी मजदूरों की आमदनी कैसे बढ़ाएं, जिससे उन्हें अमानवीय स्थित से बाहर निकाला जा सके।

इसके लिए तीन काम करने होंगे। भारत में शहरीकरण का विस्तार देखते हुए, शहरी रोजगार बढ़ाने के लिए स्थानीय सरकारों के साथ समन्वय करके नीतियां बनानी होंगी। इससे यह लाभ भी होगा कि शहरीकरण से जो बेतरतीब विकास और गंदी बस्तियों का सृजन होता है उसको रोका जा सकेगा। इसके लिए स्थानीय शासन को अधिक संसाधन देने होंगे। दूसरा स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन वाली विकासात्मक नीतियां लागू करनी होंगी। तीसरा शहरी मूलभूत ढांचे पर ध्यान देना होगा, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था भी सुधरे। चौथा देखा यह गया है कि विकास के लिए आवंटित धन का लाभ शहरी मजदूरों तक कभी नहीं पहुंच पाता और ऊपर के लोगों में अटक कर रह जाता है। इसलिए नगर पालिकाओं में विकास के नाम पर खरीदी जा रही भारी मशीनों की जगह अगर मानव श्रम आधारित शहरीकरण को प्रोत्साहित किया जाएगा तो शहरों में रोजगार बढ़ेगा। पांचवां शहरी रोजगार योजनाओं को स्वास्थ्य और सफाई जैसे क्षेत्र में तेजी से विकास करके बढ़ाया जा सकता है, क्योंकि हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था की आज यह हालत नहीं है कि वो प्रवासी मजदूरों को रोजगार दे सके। अगर होती तो वे गांव छोड़ कर शहर नहीं गए होते।

मौजूदा हालात में यह सोचना कि पढ़े-लिखे युवाओं के लिए एक ऐसी योजना लानी पड़ेगी जिससे इनको भी रोजगार मिल जाए, पर ऐसा करने से करोड़ों बेरोजगारों का एक छोटा सा अंश ही संभल पाएगा। जबकि बेरोजगारों में ज्यादा तादाद उन नौजवानों की है जो आज देश में बड़ी-बड़ी डिग्रियां लेकर भी बेरोजगार हैं। उनका आक्रोश इतना बढ़ चुका है और सरकारी तंत्र द्वारा नौकरी के बजाए लाठियों ने आग में घी का काम किया है। कुछ वर्ष पहले सोशल मीडिया पर एक व्यापक अभियान चला कर देश के बेरोजगार नौजवानों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस को ही बेरोजगारी दिवस के रूप में मनाया था। उस समय इसी कॉलम में मैंने कहा था कि यह एक खतरनाक शुरुआत है जिसे केवल वायदों से नहीं, बल्कि बड़ी संख्या में शिक्षित रोजगार उपलब्ध कराकर ही रोका जा सकता है। मोदी जी ने 2014 के अपने चुनावी अभियान के दौरान प्रतिवर्ष 2 करोड़ नए रोजगार सृजन का अपना वायदा अगर निभाया होता तो आज ए हालात पैदा न होते।

यहां यह उल्लेख करना भी जरूरी है कि कोई भी राजनैतिक दल जो अपने चुनावी अभियान में बेरोजगारी दूर करने का सपना दिखता है, वो सत्ता में आने के बाद अपना वायदा पूरा नहीं करता। इसलिए सभी राजनैतिक दलों को मिल बैठ कर इस भयावय समस्या के निदान के लिए एक नई आर्थिक नीति पर सहमत होना पड़ेगा। जिसके माध्यम से देश की सम्पदा, चंद हाथों तक सीमित होने के बजाय उसका विवेकपूर्ण बंटवारा हो। छोटे और मंझले उद्योगों के तेजी से बंद होने की मजबूरी को दूर करना होगा और इन उद्योगों को अविलंब पुनः स्थापित करने की दिशा में ठोस और प्रभावी कदम उठाने होंगे।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

इजरायल में युद्ध के खिलाफ फूटा गुस्सा, सड़कों पर उतरे हजारों

गाजा में बंधकों की वापसी के लिए ट्रम्प से हस्तक्षेप करने की मांग

तेल अवीव। इजरायल व हमास के बीच गाजा में करीब डेढ़ साल से चल रहे युद्ध को रो. कने की मांग उठ रही है। समझौते की मांग को लेकर इजरायल की जनता सड़कों पर उतर आई है। लोगों ने युद्ध विराम को लेकर समझौता करने की मांग की। लोगों ने कहा कि युद्ध समाप्त किया जाए और गाजा में बंद सभी 50 जीवित और मृत बंदियों को वापस लाया जा सके।

साथ ही अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प को समझौते कराने के लिए हस्तक्षेप करना चाहिए। प्रदर्शनकारी हाथों में बैनर लिए हुए थे, जिस पर लिखा था कि ट्रम्प को बड़ा समझौता कराना चाहिए। इससे पहले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा था कि अमेरिका लगातार प्रयास कर रहा है कि गाजा में संघर्ष को

ट्रम्प प्रशासन का कहना है कि यदि जल्द समाधान नहीं हुआ तो यह संघर्ष और जटिल हो सकता है

खत्म करने के लिए सभी संबंधित पक्षों को एक टेबल पर लाया जा सके। ट्रम्प प्रशासन का कहना है कि यदि जल्द समाधान नहीं हुआ तो यह संघर्ष और जटिल हो सकता है और इसका असर पूरे पश्चिम एशिया पर पड़ेगा। अमेरिका यह भी सुनिश्चित करना चाहता है कि गाजा में मानवीय संकट न बढ़े। वहीं काउंसिल आन अमेरि. कन-इस्लामिक रिलेशंस (सीएआईआर) ने गाजा में भुखमरी के बावजूद कार्रवाई न करने के लिए वैश्विक समुदाय की निंदा की है। सीएआईआर ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने हमारी अपनी सरकार की मिलीभगत से बेंजामिन नेतन्याहू की अति-दक्षिणपंथी सरकार द्वारा फलस्तीनी नागरिकों के नरसंहार को न केवल सहन किया है, बल्कि उसे सामान्य बना दिया है। ये दुर्घटनाएं नहीं हैं। ये अमेरिकी करदाताओं द्वारा दिए गए अरबों डालर के हथियारों और सहायता से समर्थित क्रूरता और दंडमुक्ति की प्रणाली के परिणाम हैं। हम इजरायल के हमले के लिए अमेरिका के सभी समर्थन को समाप्त करने के लिए तत्काल कार्रवाई की मांग करते हैं। चुप्पी नरसंहार में सहभागिता है और नरसंहार को सामान्य बनाना मानवता के साथ विश्वासघात है।

ईरान और रूस में भूकंप के तेज झटके

काहिरा/मॉस्को। ईरान में भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं। जीएफजेड जर्मन भूविज्ञान अनुसंधान केंद्र ने बताया कि शनिवार को उत्तरी और मध्य ईरान में अंतर्राष्ट्रीय समय 21:37 बजे आए भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 5.3 मापी गई। भूकंप का केंद्र 36.72 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 55.10 डिग्री पूर्वी देशांतर पर 10 किलोमीटर की गहराई पर निर्धारित था। केन्द्र ने बताया कि इसी समय पर उत्तर-पूर्वी ईरान के कुर्नाबाद गांव से 31 किलोमीटर पूर्व में भी भूकंप के झटके महसूस किए गए थे। भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 5.4 मापी गई। भूकंप का केंद्र 36.84 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 54.94 डिग्री पूर्वी देशांतर पर 10 किलोमीटर की गहराई पर निर्धारित था। वहीं रूस के पेट्रोपावलोव्स्क-कामचत्स्की से 142 किलोमीटर पूर्व-दक्षिण- पूर्व में रविवार को भूकंप के जोरदार झटके महसूस किए गए। अमेरिका के भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने बताया कि आज 06:28 बजे महसूस किए गए भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 7.0 आंकी गई।

ऑपरेशन सिंदूर से हुई क्षति की मरम्मत में जुटा पाक

सरकार ने मरम्मत के लिए 100 करोड़ दिए

इस्लामाबाद। पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' छेड़ कर 7 मई की रात पाकिस्तान में आतंक की 9 फैक्ट्रियों को तबाह कर दिया था, लेकिन पाक ने इन ठिकानों की मरम्मत का ना-पाक काम फिर शुरू कर दिया। लगभग ढाई महीने बाद यहां मरम्मत कराई जा रही है।

लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे आतंकी संगठनों की ओर से संचालित मदरसों में छात्र लौट आए हैं। इन ठिकानों में हुई तबाही की मरम्मत के लिए पाकिस्तानी आर्मी और शहबाज सरकार ने सरकारी खजाना खोल दिया है। पहले 50 करोड़ रुपये का फंड जारी हुआ था सूत्रों के मुताबिक, अब इन 9 आतंकी ठिकानों के लिए लगभग 100 करोड़ रुपये का फंड रखा गया है। इस फंड को बढ़ाने के लिए पाक आर्मी

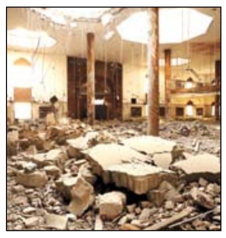

इस्लामाबाद ने चीन की कंपनी से किया संपर्क

चीफ आसिम मुनीर ने खुद पहल की। पता चला है कि मुनीर ने पाक आर्मी वेलफेयर और आर्मी हाउसिंग स्कीम से फंड को डायवर्ट करने के आदेश दिए हैं। ये राशि स्ट्राइक में मारे गए लोगों के परिवार वालों को दी जाने वाली सहायता राशि से अलग होगी। पाकिस्तान सरकार और आर्मी ने ऐसे 15 परिवारों को 10 करोड़ रुपये की सहायता राशि देने का ऐलान किया हुआ है। पाक सरकार ने इन कंस्ट्रक्शन साइट पर काम के लिए चीन की गेझोउबा ग्रुप कंपनी से भी संपर्क किया है।

ये कंपनी पहले से पीओके में काम कर रही है। मुजफ्फराबाद, कोटली और भिंबर के कुछ स्थानों पर ये कंपनी मरम्मत का काम कर सकती है। पंजाब सूबे में भी काम के लिए चीन की कंपनी को तलाशा जा रहा है। सूत्रों के अनुसार आर्मी चीफ आसिम मुनीर का झुकाव जैश के प्रति बढ़ रहा है। जैश के मुख्यालय बहावलपुर में सुभान अल्लाह मस्जिद की निगरानी रिपोर्ट सीधे उनके पास जाती है। जैश के सुप्रीमो मसूद अजहर को भी स्पेशल आईएसआई के सेफ हाउस में रखा गया है। पता चला है कि मसूद की लोकेशन हर पखवाड़े बदल दी जाती है।

संक्षिप्त समाचार

फलस्तीन राष्ट्रीय परिषद के चुनाव साल के अंत में

रामअल्लाह। फलस्तीनी राष्ट्रपति महमूद अब्बास ने नई फलस्तीन राष्ट्रीय परिषद के चुनाव इस साल के अंत से पहले कराने के शनिवार को आदेश जारी कर दिए। फलस्तीन समाचार एजेंसी वाफा के अनुसार, यह फैसला फलस्तीन मुक्ति संगठन की कार्यकारी समिति ने गुरुवार को हुई बैठक में लिया। बैठक में तय किया गया कि साल 2025 के अंत से पहले चुनाव करा लिए जाएंगे। वाफा ने बताया कि चुनाव की तारीख कार्यकारी समिति के अध्यक्ष तय करेंगे। इस 350 सदस्ईय परिषद में दो-तिहाई सदस्य देश से चुने जाएंगे और शेष एक-तिहाई प्रवासी और विदेशों में रह रहे फलस्तीनी मूल के लोग होंगे।

सूडान ने यूरोपीय संघ के नए प्रतिबंधों की निंदा की

खार्तूम। सूडान ने शनिवार को यूरोपीय संघ द्वारा लगाए गए नए प्रतिबंधों की निंदा करते हुए कहा कि इनमें 'निष्पक्ष कानूनी मानकों' का अभाव है। विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि सूडानी सशस्त्र बलों की 'गैरकानूनी विद्रोही सशस्त्र समूहों' के साथ तुलना करना संभव नहीं है। बयान में यूरोपीय संघ से सूडान की विशिष्ट राष्ट्रीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अधिक संतुलित दृष्टिकोण अपनाने का आग्रह किया गया। यूरोपीय संघ ने शुक्रवार को एसएएफ और अर्धसैनिक रैपिड सपोर्ट फोर्सेज (आरएसएफ) से संबद्ध दो व्यक्तियों और दो संस्थाओं के खिलाफ प्रतिबंध लगाए जिनमें संपत्ति जब्त करना, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धन या आर्थिक संसाधनों के प्रावधान पर प्रतिबंध और यात्रा प्रतिबंध शामिल हैं।

वियतनाम में जहाज डूबने से 37 लोगों की मौत

हनोई। उत्तरी वियतनाम के हा लॉन्ग खाड़ी में शनिवार को एक यात्री जहाज के डूब जाने से 37 लोगों की मौत हो गई। वियतनाम समाचार एजेंसी ने रविवार को यह जानकारी दी। एजेंसी ने बताया कि जहाज के मलबे को आज तड़के जांच के लिए किनारे पर लाया गया। दुर्घटना के समय जहाज पर 48 वियतनामी पर्यटक सवार थे। दस पर्यटकों को बचा लिया गया। सरकारी मीडिया के अनुसार जहाज में चालक दल के पांच सदस्य भी सवार थे। वियतनाम के उप-प्रधानमंत्री ट्रान होंग हा के निर्देश पर क्वांग निन्ह प्रांत के अधिकारियों ने बचाव अभियान में सहायता के लिए चार बड़े जहाज और मुख्य बचाव बल तैनात किए।

मध्य गाजा को खाली करने का आदेश

संघर्ष विराम पर वार्ता थमी, तो इजरायल ने हमले तेज किए, लोगों को मुवासी जाने की दी सलाह

तेल अवीव। इजरायली सेना ने मध्य गाजा को खाली करने का आदेश जारी कर दिया है। मध्य गाजा उन इलाकों में शामिल है, जहां इजरायल के सैनिकों ने ज्यादा कार्रवाई नहीं की है। इससे दीर अल बलाह और राफा और खाना यूनिस के बीच संपर्क टूट गया है।

वहीं संघर्ष विराम बातचीत कई महीनों से थमी है, ऐसे में इजरायल हमले तेज करने की तैयारी कर रहा है। इजरायल और हमास, कतर में युद्धविराम को लेकर बातचीत कर रहे हैं, लेकिन अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थों का कहना है कि फिलहाल कोई सफलता नहीं मिली है। प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने बार-बार इस बात पर जोर दिया है कि गाजा में इजरायली सैन्य अभियानों से हमास पर बातचीत करने का दबाव पड़ेगा। हालांकि अभी तक ऐसा नहीं हो सका है। गाजा के जिस इलाके में निकासी का आदेश दिया गया है, वहां कई अंतर्राष्ट्रीय संगठन भी स्थित हैं जो लोगों को सहायता वितरित करने का प्रयास कर रहे हैं। संगठनों ने इजरायल की निकासी चेतावनियों पर तुरंत कोई टिप्पणी नहीं की। इजरायली सेना ने मध्य गाजा में रहने वाले लोगों को मुवासी क्षेत्र में जाने की अपील की है। मुवासी गाजा के दक्षिणी तट पर एक तंबू शिविर है, जिसे इजरायली सेना ने मानवीय शि. विर घोषित किया है।

इजरायली सेना ने चेतावनी दी है कि वे आतंकवादियों पर हमले तेज करने वाले हैं। हमास ने 7 अक्टूबर, 2023 को दक्षिणी इजरायल में हमला किया, जिसने गाजा में युद्ध की शुरुआत की। हमास के हमले में इजरायल में 1200 लोग मारे गए थे और 251 अन्य को बंधक बना लिया गया था। अभी भी 50 लोग बंधक हैं, जिनमें से आधे से भी कम जीवित बचे हैं। गाजा स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, इसके बाद हुए इजरायली सेना के हमले में 58000 से जयादा फलस्तीनी मारे गए हैं। मंत्रालय ने ये नहीं बताया कि मृतकों में कितने आतंकवादी हैं, लेकिन मृतकों में आधे से ज्यादा महिलाएं और बच्चे हैं।

लेबनान में इजरायली हवाई हमले में हिजबुल्लाह नेता की मौत

यरूशलम/बेरूत। दक्षिणी लेबनान में शनिवार को हुए इजरायली हवाई हमले में हिजबुल्लाह की योहमोर चौकी का प्रमुख अहमद मुहम्मद सलाह मारा गया। यह जानकारी इजरायली रक्षा बलों (आईडीएफ) ने रविवार को दी। आईडीएफ ने एक बयान में कहा कि सलाह योहमोर क्षेत्र में हिजबुल्लाह की सैन्य अवसंरचना को फिर से स्थापित करने की कोशिशों में शामिल था। लेबनानी स्वास्थ्य मंत्रालय के सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकालीन परिचालन केंद्र ने इससे पहले कहा था कि नाबातीह जिले के योहमोर के शारबिक इलाके में एक मोटरसाइकिल पर हुए इजरायली ड्रोन हमले में एक व्यक्ति की मौत हो गई।

हसीना को कभी माफ नहीं किया जा सकता: बीएनपी

ढाका। बंगलादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के महासचिव मिर्जा फखरुल इस्लाम आलमगीर ने रविवार को कहा कि अपदस्थ शेख हसीना को जुलाई के जन विद्रोह के दौरान हुई हत्याओं और क्रूरताओं के लिए कभी माफ नहीं किया जा सकता। उन्होंने 'जन विद्रोह 2024-सदाबहार स्मृतियां' नामक एक कार्यक्रम को संबो. धित करते हुए कहा कि सुहसीना मानवता के लिए कलंक हैं, माताओं के लिए कलंक हैं। फखरुल ने आंदोलन में अपने बेटे की मृत्यु के बारे में भावुक होकर बताया कि अपने बेटे के ज़रिए भविष्य का सपना देखा था। लेकिन उसे गोली मार दी गई, फिर दूसरों के साथ एक वैन में फेंक दिया गया। बाद में, शवों को आग लगा दी गई। ज़रा सोचिए कि हम एक आज़ाद देश के नागरिक हैं। यह कार्यक्रम बीएनपी संस्थापक ज़ियाउर रहमान की समाधि स्थल पर कार्यक्रम का आयोजित हुआ।

बांग्लादेश में जमात-ए-इस्लामी पार्टी ने किया शक्ति प्रदर्शन

ढाका। बांग्लादेश की इस्लामिक पार्टी जमात- ए-इस्लामी ने राजधानी ढाका में विशाल रैली कर अपनी राजनी. तिक ताकत का प्रदर्शन किया। इस रैली में लाखों समर्थक जुटे। माना जा रहा है कि यह प्रदर्शन अगले साल होने वाले आम चुनावों को ध्यान में रखते हुए किया गया है।

जमाते इस्लामी ने पहले ही ऐलान कर दिया था कि वह 10 लाख लोगों को जुटाएगी। रात से ही हजारों समर्थक ढाका यूनिवर्सिटी कैंपस में डटे रहे। शनिवार सुबह वे ऐतिहासिक सुवर्रवर्दी उद्यान के लिए रवाना हुए। यह वही जगह है जहां 16 दिसम्बर 1971 को भारतीय सेना और मुक्ति वाहिनी के सामने पाकिस्तानी सेना ने आत्मसमर्पण किया था। 66 वर्षीय पार्टी प्रमुख शफीकुर रहमान ने भाषण के दौरान दो बार बेहोश हो गए। उन्हें बाद में जांच के लिए अस्पताल ले जाया गया। उन्होंने कहा कि 2024 का संघर्ष केवल

राजधानी ढाका में शक्ति प्रदर्शन किया, देश की यूनुस सरकार से निष्पक्ष चुनाव कराने की मांग की

फासीवाद के खिलाफ नहीं है, अब भ्रष्टाचार के खिलाफ भी है। हम युवा शक्ति को एकजुट कर इस लड़ाई को जीतेंगे।

पार्टी ने अंतरिम यूनुस सरकार के सामने 7 प्रमुख मांगें रखीं हैं। रैली में शामिल 40 वर्षीय इकबाल हुसैन ने कह हम एक ऐसे नए बांग्लादेश के लिए यहां हैं, जहां शासन इस्लाम के सिद्धांतों पर आधारित हो, ईमानदार लोग सत्ता में हों और भ्रष्टाचार न हो। जरूरत पड़ी तो जान भी देंगे। 20 वर्षीय छात्र मो. हिदुल मोर्सलीन सय्यम ने कहा हम कुरान के रास्ते पर चलते हैं, इसलिए जमात के राज में किसी से भेदभाव नहीं होगा। सभी को अधिकार मिलेंगे। यह पहला मौका है जब 1971 के बाद जमाते इस्लामी को सुवर्रवर्दी उद्यान में रैली की इजाजत मिली।

उत्तर प्रदेश। प्रयागराज में मानसून के मौसम में उफनती गंगा नदी के कारण जलमग्न हुए आस-पास के इलाके।

ट्रम्प प्रशासन स्पेसएक्स के साथ अनुबंध जारी रखेगा

ट्रम्प प्रशासन ने अरबों डॉलर के समझौतों में संभावित नुकसान का आकलन करने के लिए अनुबंधों की समीक्षा शुरू की

वाशिंगटन। अमेरिकी अरबपति एलन मस्क के स्वामित्व वाली स्पेसएक्स के साथ सरकारी अनुबंधों का मूल्यांकन करने के बाद ट्रम्प प्रशासन इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि उनमें से अधिकांश को बनाए रखना आवश्यक है क्योंकि वे पेंटागन और नासा के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। वॉल स्ट्रीट जर्नल ने रविवार को सूत्रों के हवाले से यह जानकारी दी।

वॉल स्ट्रीट जर्नल के सूत्रों के अनुसार, जून की शुरुआत में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने यह घोषणा की थी कि वह कुछ दिनों बाद एलन मस्क के साथ मौजूदा सरकारी अनुबंधों का पुनर्मूल्यांकन करेंगे। इसी के मद्देनजर ट्रम्प प्रशासन ने अरबों डॉलर के समझौतों में संभावित नुकसान का आकलन करने के लिए अनुबंधों की समीक्षा शुरू की। स्पेसएक्स की अध्यक्ष ग्वेने शॉटवेल ने स्पेसएक्स अनुबंधों के मूल्यांकन के दौरान व्हाइट हाउस के अधिका. रियों से मुलाकात की। समाचारपत्र के एक सूत्र ने कहा कि स्पेसएक्स के कुछ अनुबंधों की आगे जांच की जा सकती है। समाचारपत्र ने कहा कि अनुबंधों का मूल्यांकन स्पेसएक्स का एक प्रमुख रॉकेट निर्माता के रूप में और विश्व के मुख्य उपग्रह इंटरनेट संचार प्रदाता की स्थिति को उजागर करता है। जून में अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प और अरबपति मस्क के बीच सार्वजनिक विवाद शुरू होने के बाद व्हाइट हाउस ने रक्षा विभाग और नासा को स्पेसएक्स के साथ बड़े अनुबंधों पर विस्तृत जानकारी एकत्रित करने का निर्देश दिया था। ट्रम्प द्वारा स्पेसएक्स के साथ अनुबंध समाप्त करने की धमकी के बाद एलन मस्क ने कहा था कि वह ड्रैगन अंतरिक्ष यान उड़ाना बंद कर सकते हैं। इससे अंतरिक्ष एजेंसी यात्रियों को अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर भेजने और वापस लाने की क्षमता खो सकती थी। एलन मस्क बाद में अपनी धमकी पर पीछे हट गए लेकिन उनकी घोषणा ने नासा अधिकारियों में चिंताए उत्पन्न कर दी जिन्होंने स्पेसएक्स पर अपने अंतरिक्ष यात्रियों को सुरक्षित रखने का भरोसा किया था और पेंटागन अपने महत्वपूर्ण उपग्रहों को प्रक्षेपित करने के लिए उनकी कंपनी पर अधिक निर्भर है।

समाचारपत्र के एक सूत्र ने कहाः स्पेसएक्स के कुछ अनुबंधों की आगे जांच की जा सकती है

सऊदी अरब के राजकुमार का निधन

दोहा। सऊदी अरब के राजकुमार अल-वलीद बिन खालिद बिन तलाल (36) का शनिवार को निधन हो गया। बीस वर्ष पहले लंदन में एक भीषण कार दुर्घटना के बाद वह कोमा में चले गए थे। शाही कार्यालय ने रविवार को यह जानकारी दी। राजकुमार को सऊदी अरब में 'सोता हुआ राजकुमार' कहा जाता था। समय-समय पर ऐसी अफवाहें उड़ती रहीं कि वह ठीक हो रहे हैं, लेकिन कभी इसकी पुष्टि नहीं हुई। कार्यालय ने एक बयान में कहा कि 'राज. कुमार के अंतिम संस्कार के लिए आज रियाद स्थित इमाम तुर्की बिन अब्दुल्ला ग्रैंड मस्जिद में प्रार्थना सभा आयोजित की जाएगी। राजकुमार के पिता खालिद बिन तलाल ने एक्स पर निधन की जानकारी दी। उन्होंने एक भावुक पोस्ट में कहा कि अल्लाह की मर्जी और नियति में विश्वास रखते हुए गहरे दुख के साथ हम अपने बेटे के निधन की सूचना दे रहे हैं, अल्लाह उन पर रहम करे। वह अस्पताल में अपने बेटे से मिलने के बाद नियमित रूप से सोशल नेटवर्क पर कई तस्वीरें पोस्ट करते थे।

देश/विदेश से एम.बी.बी.एस करें
एडमिशन के लिए सम्पर्क करें
• रशिया • जॉर्जिया • कजाखस्तान • किर्गिज़स्तान • उज्बेकिस्तान • बांग्लादेश • नेपाल • चाइना • ईरान • इजिप्ट • यू.के. • कनाडा • यू.एस.ए. और भी देशों से
M.B.B.S. ABROAD
Since 2010
अन्जुम कलीम (एम.डी.) 8384872313 9457439020
M.B.B.S./M.D.
BDS, BAMS, BUMS, BEMS
Abroad Admission & Counselling For India
•Top Govt. Universities.
•MCI, WHO Approved Universities.
•Indian Hostel & Mess Available.
•Lowest Price Packages.
•Boys/Girls Hostels Are Separates Available.
अपना एम.बी.बी.एस. 25 से 27 लाख में पूरा करें
जिसमें ट्यूशन फीस, हॉस्टल फीस, खाना 3 टाईम (वेज/नॉनवेज). वीजा एक्सटेंशन. इंश्योरेंस. मेडिकल. ट्रांसपोर्टेशन. लॉन्ड्री. एफ.एम.जी. ई. कॉचिंग, 15 इंडियन बेस्ट फैकल्टी के द्वारा दी जा रही है
471 बच्चें जनवरी एफ.एम.जी.ई. एक्जाम में पास हुऐ (अन्य कोई खर्चा नहीं)
www.mbbsbijnor.com
ADD : MBBS ABROAD CONSULTANCY, MOIN KA CHAURAHA, CHAHSHIREEN JAMA MASJID, B-21, BIJNOR (U.P.)

ADMISSION OPEN
Session 2025-26
न्यू स्टेट नर्सिंग एण्ड पैरामेडिकल कालेज
12 किमी. स्टोन, रुड़की रोड, मुजफ्फरनगर
Affiliated by: U.P. State Medical Faculty Lucknow and recognized by the U.P. Govt.
कोर्स
• डी० पी० टी० • ऑप्टोमैट्री • ओ० टी० टैक्नीशियन
कोर्स अवधि : 2 वर्ष
योग्यता : 12वीं पास बायोलोजी/गणित
हसन नर्सिंग होम
92, उत्तरी सरवट गेट, मुजफ्फरनगर
मो0: 8899777782 9897640744
अखबार की कटिंग साथ लाने वाले को 5000 की छूट